असली लाल किताब के द्वादश भावगत ग्रहों के फल एवं उपचार

सूर्य का द्वादश भावगत फलः-

सूर्य का प्रथम भावगत फल

सूर्य शुभ - धर्मार्थ द्रव्य खर्च, धर्मशाला, कूप, प्याऊ आदि का निर्भाता, पितृभक्त किन्तु स्वयं की संतान पितृभक्त न ही हो । मद्यपान से घृणा, दीन दुखी का सेवक, क्रोधी, सर्वदा लाभ होता रहे, राज्याश्रित का जीवन, आंखों देखी बात पर विश्वास करे, कान से सुने पर करे नहीं।

सूर्य अशुभ - सूर्य शत्रुराशिस्थ, नीच पापाक्रान्त हो और शुक्र का सप्तम भाव से सम्बन्ध हो, तो बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु हो। सूर्य प्रथम भाव में तथा मंगल पंचम भाव में होने से एक के बाद एक पुत्र मृत्यु को प्राप्त होवे, अशुभफल कारक सूर्य प्रथम भाव में तथा सूर्य, मंगल और गुरू भी निर्बल व अशुभ फलप्रद हों, तो प्रतिष्ठारहित अभागा जीवन व्यतीत करे। सूर्य प्रथम और शनि अष्टम हो, तो द्विभार्या योग निश्चित है।

उपाय - पैतृक घर में हैण्डपम्प लगावे तथा दिवा स्त्री समागम से बचें।

द्वितीय भावगत सूर्यफल

सूर्य शुभ - द्वितीय भाव में सूर्य और गुरू स्थित हो, शनि से अदृष्ट हों, तब ननिहाल, लडकी का ससुराल धनी होगा, किसी शत्रु का 11 दिन 11 मास व 11 वर्ष में नाश होगा। जातक पारिवारिक व्यक्तियों का सेवक एवं अपने भुजबल पर द्रव्योपार्जन कर्ता । उपरोक्त फल यदि चन्द्र 6ठे भाव में हो, तो विशेष होगा। सुर्य धनभाव में, राहु अष्टम भाव में तथा केतु अष्टम भाव में हो, तो जातक योग्य व सत्यवादी होगा, यदि राहु नवम भाव में हो, तो पेन्टर व चित्रकार होगा। सूर्य द्वितीय में व केतु नवम में हो, तो जातक टैक्नीशियन होगा । मंगल नवम में हो, तो शौकीन होगा । शनि दशा में हो, तो कुशाग्र बुद्धि व सम्मानित होगा । शनि एकादश में व सूर्य धनभाव में हो, तो दुखी कभी धनी कभी दरिद्र होवें ।

सूर्य अशुभ - अशुभ सूर्य द्वितीय भाव में हो, तो धन, स्त्री, सम्पत्ति के झगडे होते हैं, स्त्री, माता, भाभी, बहिन इनके सुख की हानि होती है । सूर्य धन भाव में, चन्द्र अष्टम भाव में हो, तो किसी भी प्रकार का दान लेना महाअशुभ फल कारक होगा । धन भाव में सूर्य, मंगल लग्न में तथा चन्द्र द्वादश भाव में हो, तो जातक को सर्वदा आर्थिक कष्ट व दुखी बनाये रखेगा ।

उपाय - शनि की वस्तुओं का दान जप करना, नारियल, तेल, होगा, बादाम का धर्मस्थल में दान करे । स्वयं किसी का दान न लेवे ।

तृतीय भावगत सूर्य का फल

सूर्य शुभ - अपने भुज बल से द्रव्योपार्जन का सुखी, ज्योतिष विषय का ज्ञाता, गणितज्ञ, बौद्धिक कार्यो से लाभ, सदाचारी नहीं रहे, तो अस्वस्थ व भाग्यहीन होवे । यदि चन्द्र भी कुण्डली में शुभ तो आजीवन आर्थिक लाभ हो । विशेष कर चन्द्रमा की वस्तुओं का धन्धा करने पर लाभ हो । चोरी की वस्तुओं का ग्रहण नहीं करे, सूर्य व बुध तृतीय भाव में हो, तो भाई-भतीजे से लाभ होगा ।

सूर्य अशुभ - तृतीय भाव में अशुभ सूर्य हो तथा कुण्डली में चन्द्र भी अशुभ फल-प्रद हो, तो चोरी से विशेष धन की हानि होवे । सूर्य तृतीय में और प्रथम भाव भी अशुभ फलप्रद हो, तो पडौसी बर्बाद होंगे । सूर्य तृतीय में बुध या पापग्रह भी अशुभ हो, तो मामा के लिये हानिप्रद होंगे ।

उपाय - पापकर्म से बचें । चाल चलन ठीक रखें ।

चतुर्थ भावगत सूर्य का फल

सूर्य शुभ - चतुर्थ भाव में शुभफल कारक सूर्य हो, तो वृद्धावस्था का जीवन आर्थिक दृष्टि से उत्तम रहे, सन्तान धनी हो, स्वयं श्रेष्ठ प्रशासक व दयालु होवे । कुण्डली में चन्द्र व गुरु जिस भाव में स्थित हों युति उस भाव-सम्बन्धी वस्तुओं से द्रव्य लाभ होवे । सूर्य चन्द्र की युति चतुर्थ भाव में नए शोध के भरपूर लाभ हो । सूर्य मंगल की युति, विनम्र व धैर्यवान् बनाती है । सूर्य बुध की युति, चतुर्थ में श्रेष्ठ व्यापारी बनाती है तथा यात्रा से लाभ प्रदान करती है । सूर्य चन्द्र शुक्र की, युति भाग्यवान् माता-पिता से लाभ व श्रेष्ठ कर्मो के करने की प्रवृत्ति बढाती है सूर्य, चन्द्र, मंगल की चतुर्थ में युति, सोने व चांदी से लाभ दिलाती है ।

सूर्य अशुभ - अशुभ सूर्य जातक को लालची व अनेक प्रकार से कष्टभोगी बनाता है । तस्कर-वृत्ति भी बनाता है । सूर्य चतुर्थ में शनि सप्तम में नेत्र रोगी, सूर्य चतुर्थ में अन्य पापग्रह भी अशुभ फलप्रद हो, तो सन्तान का सुख प्राप्त होता है । सूर्य चतुर्थ में और मंगल दशम में भाग्यशाली और नेत्र रोगी होता है । सूर्य चतुर्थ में दशम भाव में चन्द्र, गुरु व बुध में से कोई ग्रह हो, तो अशुभ फल कारक होते हैं । सूर्य चतुर्थ में गुरु दशम में हो, तो सुवर्ण की चोरी हो जाय, शनि की वस्तुओं का व्यापार हानिप्रद हो, मातृपितृ सम्बन्धी कार्य शुभ हो तथा गुप्त शत्रुबाधा भी बनी रहे ।

उपाय - पैतृक घर में अन्धों को भिक्षा दें तथा भोजन का दान अन्धों को देवे । लोहे व लकडी का काम कभी न करे । वस्त्र, सोना, चाँदी का धन्धा अवश्य करें ।

पंचम भावस्थ सूर्यफल

सूर्य शुभ - भेड, बकरी पालने से लाभ, रसोई घर पूर्व में बनाने से लाभ, वृद्धावस्था में सुखी तथा सन्तान व परिवार की उन्नति हो । सूर्य पंचम में व शनि एकादश में हो, तो माता-पिता दीर्घायु होंगे तथा सर्वदा उन्नति होती रहे । सूर्य पंचम में गुरु नवम् व द्वादश में शत्रुजित् बनाकर सन्तानसुख की हानि करता है ।

सूर्य अशुभ - अशुभ सूर्य पंचम में गुरु दशम में हो, तो स्त्री की मृत्यु होती रहे । अशुभ फलकारक शनि तृतीय भाव में और अशुभ सूर्य पंचम में हो, तो पुत्रों का विनाश हो ।

उपाय - लाल मुंह के बन्दरों का पालन-पोषण करें । पक्षी, मुर्गा व बच्चों का पालन-पोषण करे तथा घर में पूर्व दिशा में रसोईघर बनावे ।

षष्ठम भाव में स्थित सूर्य का फल

सूर्य शुभ - षष्ठम भाव में शुभ सूर्य से क्रोधी, राज्याश्रित जीवन निर्विघ्नता से आजीवीकाप्रद, प्रतिष्ठित व धनी होती है । सूर्य षष्ठ में व केतु प्रथम या सप्तम भाव में हो, तो राज्य से लाभ प्राप्त हो तथा पुत्र सुख होगा । 48 वर्ष के बाद का जीवन अधिक श्रेष्ठ रहेगा । द्वितीय में चन्द्र, मंगल या गुरु हो व षष्ठ में सूर्य हो, तो प्राचीन सिद्धान्तों पर चलने वाला होगा ।

सूर्य अशुभ - ननिहाल व सन्तान पर दुष्प्रभाव अशुभ सूर्य 6 वें हो, तो मन्द दृष्टि मामा पुत्र व स्वयं के स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव होवे । रात्रि को नींद कम आवे । सूर्य षष्ठ में व मंगल दशम में पुत्र का विनाश कर

। षष्ठ में सूर्य व द्वादश में चन्द्र हो, तो पत्नी अथवा स्वयं काना हो । राहु व शनि प्रथम भाव में हो, तो 42 से 50 तक की आयु का समय अत्यन्त नष्ट हो ।

उपाय - पैतृक घर की पिछली दीवार में रोशनदान न रखें । धर्म स्थल पर दान दी गई वस्तु अपने पास रखें ।

सप्तम भावगत सूर्य फल

सूर्य शुभ- शुभ फलप्रद सूर्य सप्तम भाव में हो और गुरु, मंगल या चन्द्र दूसरे भाव में हो, तो जातक सरकार में मंत्री होगा । यदि बुध, गुरु या शुक्र 2रे, 3रे या 5 वें भाव हो विदेश में आजीविका करता है तथा मृत्यु जन्मस्थान में होती है । उच्चस्थ बुध 5 वें या 7 वें भाव में मंगल से दृष्ट हो तो लाभ पक्ष श्रेष्ठ हो, तो प्रत्येक योग में शुभ सूर्य सप्तम में तो होगा ही । सप्तम में सूर्य क्षय रोग, अग्निकाण्ड, आत्महत्या, भवन आदि निर्माण में विध्न उत्पन्न करता है तथा स्वभाव क्रोधी बनाता है । शनि, बुध या केतु 2 रे भाव में हो, तो पराई परेशानियां बढे ।

सूर्य अशुभ - अशुभ सूर्य सप्तम में हो और 2 रे शुक्र या पापग्रह हो, तो पत्नी माता-पिता के कष्ट से दुखी रहे, ससुराल भी नष्ट हो । गुरु, शुक्र या पापग्रह 11वें भाव में सप्तम में सूर्य अशुभ हो, तो परिवार में अनेक व्यक्तियों की मृत्यु से जातक दुखी रहे, घर में दमा, खांसी, क्षय रोग बना रहे, कर्ज से लद जाये । केतु प्रथम भाव में या बुध 11 वें भाव में हो, तो पौत्र व नाती के उत्पन्न होने के समय स्वास्थ्य खराब रहे । सप्तम अशुभ सूर्य से व्यक्ति नमक खाता है, क्रोधी होता है, अपयश मिलता है ।

उपाय - नमक कम खायें, मीठा पदार्थ मुंह में डाल कर अथवा पानी पीकर प्रत्येक कार्य का शुभारंभ करें । भोजन से पूर्व रोटी के टुकडे की आहूति अग्नि में देवें ।

अष्ठम भावस्थ सूर्य फल

सूर्य शुभ - शुभ सूर्य में शत्रु पराजित, 22वें वर्ष में राजकीय लाभ होवे । सूर्य अष्टम जातक को तपस्वी सत्यवादी व नृप तुल्य बनाता है ।

सूर्य अशुभ - अशुभ सूर्य अष्टम में हो और गुरु भी अशुभ हो, तो भाग्यहीन होता है । अष्टम अशुभ सूर्य होने से जातक क्रोधी, अधीर स्त्रियों का प्रेमी और अनेक आपत्तियों से त्रस्त रहता है ।

उपायः- काली गाय व बडे भाई की सेवा करें । दक्षिण द्वार जिस भवन का हो उस में नहीं रहें । मीठा खाकर या पानी पीकर कार्यारम्भ करें ।

नवम भावगत सूर्य फल

सूर्य शुभ - शुभ सूर्य 9वें बुध 7वें हो, तो भाग्योदय 34 वें वर्ष में होवे । नवमस्थ शुभ सूर्य परिवार सौख्य, कुटुम्ब पालन में अधिक व्यय तथा माता-पिता का राज्याश्रित जीवन आदि योगकारक होता है और दीर्घायु भाग्यवान, सदाचारी, परोपकारी भी बनता है ।

सूर्य अशुभ - सूर्य नवम् में अशुभ होता है, तो जातक दुष्ट व भाइयों से दुखी रहे । बुध से युक्त होने पर यह योग अधिक प्रबल होता है ।

उपाय - चन्द्रमा की वस्तुओं का दान करें । स्वयं कोई दान न लेवें, घर में पीतल के पुराने बर्तन रखें । पाप से बचें ।

दशम भावगत सूर्य का फल

शुभ सूर्य -दशमस्थ सूर्य राज्याधिकार प्रदान करता है, धनी, मानी, एवं स्वस्थ बनाता है, लेकिन सनकी मिजाज बनाता है ।

सूर्य अशुंभ - अशुभ सूर्य पुरुष ग्रह से युक्त वा दृष्ट न हो और चन्द्रमा पंचमस्थ होवे तब अल्पायु , दुखी व संतान का विनाश करता है । सूर्य दशम में चन्द्र 4 हो तो राजकीय सुख उत्तम रहे । सूर्य दशम में नौकर चाकर व वाहन का सुख भी देता है । शुक्र चतुर्थ में तथा शनि अशुभ हो तो बचपन में ही पिता की मृत्यु हो । यदि चन्द्रमा 2 रें भाव में हो, तो 24 वें वर्ष में माता को अरिष्ट होगा । सूर्य दशम में हो, षष्ट या अष्टम भाव में पापग्रह हो, तो 34 वर्ष तक सारा परिवार दुखी रहेगा । सूर्य दशम में हो तथा चतुर्थ भाव में कोई ग्रह नहीं हो, तो राजकीय लाभ न हो ।

उपाय - सफेद या शर्बती टोपी व पगडी से सदा सिर ढका रखें, काले, नीले वस्त्रों का त्याग करे, कूप, हैण्डपम्प व प्याऊ लगावें, गंगाजल घर में रखें व नदी-नाले के बहते पानी में 40 या 43 दिन तक तांबे का पैसा बहायें ।

11 वें भाव में सूर्य का फल

सूर्य शुभ - शुभ सूर्य 11 वें हो और मांसाहारी न हो, तो 3 पुत्र की प्राप्ति, दीर्घायु, घर का मुखिया या राज्याधिकारी होवे ।

सूर्य अशुभ - अशुभ सूर्य 11 वें भाव में पुरुष ग्रहों से युक्त वा दृष्ट न हो तथा 5 वें चन्द्र हो, तो संतानहीन हो ।

उपाय - रात्रि को 5 मूली या बादाम सिरहाने रख कर अगले दिन प्रातःकाल मंदिर में देने पर दीर्घायु हो और सन्तान प्राप्ति हो । मांस सर्वथा वर्ज्य है । शराब का सेवन न करें । झूठी गवाही न दें । धोखा-धडी न करें ।

12 वे भावगत सूर्य फल

सूर्य शुभ - शुभ सूर्य 12 वें हो और शुक्र, बुध की युति हो, तो आजीविका कभी बन्द न हो, व्यापार से लाभ मिले । सूर्य द्वादश में केतु 2 रे भाव में हो, तो 24 वें वर्ष से द्रव्योपार्जन करने लगे ।

सूर्य अशुभ - अशुभ सूर्य द्वादश में - उदासीनता, मष्तिष्क में विकृति, राज्यभय, अपयश मशीनरी के धंधे में हानि, ससुराल की सहायता करने से हानि प्रदान करता है । सूर्य 12 वें चन्द्र 6 वें हो, तो जातक अथवा उसकी स्त्री कानी हो । सूर्य द्वादश में, पापग्रह लग्न में हो, तो नींद हराम हो तथा दुखी रहे ।

उपाय - राहु सम्बन्धी कार्य न करें, ससुराल का भी कोई कार्य न करें । आटा से ग्रहस्थ सुखमय हो । पीसने की चक्की घर पर रखें । अन्धकारयुक्त घर में निवास न करें । धोखा धडी, गबन, झूठी गवाही, असत्य भाषण का त्याग करें ।

चन्द्रमा के द्वादश भावगत फल का विचार

चन्द्रमा में प्रथम भाव का फल

चन्द्र शुभ - शुभ चन्द्र प्रथम भाव में होने से भाग्यशाली, राज्याश्रित जीवन, 24 संपत्ति आसानी से मिले । पराया धन भी मिले । 24 वर्ष से पूर्व से 27 वर्ष के मध्य माता से अलगाव, विद्या का पूर्ण लाभ, पैतृक शुभ नहीं होगा । चन्द्रमा प्रथम भाव में, सूर्य, मंगल या गुरु 4 थे वा 10 वें भाव में हो तो समुद्री यात्रा हो । चन्द्र प्रथम में गुरु चतुर्थ में शनि दशम में हो, तो धन व वाहन की वृद्धि हो, चन्द्र प्रथम में , शुक्र सप्तम में हो, तो संतान को कष्ठ होगा तथा चन्द्रमा प्रथम में बुध सप्तम में हो, तो अल्पबुद्धि, धनी राज्य व समुद्री यात्रा से लाभ ।

चन्द्र अशुभ - अशुभ चन्द्र प्रथम भाव में और सूर्य, शनि की युति 6 वें भाव में हो, तो जातक निर्धन हो । चन्द्रमा अशुभ प्रथम भाव में मंगल व बुध अशुभ 8 वें भाव में हो, तो सदा दुखी व विश्राम-रहित हो, 24 वर्ष के पूर्व पत्नी, गौ, नौकर घर में न लावें अन्यथा 24 वां वर्ष अत्यन्त कष्टप्रद होगा ।

उपाय - चांदी के पात्र में जल व दूध पीने से संतान सुख बढे, कांच के बर्तन का उपयोग न करें, दूध मुफ्त में पिलावें, बेचे नहीं । पलंग के चारों पाये में तांबे की कील गढवायें। वटवृक्ष का सिंचन करें । 24 वर्ष पूर्व विवाह न करें ।

द्वितीय भावस्थ चन्द्रफल

चन्द्र शुभ - शुभ चन्द्र 2 रे भाव में हो तो बहिन का अभाव, भाई का सुख मिले । यदि गुरु भी शुभ हो, तो माता-पिता का सुख मिले, धनी हो, शत्रुजित् हो, माता का सुख 48 वर्ष तक मिलेगा, नींव में चांदी दबाने से दीर्घायु प्राप्त हो, दादी की सेवा से लाभ हो । विद्या द्वारा भाग्यवृद्धि होगी, चन्द्र की वस्तुओं के व्यापार से धन लाभ हो । चन्द्रमा की वस्तुओं को घर में रखने से 24 वें वर्ष से अपनी व ससुराल की आर्थिक स्थिति उत्तम होगी ।

चन्द्र अशुभ - अशुभ चन्द्र द्वितीय भाव में हो, तो घण्टाघर में न रखें वरना निःसन्तान रहेंगे । अशुभ चन्द्र 2 रें केतु 12 वें हो, तो विद्या, सन्तान में से एक का सुख मिलेगा । चन्द्र 2 रें सूर्य प्रथम भाव में हो, तो शुभ फलप्रद हो । अशुभ चन्द्र 2 रे तथा 9, 10 व 12 वें भाव में पापग्रह हो, तो 9, 18, 36 वें वर्ष में माता का मृत्यु अथवा भयंकर कष्ट हो । 3 रे, 9 वे भाव में गुरु हो तो अनेक विघ्न बाधायें उपस्थित होकर व्यापार में वृद्धि हो ।

उपाय - घर की नींव में चांदी दबायें । हरे रंग का वस्त्र 43 दिन तक निरन्तर कन्याओं को दिलावें , परिवार की वृद्धा स्त्री की सेवा करें । चन्द्रमा की वस्तुएं घर पर रखें ।

तृतीय भावस्थ चन्द्रफल

चन्द्र शुभ - शुभ चन्द्र तृतीय में हो, तो धनवान, साथ में बुध हो, तो साहसी, झूठे प्रेम से घृणा करे, शत्रुजित् । यदि बुध अशुभ हो, तो चन्द्र भी अशुभ फलकारक होगा । विद्या फलीभूत तब ही होगी जब कुण्डली रहेगी । तृतीय में चन्द्र हो, तो मधुरभाषी, परिश्रमी, सच्चरित्र, व मातृसुख से युक्त हो । चन्द्र तृतीय में और मंगल चतुर्थ में हो, तो साहसी, धनी, बुद्धिमान और संकीर्ण हृदय का होवे ।

चन्द्र अशुभ - अशुभ चन्द्र तृतीय में और आठवें भाव में अशुभ ग्रह हो, धन-हानि तथा तृतीय में चन्द्र अशुभ हो, तो बकरी का दूध व लकडी का धन विषतुल्य होगा ।
उपाय - कन्या के जन्म पर चन्द्रमा की वस्तुएं, पुत्र के जन्म पर सूर्य की वस्तुएं दान में देवें ।

चतुर्था भावस्थ चन्द्रफल

चन्द्र शुभ - शुभ चन्द्र चतुर्थ में हो, तो विद्या पूर्ण होगी । शुक्ल पक्ष का जन्म हो, तो वृद्धावस्थ अच्छी व्यतीत हो । कृष्ण पक्ष में बाल्यावस्था में सुखी द्रव्य की कमी नहीं रहे, मातृ सुख पूर्ण मिले, चन्द्रमा चतुर्थ में व गुरु षष्ठ में हो, तो पैतृक कार्य में सफलता मिले । चन्द्र चतुर्थ में शनि 9 या 11 वें में हो तो उत्तम कुटुम्ब का सुख मिले । चतुर्थ में अकेला चन्द्र हो अथवा अकेला चन्द्र सप्तम में हो तो जातक सन्तान उत्पन्न होने के बाद सुखी होगा । राज्य से व समुद्री यात्रा से द्रव्य लाभ होता रहेगा ।

चन्द्र अशुभ - अशुभ चन्द्र चतुर्थ में गुरु 10 वें भाव में हो , तो भलाई करने पर भी दण्ड मिले ।

उपाय - शुभ कार्य के पूर्व पानी या दूध से भरा घट रखें । दूध का दान करें, बेचे नहीं । पितृ यज्ञ करें । दादा, पोता या दौहिता एक साथ मंदिर में जावें ।

पंचम भावगत चन्द्रफल

शुभ चन्द्र - शुभ चन्द्र पंचम भाव में होने से जातक न्याय प्रिय, धर्मात्मा, सुमार्ग से धन कमाने वाला, दीर्घायु, नृपतुल्य वैभव प्राप्तकर्ता, दया आदि गुणों से युक्त होगा । चन्द्रमा पंचम में हो, केतु शुभ हो, तो 5 पुत्र हो । विद्या फलीभूत नहीं होती, कृतध्न लोगों का भला करेगा, चन्द्र पंचम में और नवम भाव रिक्त हो तो चन्द्र सम्बन्धी कार्य करते समय कार्यारंभ से पूर्व मिष्ठान खा लें ।

अशुभ चन्द्र - अशुभ चन्द्र पंचम में होने से जातक लालची, स्वार्थी, कुत्सित वाणी से बहिन, बुआ पत्नी को कष्ट देता रहे । जब अशुभ चन्द्र पंचम में हो, तो 3,8,10,11वें भाव में भी कुप्रभाव डालेगा ।

उपाय - सोमवार को श्वेत वस्त्र में चावल मिरी बाँध कर बहते पानी में बहावे । लालची स्वार्थी न बनें । अशुभ वाक्यों का त्याग करें ।

6वें भाव में स्थित चन्द्र का फल

चन्द्र शुभ - चन्द्र शुभ षष्ठ भाव में हो, तो अनेक विघ्न बाधाओं से विद्या की प्राप्ति होवे और वह फलीभूत होवे । चन्द्र 6ठें गुरु द्वितीय भाव में हो, तो चन्द्र का फल अशुभ नहीं होगा । चन्द्र 6ठें भाव में 2,4,8,12 भाव में शुभ हो तो मृत पुरुष में भी प्राण डालने की सामर्थ्य होवे । चन्द्र 6ठें सूर्य द्वादश में हो, तो जातक या उसकी पत्नी काणी हो ।

अशुभ चन्द्र - षष्ठ भाव में अशुभ चन्द्र और बुध 2रे 12वें भव में हो, तो जातक आत्महत्या करने के लिये तत्पर हो, बुधचन्द्र षष्ठ में मंगल 4थे या 8वें हो, तो जातक की माता बाल्यावस्था में ही मर जाय ।

उपाय - पिता को अपने हाथ से दूध पिलावे । रात्रि में दूध कभी न पियें । धर्मार्थ कूप, नलकूप, प्याऊ लगावे। अस्पताल व श्मशान में जलकूप या नल लगावें । दूध का दान न करें ।

सप्तम भाव में चन्द्रफल

शुभ चन्द्र - शुभ चन्द्र सप्तम में हो, तो विद्या धनदायक होगी, जातक यशस्वीय धनी, कवि या ज्योतिषी, उसे आध्यात्मिक विषय में उन्नति, चन्द्र की वस्तुओं की प्राप्ति, वह सहृदय, कुटुम्ब सुख से रहित, मृत्यु अपने ही घर में हो, शुभ चन्द्र सप्तम में हो, तो उपर्युक्त फल हो ।
शुभचन्द्र सप्तम में शुभफलप्रद बुध हो, 8 वां स्थान रिक्त हो, तो अन्तर्ज्ञान और आध्यात्मिक विशिष्ट हो । शुभ चन्द्र सप्तम में हो, तो बुध का फल अशुभ होगा । शुभचन्द्र 7 वें और शुक्र शुभ हो, तो सांसारिक सुख मिले । व्यापार में उन्नति होवे ।

अशुभ चन्द्र - अशुभ चन्द्र सप्तम में और शुक्र पापग्रह के साथ कहीं भी हो, तो सन्तान अल्पायु में मरे । अशुभ चन्द्र सप्तम में, बुध शुक्र शनि प्रथम भाव में हो, तो जातक का सास बहू से झगडा रहे । नशेबाज हो, जमीन जायदाद नष्ट करे ही दीर्घायु हो, विवाह से पूर्व चन्द्रमा की वस्तुएं घर में अवश्य स्थापित करे । 6. 12.24 वें वर्ष में भी स्थापित की जा सकती है ।

उपाय - दूध व पानी कभी न बेचे । ससुराल से चन्द्रमा की वस्तुएं दहेज में अवश्य प्राप्त कर घर पर स्थापित करे ।

अष्टम भावस्थ चन्द्रफल

शुभ चन्द्र - शुभचन्द्र अष्टम में हो तो विद्या अधूरी रहे, तो मातृ सुख मिल यदि विद्यापूर्ण हो, तो माता को अरिष्ट रहे । शुभ चन्द्र अष्टम में तथा गुरु व शनि दूसरे हो, तो राहू मंगल एवं चन्द्र का दुष्प्रभाव नष्ट हो जायेगा । चन्द्र अष्टम में और बुध शुभ हो, तो माता दीर्घायु हो तथा माता-पिता बाद में मरे ।

चन्द्र अशुभ - अशुभ चन्द्र अष्टम में हो, तो सन्तान अवश्य हो, पैतृक सम्पत्ति व कृषि का लाभ न हो । पैतृक सम्पत्ति के पास कुऑ हो, तो चन्द्र का अशुभ फल आजीवन रहे, चन्द्र अष्टम में दूसरे राहु या बुध हो, तो अपनी मूर्खता से शुक्र या चन्द्र की वस्तुएं अशुभ प्रभाव दें । अशुभ चन्द्र अष्टम में तथा शुक्र या बुध या शनि अशुभ हो, तो स्वास्थ्य व सन्तान का फल अशुभ हो । अशुभ चन्द्र अष्टम में में और तीसरे व 4 थे भाव में 3 पापग्रह हो, तो माता-पिता से सम्बन्ध अच्छे न रहे तथा सम्पत्ति व सन्तान का फल भी अशुभ हो ।

उपाय- श्मशान के नल का पानी घर में ला कर रखे, पितरों का श्राद्ध करें । जूवा न खेलें, नाक छिदवाएं । घर में चन्द्रमा की वस्तुओं का संग्रह रखें ।

नवम भावस्थ चन्द्रफल

चन्द्र शुभ - शुभ चन्द्र नवम भाव में हो, तो जातक धनी, प्रतिष्ठित, दीन दुःखी का सेवक, 24 वें वर्ष में भाग्योदय, सुखी, परहित दूसरे करने वाली विद्या का ज्ञाता, दाता, धर्मकर्म व यात्रा करने वाला परोपकारी होगा । शुभचन्द्र नवम में, मित्र ग्रह पंचम में हो भले ही चन्द्र के साथ पापग्रह भी हो तब भी सन्तान, और धर्म वृद्धि हो । शुभचन्द्र नवम में तथा चतुर्थ में शुभग्रह हो, तो माता-पिता का सुख, भाग्यशाली, दयालु व धर्मात्मा हो । शुभ चन्द्र नवम में गुरु से सम्बन्धित हो तथा तीसरे व पंचम में कोई ग्रह हो, तो निर्धन परिवार में जन्म लेकर भी समुद्री या हवाई शक्ति से संपत्ति प्राप्त करें ।

चन्द्र अशुभ - अशुभ चन्द्र नवम में और तृतीय में हो, तो माता को 24 वें वर्ष में नेत्ररोग या अरिष्ट हो । चन्द्र नवम में, केतु और बुध 5 वें स्थित हो, तो जातक की आर्थिक स्थिति 34 या 48 वर्ष के बाद सुधरे । संबंधियों से चन्द्र सम्बन्धी वस्तुओं का लाभ न हो ।
उपाय - चन्द्रमा की वस्तुएं स्थापित करें चन्द्रमा के भिन्न ग्रहों की वस्तु स्थापित करे ।

दशम भावस्थ चन्द्र फल

चन्द्र शुभ - शुभचन्द्र दशम में हो, तो माता से अनबन रहे व दूसरे भाव के स्वामी की वस्तुओं से सहायता मिले, यदि दूसरा भाव रिक्त हो, तो गुरु की वस्तुओं से सहायता मिले, दीर्घायु, चिकित्सक (वैद्य) ज्योतिषी होवे । दूसरा भाव शुभ हो, तो इन विद्याओं से लाभ हो, यदि 8 वां भाव अशुभ हो, तो बार-बार अपमानित होवे । चन्द्र दशम में शुभ या अशुभ हो, चतुर्थ में पुरुषग्रह हो तथा दूसरा भाव रिक्त हो, तो 24 वें वर्ष में सर्जन(जरीह) का कार्य करने पर धन की वृद्धि हो । चन्द्र दशम में, शनि चतुर्थ में व शुक्र प्रथम भाव में हो,

तो माता-पिता का सुख दीर्घकाल तक मिले किन्तु प्रेमिका या स्त्री अच्छी नहीं मिले । चन्द्र दशम में सूर्य गुरु या मंगल चौथे भाव में हो, तो उजडा घर बस जाय सभी प्रकार से समय शुभ रहे ।

चन्द्र अशुभ - अशुभ चन्द्र दशम में और सूर्य सप्तम में हो, तो जल में मृत्यु हो । चन्द्र दशम में तीसरा भाव अशुभ हो या तीसरे भाव में बुध शुक्र हो, तो तरफ पदार्थो से हानि हो । चन्द्र दशम में पापग्रह चतुर्थ में और शुक्र सप्तम में हो, तो माता व सन्तान का कष्ट हो । चन्द्र दशम में तथा शनि प्रथम या चतुर्थ भाव में हो, तो कुमार्ग से द्रव्य संचय करे । माता-पिता का सुख मिले, स्त्री के कारण धन का अपव्यय हो । चन्द्र दशम में, 7 वें मंगल तथा सूर्य से आगे शनि हो, तो जातक विकलांग हो ।

चन्द्र अशुभ दशम में तथा दूसरा भाव विरिक्त हो, तो छाती या फेफडों का रोग हो ।

उपाय - रात्रि में दूध कदापि न पीएं । दुधारू पशु घर पर न रखें । मकान न बनावें । गुरु ग्रह का उपाय करें । ससुराल से अधिक लगाव न रखें ।

11 वें भाव में स्थित चन्द्रफल

चन्द्र शुभ - शुभ चन्द्र एकादश में हो, तो माता की मृत्यु के बाद सन्तान हो, पुत्र जन्म में बाधा, केतु का फल अशुभ हो तथा दादी पोते में अनबन रहे । चन्द्र एकादश में और गुरु शुभ हो, तो धनवान हो । चन्द्र 11 वें तथा 4 थे सूर्य बुध हो, तो लाभ पक्ष श्रेष्ठ हो । चन्द्र 11 वें बुध 5 वें हो, तो दीर्घायु हो ।

चन्द्र अशुभ - अशुभ चन्द्र 11 वें और तीसरा भाव अशुभ हो, तो निम्नलिखित पांचों वस्तुएं विष तुल्य होगी -

1. बुधवार को बहिन का जन्म बुध संबंधी व्यापार
2. शुक्रवार को अपना या सम्बन्धी का विवाह
3. शनिवार को भवन निर्माण और शनि सम्बन्धी कार्य
4. प्रातः दान लेना व देना केतु की वस्तुओं का व्यापार
5. सायं गुरु का उपदेश सुनना, गुरु की वस्तुओं का व्यापार चन्द्र 11 वें केतु तीसरे हो, तो समुद्री यात्रा न करें । कूप-खनन न करें, यदि करता है, तो सम्पत्ति की हानि होगी ।

उपाय - भैरव मन्दिर में दूध का दान, प्रसव-काल में माता को दूर रखें, वीर्यात्पता हो, तो देशी दवा का प्रयोग करें ।

द्वादश भावगत चन्द्रफल

चन्द्र शुभ - चन्द्र शुभ द्वादश में हो, तो जातक अनपढ परन्तु पुत्र शिक्षित होगा, चन्द्र द्वादश में सूर्य बुध 3 रे हो, तो कुल दीपक होगा, द्वादश में चन्द्र, गुरु और सूर्य भी शुभ हो, तो धनवान हो तथा चन्द्र द्वादश में हो, तो मंगल केतु व बुध का 12 भावों में स्थित होना अनिष्ट कारक है ।

चन्द्र अशुभ - अशुभ चन्द्र 12 वें हो, तो पैतृक सम्पत्ति की बरबादी का कारण बने । अशुभ चन्द्र 12 वें हो, वह वर्ष कुण्डली में प्रथम भाव में आता हो, तो जातक के साथ'-साथ ससुराल को भी बरबाद करता है । वर्ष में द्वादश चन्द्र भी अशुभ फल-प्रद होता है । गुरु का उपाय करें । अशुभ चन्द्र द्वादश में सूर्य 6 वें हो, तो जातक व पत्नी काने हो । द्वादश में चन्द्र 2, 6, 12 में बुध, शुक्र या पापग्रह हो, तो पिता को दी गई सब वस्तुएं नष्ट हो जाय ।

उपाय– वर्षा का जल घर में स्थापित करे ।(गुरु का उपाय करना लाभप्रद होगा कोई भी कार्य पानी पीकर ही आरम्भ करें) ।

मंगल का प्रथम भावगत फल

मंगल शुभ – शुभ मंगल प्रथम भाव में हो, तो भाई-बहिन का सुख होगा, दांत 31 या 32 होंगे 28 वें वर्ष से धनी होगा, राज्य से लाभ होगा, स्वस्थ शरीर हो, शनि संबंधी (भतीजा, पोता, ताऊ, चाचा, नानी आदि) से तथा लोहा लकडी मशीनरी के द्वारा लाभ हो, भाई व ससुराल पक्ष की सहायता करेगा, दीर्घायु हो, जातक के मुख से निकले वाक्य जो दुष्टवाक्य हो, वे अक्षरशः सत्य होते हैं, सत्यवक्ता हो । प्रथम में मंगल, 2 रें, चन्द्र व 12 वें सूर्य हो, तो जातक के 13, 14, 15, 28 वें वर्ष में माता'-पिता को अरिष्ट होगा । प्रथम में मंगल 2 रे सूर्य 9, 12 वें मंगल से निर्धन साधु-संगति करने से भाइयों को कष्ट होता है । 3,4 व 9वां भाव रिक्त हो, तो 2 भाइयों का सुख हो ।

मंगल अशुभ – अशुभ मंगल प्रथम भाव में हो, तो भाग्यहीन मुफत का माल रखने से दर-दर भटकता है, दादा, पिता को कष्टकारक, सगे संबंधी कृतध्न होंगे, यदि जातक बुराई करेगा, तो भातृपक्ष व ससुराल पक्ष को हानि होगी ।

उपाय– ससुराल का कुत्ता न पाले ।

द्वितीय भावगत मंगल का फल

मंगल शुभ – शुभ मंगल 2रे हो, तो बडे भाई से अनबन रहे, कभी धनी, कभी निर्धन, ससुराल सम्पन्न होगी, उससे लाभ होगा, राहू सम्बन्धी कार्यों से लाभ होगा, दृढ निश्चयी व प्रशासक होगा, ससुराल में नलकूप हो और चन्द्र सम्बन्धी वस्तु घर में हो, तो ससुराल पक्ष सम्पन्न रहे, द्वितीय में मंगल न होकर केन्द्र में रहे तो भाग्यशास्त्री प्रशासक बने ।

मंगल अशुभ – अशुभ मंगल 2रे तथा सूर्य शनि एकत्र हो, तो दूसरों के लिये आस्तीन को सांप हो लडाई-झगडे में मृत्यु हो, 9 वर्ष तक रोगी रहे 8, 9, 10, 12 वें भाव पर गुरु सूर्य, बुध या शनि का प्रभाव हो, तो सवोपार्जित द्रव्य होगा और आवश्यकता पडने पर दूसरों से धन सुगमता से मिलता रहेगा ।

उपाय – सगे सम्बन्धियों का पालन पोषण करें । भाई को कष्ट न दे । माता व दादी का कभी अपमान न करे । सफेद वस्तुओं का दान करें । ससुराल में नलकूप लगवायें या प्याऊ खुलावें ।

तृतीय भागवत भौमफल

मंगल शुभ – तृतीय में शुभ मंगल हो, तो भाई-बहिन का सुख मिले भोला स्वभाव हो तथा निकटस्थों की भलाई करें शत्रुजित् व साहसी, ससुराल धनी, दहेज अच्छा मिले, अत्याचारी को सजा दे । तृतीय में मंगल, नवम में गुरु हो, तो ससुराल से अधिक धन मिले । शनि 9वें हो, तो स्वस्थ शरीर तथा घर में सम्पन्नता बढे । 11वें गुरु जातक को शुभ परन्तु संबन्धियों की मृत्यु करता है ।

मंगल अशुभ – अशुभ मंगल 3रे भाव में 'खाओ, पीओ तथा मौज करो' की भावना बनाता है । सन्तान अशिक्षित होगी तथा रोगी होगी ।

उपाय – हठी न बनें । अय्याशी से बचें । हाथी दाँत पास में या घर में रखें । चाँदी की अंगूठी बिना जोड की तर्जनी में धारण करें ।

चतुर्थ भावस्थ भौमफल

मंगल शुभ - शुभ मंगल चतुर्थ में हो, तो भाभी नेक हो, भाई व उसकी सन्तानसदा सुखी रहेगी, शरारत करने वालों को सबक सिखायेगा, सच्चाई के साथ जीवन यापन करेगा ।

मंगल अशुभ - निम्नोक्त ग्रह स्थिति में मंगल अशुभ व मांगलिक होगा । 1, 8 वें भाव में मंगल के साथ सूर्य न हो 7, 10, 12 भाव में अकेला सूर्य हो, 5 या 9 वें भाव में सूर्य के साथ केतु हो, 6 या 12 वें भाव में सूर्य के साथ राहु हो, 10वें भाव में सूर्य के साथ शनि हो 12 वें भाव में सूर्य के साथ बुध हो तो ऐसा जातक स्त्री, माता, सास, नानी, भाभी आदि की मृत्यु का कारण होगा । अशुभ मंगल चतुर्थ में धन व प्राण के लिये अशुभ होता है । मंगल 4थे व गुरु 8वें हो, तो दरिद्र हो । मंगल 4थे व बुध 12 वें हो, तो मूर्ख दुःखी व कष्टमय जीवन होता है । 3रे या 8वे भाव में चन्द्र, मंगल के अशुभत्व का नाश करता है । चतुर्थ मंगल भवन की प्राप्ति करवाता है तथा स्वभाव क्रोधी होता है । बुध केतु में से कोई 8वें भाव में हो, तो ताई, चाची घर को बरबाद करेगी, मंगल से चौथे-आठवें भाव में पापग्रह हो, तो घर को बरबाद करने में ताऊ या चाचा का हाथ होगा । मंगल 4थे शनि प्रथम भाव में हो, तो जातक चोर धोखेबाज तथा आर्थिक कष्ट भोगता है ।

उपाय - वटवृक्ष की जड में मीठा दूध चढावें, घर, दुकान, फैक्ट्री की छत पर चीनी की खाली बोरियाँ रखें । चाँदी का चौकोर टुकडा पास में रखें । चिडियों को मीठा खिलावें । सोना-चाँदी ताँबे की बनी अंगूठी धारण करें ।

पंचम भावस्थ भौमफल

मंगल शुभ - जन्मकुण्डली में शुक्र व चन्द्र कैसी भी स्थिति में हों सदा ही स्त्री, धन, गौ, अश्व, माता आदि से लाभ देते रहेंगे। शुभ मंगल पंचम में हो जातक शान्त स्वभाव का, न्याय प्रिय, परिवार में कोई व्यक्ति वैद्य या डाक्टर होगा अथवा यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र, जादू-टोना करने वाला होगा । जातक विद्वान्, सुशील, सन्तान व स्त्री वाला होगा, जब दशम भाव रिक्त हो, तो भ्रातृ सुख मिले, 9वें कोई ग्रह हो, तो सन्तानोत्पत्ति के पश्चात निरन्तर उन्नति होवें ।

मंगल अशुभ - पंचम में अशभ मंगल व्यर्थ भ्रमण, स्त्री व सन्तान सुख कम मिले भाई की सन्तान की मृत्यु होगी, अग्नि भय बना रहे प्रेमिका की तबाही का कारण बनेगी, रात्रि को नींद भी गहरी नहीं आयेगी ।

उपाय - रात में सिरहाने पानी रखकर सोयें । पितृ श्राद्ध अवश्य करें । दूध का दान करे । पर स्त्री गमन से बचें । वृद्धों की सेवा करें ।

षष्ठ भावगत भौमफल

मंगल शुभ - 6वें शुभ मंगल हो, तो जातक परिवार का पालन पोषण करें, साहसी होवें, पराक्रमी, एकान्त प्रिय व साधू सन्त की तरह रहे। लेखक, सदाचारी संयमी जीवन, विद्वानों से मित्रता रखने वाला, पोते-पडपोते देखकर मरे। 7वें भाव में शनि बुध व केतु शुभ फलकारक रहें ।

मंगल अशुभ - अशुभ मंगल 6वें भाव में हो, तो मांगलिक अवसर पर विघ्न बाधा हो, सन्तान के लिये प्रसन्नता की बजाय अश्रुपात करना पडे । 6 वें अशुभ मंगल मामा के परिवार, लडकी बहन, बुआ, माता दूध देने वाले पशु अर्थात् केतु-शुक्र-बुध-चन्द्र ग्रह से संबन्धित प्राणियों पर दुःख कें बादल मंडराने लगें । प्रथम सन्तति घातक है, सन्तान को सोना कभी न पहनावें, नहीं तो आर्थिक हानि होगी । मंगल 6ठे बुध 12वें हो, तो मंगल 6ठे और बुध चौथे हो, तो जातक अल्पायु हो । भाई बहिन कम होंगे ।

उपाय - शनि का उपाय करें । कन्या पूजन करें, कन्या को दूध, चावल, चांदी का दान करें। गणपति की उपासना करें । बुआ व बहिन को लाल कपडे देते रहें ।

सप्तम भागवत भौमफल

मंगल शुभ - शुभ मंगल सप्तम भाव में हो, तो जातक, मिष्टान्न प्रिय, स्त्री -सुख-युत, उपमन्त्री -पदारूढ धर्मात्मा, दीन दुखी का सहायक, न्यायप्रिय, साहस बढाने वाला, राज्याश्रित व जमीन- जायदाद का मालिक होता है । वह इच्छित वस्तु एक बार प्राप्त कर लेता है,बार-बार नहीं । ऐसा तब होता है जब मंगल सप्तम में और प्रथम भाव में गुरू या शुक्र हो ।

मंगल अशुभ - अशुभ भौम सप्तम में बुध के साथ हो, तो भाग्यहीन । यदि बहिन साथ में रहे तो अधिक अशुभ फल हो । अशुभ मंगल सप्तम में होने पर बहिन विधवा हो जाती है या उसका तलाक हो जाय ।

उपाय - ठोस चांदी घर पर रखें, शनि व शुक्र की वस्तुओं का उचित ढंग से प्रयोग करें । तोता मैना नहीं पालें । सूखे फूल घर में न रखें । मद्यमास सेवन बंद करें, बुआ-बहिन को लाल वस्त्र देते रहें ।

अष्टम भावस्थ भौमफल

भौम शुभ - शुभ भौम अष्टम में हो, तो जातक पराक्रमी शत्रुजित् न्याय-प्रिय, परिश्रमी, वचनबद्ध होता है । दूसरा भाव रिक्त हो या उसमें चन्द्र या गुरु हो, तो यह योग शुभ फल कारक है । अष्टम में शनि-मंगल का योग आक्रमण रोकने की क्षमता प्रदान करता है । यदि मंगल के साथ अष्टम में बुध हो, ता दोनों शुभ फलप्रद होते हैं ।अष्टम में मंगल, बुध 6ठे हो तो बाल्यावस्था में माता की मृत्यु हो।

भौम अशुभ - अष्टम में अशुभ मंगल हो, तो छोटे भाई का जन्म 4 या 8 वर्ष बाद हो । वैसे मंगल छोटा भाई नहीं चाहता । अष्टम मंगल ताऊ या मामा या दोनों के अशुभ होता है । बुध जितना शुभ होगा मंगल उतना ही अशुभ होगा। परन्तु बुध 6 ठे या अष्टम में नही होना चाहिये ।.

उपाय - विधवा का आशीर्वाद लेवें । तवा गर्म होने पर उस पर पानी का छींटा मारकर बाद में रोटी बनाकर तवे पर डालें । गले में चाँदी धारण करें । तन्दूरी मीठी रोटी 40 या 45 दिन तक कुत्ते को खिलावें।

नवम भावस्थ भौमफल

मंगल शुभ - शुभ मंगल नवम भाव में हो, तो जातक न्यायप्रिय, भाभी उसके भाग्य की आधार हो, जितने पिता के भाई हो उतने ही जातक के भी भाई हो । भाई-भाई मिलकर रहें तो बहुत उन्नति हो, बंटवारा कर देने पर सुख समृद्धि समाप्त हो जाये । 25 वर्ष में राज्यपद प्राप्त करे, वैसे जन्म से ही नृप तुल्य जीवन व्यतीत करे, युद्ध सम्बन्धी वस्तुओं के व्यापार से धनी होवे । 13 वर्ष तक माता-पिता की उन्नति में सहयोग देवे । सूर्य कुण्डली में कहीं भी होवे, शुभ कारक रहे, जातक प्रशासक पद पर रहे ।

मंगल अशुभ -अशुभ मंगल नवमस्थ हो और 3रे व 5वें भाव में पापग्रह हो, तो मंगल अतिशुभ फल कारक रहे । नवममें अशुभ मंगल नास्तिक, भाग्यहीन व निन्दा करने योग्य बनाता है । बुध भी शुभ हो तो अधिक अशुभ फल प्रद होता है ।

उपाय - भाभी की सेवा करें, बडे भाई के साथ रहें, शुभ की वस्तुयें जमीन में दबायें । बुध की वस्तुयें कुए में डालें, शुभ की वस्तुओं का मन्दिर व धर्मस्थल में दान करें ।

दशमस्थ भौमफल

मंगल शुभ - दशमस्थ शुभ मंगल परिवार को उन्नत बनाता है, जातक स्वोपार्जित धन से धनी हो, पुत्रवान्, साहसी, पराक्रमी होगा । ये सभी फल तभी प्राप्त होंगे जब 2रे भाव में राहु, केतु, शनि, शुक्र,चन्द्र न हों, 3रे 6ठे भाव में कोई ग्रह न हो चौथे भाव में शनि न हो । बुध-शनि शुभ हो, तो 24 से 25 वर्ष की आयु तक धन संग्रह अच्छा हो । गुरु कैसा भी हो 13 वर्ष से नवम भावस्थ मंगल का शुभफल घटित हो । मंगल 10वें, शनि 3रे हो, तो जातक धनी व पोते पडपोते वाला एवं जमीन जायदाद का मालिक हो, नकद पैसा कम हो । 10वें मंगल 4थे चन्द्र हो, तो सरकार से लाभ मिले । 10वें मंगल, पंचम भाव रिक्त हो, तो सभी प्रकार का सुख मिले ।

मंगल अशुभ - अशुभ मंगल 10वें और 6ठे भाव में हो तो सन्तान पर कुप्रभाव पडता है, 45 वर्ष तक सन्तान नहीं हो, 15 वर्ष रोग में व्यतीत हो 22 वाँ वर्ष अत्यन्त कष्टप्रद व्यतीत हो, सोना बिके ते समझो कि मंगल अशुभ फल कर रहा है । यदि दूध उबलकर जलेगा, तो सन्तान व परिवार को कष्ट होगा । दशमस्थ मंगल के साथ सूर्य हो, तो सन्तान व परिवार को कष्ट होगा । हानि हो । मंगल 10 वें व शनि 4 थे हो, तो जातक चोरी-डाके के कारण सजा पाये । दशमस्थ मंगल शत्रु ग्रह के साथ हो, तो जातक बरबाद हो जाये ।

उपाय - बाप-दादा की जायदाद न बेचें । हिरन को पालना लाभकारी हो । काणे और सन्तानहीन की सेवा करें । दूध उबलते समय दूध उबलकर बाहर न गिरने दें ।

एकादश भावगत भौमफल

मंगल शुभ - 11 वें शुभ मंगल जातक को अहिंसक, गुरु भक्त, आद्यात्मिक विचार वाला, न्यायप्रिय किन्तु संबंधी व रिश्तेदार और सांसारिक 3 कुत्ते - बहन के भाई, ननिहाल में नाती, ससुराल में दामाद रहे-ये तीनों लाभ प्रदान करने वाले हों । जातक न्यायप्रिय व पशुपालक व्यापार करने वाला होता है । गुरु शुभ हो, तो मंगल भी शुभ फल प्रद हो तथा 28 वें वर्ष से 52वर्ष की अवस्था तक निरन्तर धनागमन होता है । मंगल के साथ 11 वें गुरु हो तो 2 भाई होंगे । गुरु अशुभ हो तो गुरु की वस्तुएँ पानी में बहाने से गुरु उच्च राशि का फल देता है ।

मंगल अशुभ - अशुभ मंगल 11 वें हो और तीसरा भाव रिक्त हो, तो कर्ज से लद जाय, जमीन-जायदाद बिक जाय पैसा नहीं रुके । अशुभ मंगल 11 वें भाव में होने से 45वर्ष तक इस का दुष्प्रभाव रहता है । जातक रोगी व सन्तान झगडालू होती है ।

उपाय - पैतृक सम्पत्ति कदापि न बेचें । कुत्ता पालें या साला, दामाद और नाती का पालन पोषण करें । लहसुनिया धारण करें । केतु की वस्तुएँ दान करें ।

द्वादश भावगत भौमफल

मंगल शुभ - 12 वें शुभ मंगल, बुध, केतु प्रथम या अष्टम भाव में हो, तो भी उनका अशुभ फल नहीं होता । जातक क्रोधी, स्वतन्त्रता प्रमी गुरु भक्त, शत्रुजित्, तथा निर्धन परिवार को धनवान् बना देवे । मंगल द्वादश में गुरु 2 रे भाव में हो, तो पुत्र जन्म के बाद सम्पन्नता बढे, घर में 24 घंटे लगातार लंगर चलता रहे । यदि 11 वें भाव का ग्रह आठवें भाव का शत्रु न हो द्वादश भावस्थ मंगल हो, सूर्य 3रे 11वें भाव में हो तो रोग व शत्रु से रक्षा होती है ।

मंगल अशुभ - अशुभ मंगल द्वादश में हो जो जातक के प्रति झूठी अफवाह फैलती है । प्रकृति नीच हो, स्त्री से नहीं बने, श्वास रोग, अपव्यय, सन्तान से दुःख, दृष्टि कमजोर, व्यापार में हानि, भाइयों से नहीं बने तथा अनेक प्रकार के कष्ट हों।

उपाय – मंगल की वस्तुएं पास न रखें खाकी रंग की टोपी व पगडी सिर पर रखे । मीठा खायें व खिलायें । मीठा दूध या मीठी रोटी फकीर या कुत्ते को खिलावें । मन्दिर व धर्मस्थल में बताशे का दान करें । सिर पर चोटी रखें । मेहमानों को पानी की जगह दूध पिलावें ।

प्रथम भावगत बुधफल

बुध शुभ – जातक विनोदप्रिय, राजा या राजा सदृश, स्वार्थी, घुम्मकड शरारती और स्वयं सुख की सांस लेगा । धन की चिंता नहीं होगी । लडकियां भी राज करेगी । राज्य से लाभ होगा । सूर्य जिस भाव में स्थित होगा उससे संबंधित संबंधी अल्पकाल में ही धनी हो जायेंगे । यदि सूर्य या बुध की युति पहले भाव में हो या पहले भाव के बुध पर सूर्य की दृष्टि हो, तो स्त्री धनी उत्तम कुल की व सुस्वभाव से युक्त होगी ।

बुध अशुभ – यदि मंगल 12 वें भाव में हो, तो पहले भाव का बुध कभी भी कुप्रभाव नहीं देगा । ससुराल और सन्तान की स्थिति अशुभ हो । ससुराल में शराब और मांस का प्रयोग होगा तथा सन्तान भी शराबी व कबाबी होगी । राहु व केतु अशुभ फल देंगे । पहले भाव में बुध अकेला हो और सातवाँ भाव रिक्त हो, तो राजा सदृश होगा और दूसरों को प्रभावित करने में माहिर होगा । दूसरों के लिये यह स्थिति लाभ प्रद होगी । पहले भाव में अशुभ बुध और 7वें भाव में चन्द्र के रहने पर जीभ का स्वाद व नशेबाजी की आदत बर्बाद कर देगी ।

उपाय – एक जगह टिक कर रहें । इधर-उधर न भटकें । अंडा व मांस का सेवन न करें । नशे की लत से बचें । ऐसे कार्य न करें जिस से अपयश का भय हो । हरे रंग की वस्तुओं से बचें ।

द्वितीय भावस्थ बुधफल

बुध शुभ – जातक योगी, स्वार्थी, बुद्धिमान, बह्मज्ञानी, और अपने आप मे मस्त होगा । राज्य परिवार को वृद्धिकारक, शत्रुहन्ता एवं विश्वास घातियों का शत्रु होगा । पिता का सुख न होने पर भी धनी होगा । अपने प्रयासों से उत्तम जीवनयापन करते हुए दीर्घायु तक माता का सुख पायेगा । ससुराल एवं कुटुम्ब को पालने व तारने वाला होगा । वाकपटुता से अनेक कार्य बनाने वाला, शत्रुओं पर विजय पाने वाला और शुक्र व मंगल की वस्तुओं का शुभ लाभ पाने वाला होगा । बुध दूसरे हो और राहु आठवें हो, तो हाजिर जवाब, पर पर राहु नवें हो, तो उत्तम भाषण देने वाला होगा । बुध दूसरे और मंगल आठवें भाव में हो तो वाक् और कलम का धनी होगा । बुध 2 रे भाव में और केतु नौवें भाव में हो, तो वाक् पटुता में माहिर होगा । बुध 2रे भाव में हो और 1ले या 12वें भाव में गुरु हो, तो जातक मान-सम्मान वाला और माता दीर्घायु होगी । बुध 2रे और शनि 6ठे भाव में हो, तो जातक अत्यधिक तेज होगा जो किसी के काबू में न आ सकेगा ।

बुध अशुभ – आर्थिक रूप से तंग, घमण्डी, स्वस्थ और बुद्धि से तेज होगा । यह तभी होगा जब 2रे भाव में बुध अशुभ एवं सूर्य 8वें भाव में हो ।

बुध अशुभ हो और गुरु आठवें भाव मे हो, तो दादा कष्ट में होगा और दूसरों की वस्तुओं व संबंधियों का भी शुभ फल न होगा । बुध 2रे अशुभ हो और चन्द्र व शनि 12वें भाव में हो, तो 17 से 25 वें वर्ष तक पिता का धन पैतृक सम्पत्ति व्यर्थ होती जायेगी ।

सूर्य आठवें भाव में हो । बुध अशुभ हो और गुरु आठवें भाव में हो तो दादा कष्ट में होगा और गुरु की वस्तुओं व सम्बन्धियों का शुभ फल न होगा । बुध 2रे अशुभ हो और चन्द्र व शनि 12वें भाव में हो, तो 17 से 35 वर्ष तक पिता का धन व पैतृक सम्पत्ति व्यर्थ होती जायेगी ।

उपाय – साली का साथ न करें एवं उससे संबंध न रखें चन्द्र व गुरु की वस्तुयें मंदिर में देना या चन्द्र व गुरु का उपाय करना लाभप्रद रहेगा । भेड व तोता-तोती कभी न पालें ।

तीसरे भाव में स्थित बुध

बुध शुभ – यदि बुध तीसरे शुभ हो और मंगल पहले भाव में हो, तो धन और क्षेत्रवृद्धि के साथ-साथ कुटुम्ब बढता जायेगा । बुध की वस्तुयें शुभ फल देगी । यदि शुभ बुध तीसरे भाव में और सूर्य 11 वें भाव स्थित हो तो सूर्य व बुध निर्बल होंगे । केतु (मामा व सन्तानादि) का शुभफल और दमे का अच्छा वैद्य होगा । दीर्घायु होगा। तीसरे भाव में बुध शुभ और सोया हो अर्थात् 9 वां 11 वां भाव रिक्त हो, तो बुध सर्व प्रकार से शुभ फलदायी होता है ।

बुध अशुभ – बुध तीसरे भाव में अशुभ हो तथा घर का द्वार दक्षिण में हो, तो स्त्री धन व ससुराल की तबाही होगी । बुध तीसरे भाव में अशुभ हो और शुक्र 4थे भाव में हो, तो संतान विलम्ब से होगी । बुध तीसरे भाव में हो और शुक्र स्थापित किया हो, तो चन्द्र व कलम फल शुभ होगा । बुध 6ठे व 7वे भाव में पाप ग्रह हो, तो पिता का धन और माता का घर नष्ट हो जाए ।

उपाय – प्रतिदिन फिटकरी से दांत साफ करें । बुध से सम्बन्धित वस्तुएँ मूँगादि रोग कारक होगी । अतः इनका प्रयोग न करें । पक्षियों की सेवा करें । बकरी का दान करें व घर में लगा पत्थर दूध से प्रतिदिन धोयें ।

चतुर्थ भावस्थ बुध फल

बुध शुभ – यदि चौथे भाव में अकेला बुध शुभ हो, तो सबके लिये पारस पत्थर की तरह होगा । बुध चौथे भाव में शुभ हो और चन्द्रमा दूसरे भाव में हो, तो सरकार में उच्च पद पर हो, धन की कमी न रहे तथा बुध व शुक्र दोनों का फल शुभ होगा । पूरे 32 दाँत हों, तो कुटुम्ब का बेडा पार लगाने वाला होगा तथा मानसिक रूप से अशान्त होगा । यदि बुध चौथे भाव में शुभ हो, दूसरा भाव रिक्त हो और चन्द्र 6ठे या 3रे भाव में हो, तो माता-पिता का सुख दीर्घायु तक रहेगा । बुध चौथे भाव में शुभ हो और गुरु भी श्रेष्ठ हो, तो राज्य सरकार या सरकार से हर प्रकार से लाभ और उन्नति मिलेगी ।

बुध अशुभ – बुध चौथे भाव में अशुभ हो,तो माता शीघ्र चल बसे, बुध की वस्तुयें घर पर लाने से माता अल्पायु हो । यदि माता जीवित हो, तो आर्थिक रूप से स्थिति कमजोर तथा माता का स्वास्थ्य ठीक न हो । बुध चौथे भाव में अशुभ हो और चन्द्रमा 6ठे भाव में या अशुभ हो, तो जातक आत्महत्या करने को तत्पर रहता है । बुध अशुभ हो और 2, 5 व 12वें भाव में शुक्र, राहु या शनि पापग्रह स्थित हो, तो स्त्री, धन और पारिवारिक सुख नष्ट हो जाये ।

उपाय – केशर का 43 दिन तिलक लगाये । ब्रहस्पति का उपाय करे । चांदी की जंजीर मी की शान्ति के लिये धारण करे ।

बुध का 5 वें भाव का फल

बुध शुभ – जातक प्रसन्न, मुख से निकला वाक्य- ब्रह्म वाक्य, उत्तम होगा । अचानक मुख से निकला वाक्य शुभ होगा । राजा की कीर्ति बढाने वाला, धन और परिवार की वृद्धि हो । शुभ बुध 5वें हो और 11वां भाव रिक्त हो, तो पैतृक सम्पत्ति शुभ, परिवार और सन्तान की स्थिति शुभ होगी ।

बुध अशुभ – बुध 5वें भाव में अशुभ होने पर पिता के लिये अशुभ होगा पर सन्तान हेतु कभी अशुभ न होगा ।

उपाय – गले में ताँबे का पैसा धारण करने से कोष में वृद्धि होगी । गौ पालन करने से संतान, स्त्री और अपना भाग्य उत्तम हो ।

बुध का 6 वें भाव का फल

बुध शुभ – ऐसा जातक माता के गर्भ में आने के समय से ही अपना प्रभाव देने लगेगा । बुध सदैव आज्ञाकारी सेवक की तरह होगा। वाणी से निकले शब्द शुभ होंगे । समुद्री यात्रायें शुभ होंगी । 5वें शुभ बुध होने पर व्यापार, बौद्धिक कार्यों से लाभ । परिश्रम से किये जाने वाले काम से कम लाभ, कृषि से लाभ तथा लेखन से लाभ होगा । बेइमानी न करें, ईमानदारी से लाभ । शनि 9वें या11वें भाव में हो तो स्त्री धनी होगी । गुरु, शुभ हो, तो अखबार, मैग्जीन, लेखन, प्रिंटिग प्रेस और इमानदारी से लाभ होगा ।

बुध अशुभ – बुध 6ठे भाव में अशुभ होने पर नमक-हराम, विश्वासघाती और अशुभ प्रभाव देकर भाग जायेगा । वैद्य का कार्य करते समय लालची न बने । बुध 6ठे भाव अशुभ हो मंगल 4 थे या 8वें हो, तो माता अल्पायु में मर जाये या कष्ट हो । बुध 6 ठे अशुभ हो, गुरु चन्द्र 2रे हो या गुरु11 वें चन्द्र 12वें हो , तो बढापे में अशुभ फल मिले ।

उपाय – बुध अशुभ हो तो दूध की बोतल वीराने मे दबादें । और यदि चन्द्र सहायक हों, तो गंगा जल की बोतल उपजाऊ में दबाना अच्छा होगा । शुक्र अशुभ होने पर यह उपाय अवश्य करें ।स्त्री के बाँये हाथ में चाँदी का छल्ला धारण करना लाभप्रद होगा ।

सप्तम भावस्थ

बुध शुभ – बुध 7वें उसकी कलम तलवार को भी काट दे । बुढापा सदैव अच्छा बीतेगा । बुद्धि चाहे साथ न दे पर धन सदैव सहायता देता रहेगा । दस्तकारी से लाभ, मुकदमों या झगडों से कभी उलझन नहीं होगी । बुध 7वें भाव में शुभ व पहले भाव में कोई ग्रह हो, तो जातक कुटुम्ब का बेडा पार लगाने वाला होगा । बुध 7वें भाव में शुभ व पहले भाव में चन्द्र हो, तो समुद्री यात्रा लाभदायक हो । बुध 7वें भाव में शुभ हो और शनि 3रे भाव में हो, तो स्त्री का कुटुम्ब धनी हो जायेगा ।

बुध अशुभ – बुध सातवें अशुभ होने पर बहन, बुआ, साली या लडकी सब दुःखी होगी । बुध 7वें अशुभ और पहला भाव ग्रह हीन हो, तो बाल्यकाल अशुभ, साहूकारी लाभदायक न हो, भाग्य अशुभ होने पर भी बुढापा ठीक बीते । 34 वर्ष तक शुक्र का फल भी अशुभ होता है ।

उपाय – सट्टा कभी न खेलें ।
बिगडी हुई साली से संबंध कदापि न रखें ।
मोती गले में धारण करने से समुद्री यात्राओं से लाभ एवं शनि का छल्ला मध्यमिका उँगली में धारण करने से स्त्री का कुटुम्ब धनी हो जाये ।

अष्टम भावस्थ

बुध शुभ – यदि 8वें शुभ बुध को पुरुष ग्रह का साथ मिले, तो कदापि अशुभ न होगी और पुरुष ग्रह सदृश शुभ फल होगा । यदि मंगल 12वें भाव में हो, तो बुध का 8वें भाव में अशुभ फल न होगा ।मंगल और बुध 8 वें भाव में अलग-अलग अशुभ देते हैं । परन्तु जब दोनों की युति 8वें भाव में होती है तो दोनों का शुभ फल ही होता है।

बुध अशुभ – बुध 8वें भाव में अशुभ हो, तो साराजीवन परिश्रम से बीते, रोग रहे, हानि हो 32 वें से 34 वें वर्ष में आय आधी रह जाये । बुध अकेला 8वें भाव में शुभ रहेगा । बुध 8वें हो और पुरुष ग्रह 6ठे भाव में हो, तो माता अल्पायु हो या माता पुत्र कष्ट में रहें और मामा भी दःखी रहे । यदि बुध 8वें और राहु भी अशुभ हो, तो जेल तक जाना पडे या अस्पताल, वीराने या घर से बाहर रहना पडे ।

उपाय – मिट्टी के बर्तन में देशी खाँड या शहद से भरकर वीराने में दबा दें । छत पर वर्षा का पानी या दूध रखें या लडकी की नाक में चाँदी का छल्ला पहनायें । बुध अशुभ फल दे रहा हो, तो मंगल की वस्तुयें श्मशान में दबायें ।

नवम भावस्थ बुध फल

बुध शुभ – जातक को चाहे स्वयं भूखा रहना पडे पर कुटुम्ब का पालन अवश्य करेगा । 9वें बुध का रहस्य 11 वें भाव में स्थिर ग्रह से खुलता है । 11वाँ भाव रिक्त हो, तो बुध बेशर्म लडकी की तरह व्यवहार करे । चन्द्रमा 3, 8, 9 या 5 वें भाव में हो, तो बुध के अशुभ प्रभाव से रक्षा अपने आप होती है ।

बुध अशुभ – जातक कोढी, मनहूस, अल्पायु कूप मण्डूक, जलील और अपने जन्म रहस्य न बताने वाला होता है । बुध 9वें और पहला भाव रिक्त हो, तो शरीर कष्ट और रक्त विषैला हो जायेगा या उसमें विकार हो जायेगा । बुध 9वें भाव में हो और गुरु अकेला 8, 6, 10 या 11वें भाव में हो तो अल्पायु सन्तान और स्त्री का फल अशुभ होगा ।बुध 9वें हो और 11वें भाव में चन्द्र व केतु न हों, तो जातक धोखेबाज और बात करते करते हानि पहुँचाकर एक दो तीन हो जाने में माहिर होगा । दिया वचन कभी नहीं पूरा करे ।

उपाय – दरिया के पानी से धुला, पीला कपडा घर में दबायें या चाँदी दबायें, नाक छिदवायें । तोता बकरी न पालें, हरे रंग का प्रयोग न करें तथा फकीर या साधू से कोई ताबीज न लें ।

दशम भावस्थ बुध फल

बुध शुभ – बुध 10वें भाव में शुभ हो, तो जातक प्रसन्न, राज्यप्रिय, व्यवहार कुशल, जीवनयापन ठीक-ठाक, खुशामदी, आज्ञाकारी और शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धनी बन जाता है । वह नीतिवान्, ठेकेदार व शास्त्रज्ञ होता है । जातक शरारती, चतुर, स्वार्थी होने के कारण इसके जाल से कोई भी कठिनता से बच सकता है । बुध 10वें शुभ हो और 1,3,4,5 वें भाव में चन्द्र हो, तो शस्त्र का व्यापारी पुरुषों के लिये शुभ, स्त्रियों व बच्चों के लिये अशुभ होता है । बुध 10वें व 2रा भाव रिक्त हो तो शर्मीला, समुद्री यात्रा से लाभ पाने वाला व बहुमुखी प्रतिभा का धनी होगा ।बुध 10वें शुभ हो और 2रा भाव भी शुभ हो तो सूखा घडा भी मोतियों से भर देगा अर्थात् शुभ फल देगा ।

बुध अशुभ –बुध 10वें अशुभ होने पर जातक शराबी व मांसाहारी होगा । जीभ का स्वाद अशुभता का द्योतक होगा । राहु, केतु, शनि अपनी आयु तक अशुभ होंगे । बुध 10 वें अशुभ और शनि भी अशुभ हो, तो पिता की आयु में सन्देह हो । यदि बुध के साथ-साथ 8वाँ भाव भी अशुभ हो, तो हर प्रकार से दुःखी हो ।

उपाय – शराब, माँस व अण्डे का सेवन न करें । जीभ के स्वाद के चक्कर में अपनी हानि न करें । शनि का उपाय करें ।

11वें भावगत बुध फल

बुध शुभ – बुध 11वें शुभ हो, तो जातक धनी, सर्वगुण सम्पन्न, सन्तान शिक्षित और उनका उच्च कुल में विवाह हो । 34वें वर्ष के बाद हर प्रकार से शुभ होगा । बुध का शुभाशुभ फल गुरु की शुभाशुभता पर निर्भर करेगा । बुध 11वें भाव में शुभ हो और दूसरा भाव रिक्त हो, तो जातक शर्मीला और योग्य होगा ।

बुध अशुभ – बुध अशुभ 11वें हो, तो मूर्खतावश धन-हानि, त्वचा-रोग होगा और समय व्यर्थ बरबाद होगा ।

उपाय – किसी फकीर या साधू से कोई ताबीज लेकर न धारण करें । ताबीज न लेना ही उत्तम है । यदि लेंगे तो बर्बाद हो जायेंगे । गले में ताँबे का पैसा धारण करें ।

11वें भावगत बुध

बुध शुभ – बुध 12वें भाव में शुभ हो और गुरु या शनि 2रे या 12वें भाव में हो या गुरु या शनि 3रे भाव में हो, तो परिवार और धन के लिये अमृत से भरा कुण्ड होगा । बुध 12वें और शनि 2रे या 12वें हो, तो मान-सम्मान और प्रसिद्धि तो होगी परन्तु धन सम्पत्ति की चोरी या हानि या व्यर्थ व्यय व हानि भी होगी । बुध व शनि 2रे या 12वें भाव में एक साथ हो, तो यह स्थिति विष से भरे हुए के लिये भी अमृत सदृश होगी जो मृत को भी जीवित कर देगी ।

बुध अशुभ – बुध 12वें भाव में अशुभ हो तो स्वार्थ के लिये कही हुई बात को झूठ कहे, झूठ बोलने में माहिर होता है । आलसी और झूठे आश्वासन देते रहना उसकी आदत होती है ।राहु 2रे भाव में और बुध 12वें भाव में हो, तो अशुभ, मृत्यु या दुर्घटना से कष्ट होता है ।सूर्य 6ठे व बुध 12वें आजीविका के साथ-साथ राजकीय संबंध बिगडे । चन्द्र 6ठे और बुध 12वें माता अभागी हो और आत्महत्या तक नौबत आ जाये । शनि 6ठे और बुध 12वें भाव में हो, तो व्यापार और संबंधी सभी कुछ अशुभ हो । बुध 12वें और राहु 8वें हो तो जेल या पागल खाने जाने की नौबत आ जाये । यह स्थिति बनने के लिये आवश्यक नहीं है कि जातक अपराधी या रोगी हो । बुध 12वें और द्वितीय भाव रिक्त हो, तो जातक जल्दबाज और अल्पबुद्धि हो । बुध 12वें और राहु या केतु छठे भाव में हो, तो दुःखी जीवन अशुभता और बाधाओं से सदैव परेशान रहना पडे ।

उपाय – वाक् (जुबान) को काबू रखें । झूठे वायदे करने की अपेक्षा वायदा देकर पूरा करें ।
मस्तक पर केसर का तिलक 43 दिन तक लगायें ।
नाक छिदवायें । खाली घडा बहते पानी में बहायें ।
पीला धागा हर समय गले में पहने रखें ।
काला-सफेद कुत्ता पालें । गणेश जी की पूजा करें ।

गुरु पहले भाव में शुभ स्थिति में हो, तो –

1. विद्या हो या न हो धनी अवश्य बनायेगा । जातक अपने व्यवहार, धार्मिकता व दयालुता से निरन्तर उन्नति करे । भाग्य 51 वर्ष तक साथ दे । चन्द्रमा की वस्तुयें व सम्बन्धी सहायक बने । केतु व शुक्र की वस्तुयें भी शुभ हों । राजकार्य, मुकदमें या वाद-विवाद संबंधी निर्णय सूर्य की वस्तुओं या संबंधियों से प्रभावित हो । शरीर स्वस्थ हो ।
2. पहले गुरु शुभ हो और सातवें भाव में कोई भी ग्रह(शत्रु या मित्र) हो, जातक उच्च शिक्षा अवश्य प्राप्त करेगा । यदि बुध भी शुभ है, तो विभिन्न विद्याओं में प्रवीण होगा और राजा सदृश उत्तम प्रशासक होगा ।
3. गुरु पहले भाव में शुभ हो एवं केतु भी शुभ हो, तो 4, 8 या 11वें वर्ष से माता-पिता की ओर से सुख मिले । 25वें वर्ष तक भाग्य का सितारा बुलन्द रहे ।
4. गुरु पहले भाव में शुभ हो और चन्द्रमा भी शुभ हो, तो भला करने वाला, वर्ष दर वर्ष सुख बढे उत्तम राजा या प्रशासक होते हुए भी जीवन सन्यासी सदृश व्यतीत हो ।
5. गुरु पहले भाव में शुभ हो और ग्यारहवाँ भाव शुभ हो, तो स्वअर्जित धन से पीली वस्तुयें अधिक क्रय हों ।
6. गुरु पहले भाव व 1, 2, 4 में सूर्य, चन्द्र व मंगल हों, तो राजकोष से कमाया एक पैसा भी स्वर्ण सदृश वृद्धि देगा ।

7. गुरु पहले भाव में व मंगल सातवें हो, तो जातक विस्तृत सम्पत्ति का स्वामी होगा ।
8. गुरु पहले व सूर्य 7वें भाव में हो, तो जातक व उसके कुल की आयु इच्छानुसार होगी ।

गुरु पहले भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु पहले भाव में अशुभ हो और बुध अशुभ या 2, 5, 9, 12वें भाव में गुरु के शत्रु ग्रह हो, तो जातक अनपढ होते हुए भी चमत्कारिक फकीर होगा । परिवार में कोई भी उच्च शिक्षा न प्राप्त कर सके ।
2. अशुभ गुरु पहले भाव में एवं शनि पांचवें हो, तो सन्तान व स्वास्थ ठीक न हो । अपने बनाये स्थानों में पाप बढ जाने से दुःख मिले ।
3. अशुभ गुरु पहले व शनि नौवें हो वे जातक का स्वास्थ्य बिगड जाए । गुरु पहले व आठवें राहु हो, तो पिता की मृत्यु दमा या हार्ट अटैक से हो । 42वें वर्ष में नेत्र, मस्तिष्क या टांगों का रोग हो जाए ।
4. गुरु पहले और सूर्य व बुध की युति 11वें या अशुभ भावों में हो, तो मुकदमें या गुप्त उलझनों के लिये धन हानि हो और सांसारिक कार्यों में अशुभ फल मिले ।
5. कार्यों में अशुभ फल ही मिले ।
6. गुरु पहले और शनि अशुभ भाव में सूर्य, चन्द्र या मंगल के साथ हो तो अपनी संतान दुःखी हो या दुःख का कारण बन जाए ।

उपाय -

1. भूमि में मंगल की वस्तुएँ दबायें ।
2. चन्द्रमा को स्थापित करें या उपाय करें ।
3. राजकोष से प्राप्त धन में से कुछ भाग तिजोरी में रखना कोष वृद्धिकारक हो ।

गुरु दूसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु दूसरे भाव में शुभ हो, तो धन दान से बढे । यदि रात्रि की सेवा करें, तो धन की वृद्धि और अधिक हो 27वें वर्ष में राजकोष या राज्य से लाभ हो । धर्म गुरु और पिता के धन को बढाने वाला होता है । गृहस्थी होते हुए भी ज्ञानी, गुरु या मसीहा होगा । धन जितनी तेजी से आता है उतनी ही तेजी से खर्च भी हो जाता है । सर्वत्र यश व मान बढे । मिट्टी और स्त्रियों की वस्तुओं के कार्य लाभदायक होंगे । स्वर्ण संबंधी कार्य अर्थात् सर्राफ, जौहरी व सुनार बनना हानिकारक है । सूर्य निर्बल या निर्धन परिवार में जन्म लेने के बाद भी 16 से 32 वर्ष की आयु तक धन अर्जित कर संग्रह करेगा ।
2. गुरु दूसरे भाव में शनि से युत हो, तो विद्वान् होगा । विद्याहीन या विद्यावान् होने पर भी भाग्य का सूर्य चमकता रहेगा ।
3. गुरु दूसरे भाव में और शनि 12वें भाव में हो, तो जातक सुखी, वीर और लोकप्रिय हो ।
4. गुरु दूसरे भाव में और राहु शुभ हो, तो जातक राजा सदृश, प्रसिद्ध और दाता होता है । उसके पास सांसारिक सुख भरपूर हो सर्वत्र सम्मानित और शुभ भले कार्य करने में तत्पर रहता है ।

गुरु दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु दूसरे भाव में और केतु छठे भाव में हो, तो जातक को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो जाता है ।
2. गुरु दूसरे भाव में और आठवें भाव में चन्द्र व मंगल की युति हो, तो जातक कुटुम्ब को नष्ट करने वाला होता है । ऐसा जातक जहाँ भी जाए दुर्भाग्य का वास हो जाए पर स्वयं (जातक) को हानि न हो ।

3. गुरु दूसरे, शनि 10वें और बुध 8वें हो, तो धन हानि, अस्वस्थ व जेल जाना पडे ।
4. गुरु दूसरे और बुध 7वें हो, तो जातक ईष्यालु हो ।

उपाय -

1. गुरु की वस्तुयें पीले कपडे में बाँधकर मंदिर में दे आयें ।
2. अतिथियों का अपमान न कर उनका स्वागत करें ।
3. साँप को दूध पिलायें ।
4. गुरु की वस्तुयें स्थापित करें या गुरु का उपाय करें ।

गुरु तीसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. जातक धनी, वीर, विद्वान्, नौकरी के द्वारा राज कोष से धन दीर्घायु तक मिलता रहे। यह सब तब तक होगा जब तक दुर्गा पूजा या कन्याओं की सेवा करता रहे। यदि ऐसा नहीं करेगा, तो तीसरे या 7वें बुध का फल अशुभ होगा ।
2. गुरु तीसरे और शनि 9वें भाव में हो, तो जातक दीर्घायु होता है ।
3. गुरु तीसरे और शनि शुभ हो तो जातक धनी होता है ।
4. गुरु तीसरे व बुध सातवें होने पर जातक साहसी होता है ।
5. गुरु तीसरे, मंगल दूसरे व शनि 9वें हो, तो जातक सुखी व दूसरों का भला करने वाला होता है ।

गुरु तीसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु तीसरे भाव में हो, तो जातक कायर व दुर्भाग्यशाली हो ।
2. गुरु तीसरे व शनि चौथे भाव में हो जो जातक का मित्र उसे लूटकर स्वयं धनी हो जाए ।
3. गुरु तीसरे व चन्द्र 12वें भाव में हो, तो निज प्रशंसा सुनकर अपनी हानि या अहित करे ।
4. गुरु तीसरे भाव में, शनि चौथे भाव में और बुध अशुभ हो, तो जातक दूसरों को लूटकर धनी बने, विश्वासघाती व नास्तिक हो । उसके सम्बन्धी (विशेषकर संतान और मामा 31वें वर्ष में अवश्य दुःखी हों) दुःखी रहें । वह झगडालू, शरारती, कायर हो तथा शरीर से दुर्गन्ध आए ।

उपाय -

1. दुर्गा पूजा करें ।
2. कन्याओं की पूजा सदैव शुभ रहे ।

चौथे भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय -

गुरु चौथे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. यदि चौथे भाव में गुरु शुभ हो तो धार्मिक दूसरों की सहायता करने वाला, दूरदर्शी, दीर्घायु, सम्मनित, हर धर्म मानने वाला, लडाई-झगडों से दूर, संतुष्ट, राजा-सदृश, धनी, लाखों में एक, भाग्यशाली, आद्यात्मिक शक्ति से युक्त, दयालु, चरित्रवान् और सर्वप्रकार से सुखी हो।
2. गुरु चौथे भाव में हो, चन्द्र पहले और शनि दसवें, तो सभी प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त हो । गुरु चौथे और सूर्य या मंगल शुभ हो तो पिता उच्च सरकारी अधिकारी हो या जातक के जन्म होने पर हो जाए परन्तु यह आवश्यक नहीं कि जातक भी भाग्यशाली हो।
3. गुरु चौथे में हो और केतु शुभ हो तो अपनी या किसी की भी विद्या पर किया गया धन का व्यय ब्याज सहित वापस हो जाएगा । चरित्र ठीक रहेगा और दीर्घायु होगा ।

4. गुरु चौथे भाव में हो और बुध शुभ या सूर्य दसवें भाव में हो, तो जातक विद्यावान्, ब्रह्मज्ञानी, योग्य, प्रसिद्ध और राजकोष से धन लाभ हो ।
5. गुरु चौथे और शनि 2, 9 या 10वें भाव में हो, तो जातक प्रसिद्ध, सबका भला करने वाला, अच्छा और सर्व प्रकार का आराम पाने वाला होता है ।
6. गुरु चौथे और शनि दूसरे हो, तो अत्यन्त चतुर हो ।
7. गुरु चौथे और चन्द्र 10वें हो तो सरकारी यात्रायें लाभदायक हों ।

गुरु चौथे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु चौथे हो और केतु अशुभ हो तो जातक राजा होकर भी भिखारी हो जाएगा या दुःख आने पर भयभीत होकर वन में चला जायेगा ।
2. गुरु चौथे और राहु अशुभ हो, तो जातक चन्द्रमा की वस्तुओं का फल अशुभ मिले ।
3. गुरु चौथे और शुक्र, बुध, राहु या शनि 10वें भाव में हो, तो धनहानि हो।
4. गुरु चौथे और बुध 10वें भाव में हो, तो जातक निकम्मा, अपनी नैय्या स्वयं डुबाने वाला और माता के गर्भ में आते ही कुल का नाश कर दे । बडों की आज्ञा मानने से बेडा पार लगे । 11, 23 34, 48, 55, 71, 75, 85, 97, एवं 111वें वर्ष में वर्ष कुण्डली में बुध 10वें होने से इन वर्षों में बर्बादी करेगा । 34वें वर्ष के बाद हवाई किले बनाना अपना और अपने कुल की बर्बादी को बढाना होगा ।

उपाय -

1. बडों की आज्ञा सदैव मानें और उनका अपमान न करें ।
2. माँस और शराब का सेवन न करें, परायी स्त्री से यौन संबंध न बनायें ।

पांचवें भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय -

गुरु पाँचवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु पाँचवें शुभ होने पर जातक मान-सम्मान युक्त, ब्रहज्ञानी, क्रोधी और उसमें मनुष्यता के गुण विद्यमान हों ।
2. गुरु पाँचवें और राहु शुभ हो तो जातक सेना में उच्च अधिकारी होगा और अनेक लोग उसकी छत्रछाया में सुखी होंगे तथा उसकी सन्तान के लिए प्रार्थना करेंगे ।
3. गुरु पाँचवें और सूर्य, चन्द्र, मंगल 7वें भाव में हो, तो धन सन्तान और कुल में वृद्धि
4. हो । यदि गुरुवार को सन्तान हो तो सभी दुःख दूर हो जायेंगे ।

गुरु पाँचवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु पाँचवें और केतु 11वें हो, तो यदि धर्म के नाम पर माँगकर या दान लेकर खाने पर निःसंतान होगा और कफन के बिना मरने का पहला संकेत होगा । संतान मरी हुई उत्पन्न होगी । केतु अशुभ होने पर भी संतान सुख नहीं होगा ।
2. गुरु पाँचवें और राहु 9वें हो तो गुरु मौन रहेगा । राहु अशुभ होने पर भीख माँगने वाला साधु, अशुभता और सर्वप्रकार से तंगी हो ।

उपाय -

1. गणेश उपासना करें ।
2. केतु का उपाय करें ।

3. शराब, माँस व परस्त्री गमन से दूर रहने पर गुरु का शुभ फल प्राप्त हो ।

छठे भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय -

गुरु छठें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. जातक साधु-स्वभाव का होता है । प्रत्येक वस्तु बिना माँगे मिले । दोहता व भाँजे के उत्पन्न होने पर भाग्य प्रभावित हो । बडों के नाम पर दान लेना भाग्य वृद्धि का संकेत होगा। पिता जब तक रहेगा दानी धनी और सुखी होगा । जातक काम करने में रुचि नहीं रखेगा क्योंकि उसकी उदरपूर्ति अपने आप होती रहेगी । वह साधु या फकीर भी हो सकता है ।
2. गुरु छठें और केतु शुभ हो, तो जातक प्रसन्न और चरित्र उत्तम होने पर मामा और संबंधी भी प्रसन्न हों परन्तु मामा 40 वर्ष तक अर्थहीन होंगे ।

गुरु छठे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु छठें हो और बुध अशुभ हो, तो 34वें वर्ष तक भाग्यहीन होगा ।
2. गुरु छठें हो और केतु अशुभ हो तो कटोरा लेकर भीख माँगनी पडेगी ।
3. गुरु छठें और बुध 12वें हो, तो पिता और धन दोनों नष्ट हो जाएँ । यह फल 16 वर्ष की अवधि में भी मिल सकता है ।

उपाय -

1. बडों के नाम सदैव दान-पुण्य करते रहें ।
2. केतु का उपाय करें ।
3. कुत्ते को मीठी रोटी डालें ।
4. गणेश की उपासना करें ।
5. पीपले के वृक्ष को पानी दें ।

सातवें भाव में गुरु का फल एवं उपाय -

गुरु सातवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. जातक धर्म कार्य में संलग्न रहेगा। धर्म का झंडा हर समय हाथ में रहेगा । सातवें भाव का शुभ फल चन्द्र की शुभाशुभ स्थिति पर निर्भर होगा । यात्रा से जीवन सुखी होगा और यात्रा में मृत्यु नहीं होगी । मृत्यु घर में ही होगी । अतः परदेश में धन और सम्पत्ति के लिये भाग-दौड करना व्यर्थ है । यदि परदेश में मृत्यु हो जाए, तो भी अन्तिम क्रिया पैतृक घर में ही होगा । विवाह के बाद भाग्यवृद्धि होगी । जातक संतान हीन व ऋणयुक्त नहीं मरेगा। संतान की उत्पत्ति के बाद 34 वर्ष तक समस्त दुःख दूर हो जायेंगे ।
2. गुरु सातवें हो और 1, 2, 5, 9, 12वें गुरु के मित्र ग्रह हो तो धर्म कार्यों में प्रसिद्ध हो ।
3. गुरु सातवें और केतु शुभ हो, तो जातक तपस्वी, पूजापाठ करने वाला होगा । यह आवश्यक नहीं कि वह धनी भी हो ।
4. गुरु सातवें और सूर्य पहले भाव में हो, तो जातक ज्योतिष व संसार के रहस्य का ज्ञाता, सुखी व आराम पसंद होगा । यह आवश्यक नहीं कि धनी भी हो ।

गुरु सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु सातवें हो और शनि 9वें हो तो जातक डाकू या चोर होगा ।
2. गुरु सातवें हो और बुध 9वें हो या बुध इसके विपरीत 7वें हो और गुरु 9वें हो तो वैवाहिक गडबड या पारिवारिक जीवन सुखमय न हो ।
3. गुरु सातवें हो और शनि या बुध 2, 6, 12वें हो तो जातक पुत्र के लिए तरसता रहे । 45वें पुत्र उत्पन्न हो जो उसे बर्बाद कर दे । दत्तक पुत्र भी दुःखी हो ।
4. गुरु सातवें हो और शनि या बुध 4थे या 11वें हो, तो जातक तोतलाए, आयु और भाग्य से निर्बल हो ।
5. गुरु सातवें हो व पहला भाव रिक्त हो तो जातक दूजों को चाहे जितना धन बाँट दे पर अपने पेट के लिये स्वयं परिश्रम करना पडे ।

उपाय -

1. शिव उपासना करें ।
2. चन्द्र का उपाय करें ।
3. रत्तियाँ जो सोना तोलने के काम आती हो पीले कपडे में बाँधकर या सोने के साथ रख देने से लाभ होगा ।

आठवें भाव में गुरु का फल एवं उपाय -

गुरु आठवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु आठवें में हो और बुध 9वें भाव में हो तो कुटुम्ब दीर्घायु होगा । विशेषकर अपनी और पिता की दीर्घायु होने पर ठेकेदार होगा।
2. गुरु आठवें में हो और चन्द्र के साथ-साथ 2, 5, 9, 12वां भाव शुभ हो तो जातक में रहस्य खोलने का साहस हो स्वर्ण भण्डार का स्वामी (धनी) और दीर्घायु होगा।
3. गुरु आठवें में हो और दूसरा व चौथा भाव शुभ हो तो भाग्य कंगाल या सिर धड से अलग हो जाने के आद भी साथ देगा । स्वास्थ्य, धन और परिवार दुःखी न होगा ।

गुरु आठवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु आठवें और मंगल चौथे हो, तो जातक दरिद्र और डरपोक होता है ।
2. गुरु आठवें 9वें भाव में बुध हो, तो जातक को जंगल में मंगल का अनुभव हो ।
3. गुरु आठवें और शनि या मंगल चौथे व सातवें हो तो सब कुछ नष्ट कर देगा । यहाँ तक कि सांसारिक हवा को रक्त युक्त आँधी में बदल देगा।
4. आठवें भाव में गुरु हो और सूर्य अशुभ हो तो जातक भाग्यहीन होगा।
5. गुरु आठवें अशुभ हो एवं केतु भी अशुभ हो तो जातक तंगदिल, निर्धन, रोगी और बेबात मुसीबत खडी कर ले ।
6. गुरु आठवें हो और राहु अशुभ हो तो जातक जीवन को बोझ की तरह ढोकर एक प्रक्रिया मात्र पूर्ण करे ।
7. गुरु आठवें हो और शनि बली हो, तो जातक स्वतन्त्र विचारों वाला दृढनिश्चयी, उन्नतशील उत्साही और सबसे अलग हो।

उपाय -

1. समय खराब हो तो गुरु व शुक्र की वस्तुयें मंदिर में देने से स्थिति में सुधार हो।
2. फकीर या साधू को दान देते रहें ।

3. कहीं पर कोई मरने वाला हो तो वहाँ से हट जायें तो उसके प्राण नहीं निकलेंगे ।

नौवें भाव में गुरु का फल एवं उपाय -

गुरु नौवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. जातक भाग्यवान, वचन का पक्का, भाग्य धर्म और पैतृक सहायता से बढे । आयु के साथ-साथ योगी व ब्रह्मज्ञानी हो जाए । आयु अल्पतम 75 वर्ष की हो । जन्म के समय उसके बुजुर्ग विस्तृत धन-सम्पत्ति के स्वामी होंगे । चरित्रवान् और वैद्यकशास्त्र का ज्ञान रखना होगा। परिश्रम से धनी होगा । शराब न पीएगा और परहेज रखने वाला होगा । सर्राफ, सुनार या जौहरी होगा और अपनी योग्यता के कारण लोकप्रिय होगा । तीर्थयात्रा करने वाला, ज्योतिषी और धर्मात्मा होगा। जीवन में धन की कमी नहीं होगी । सिद्धपुरुष होगा।
2. गुरु 9वें और बुध चौथे या पाँचवें हो, तो राजा होकर भी योगी होगा।
3. गुरु 9वें और सूर्य शुभ हो तो स्वस्थ, सफल और धार्मिक होगा।
4. गुरु 9वें और शनि 5वें हो तो भाग्य वृद्धि के साथ-साथ धनी हो जाए परन्तु सन्तान की दृष्टि से अशुभ फल हो । 33 से 39 या 13से 18 वें वर्ष में यह फल मिलें ।
5. गुरु 9वें हो और बुध चौथे हो तो राजयोग घटित हो ।
6. गुरु 9वें हो और शनि 5वें हो तो संतान सुख अल्प हो और 36 वें वर्ष से धन से प्राप्त हो ।

गुरु नवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. गुरु 9 वें अशुभ हो, तो जातक निर्धन, नास्तिक और धर्म विरोधी हो जाये ।
2. गुरु 9 वें अशुभ हो, और पहला भाव रिक्त हो, तो अस्वस्थ और हृदय रोग हो ।
3. गुरु 9 वें हो और तीसरा व पांचवां भाव रिक्त हो, तो निज भाग्य वृद्धि के लिए कठोर श्रम करना पडे ।
4. गुरु नवें हों और बुध अशुभ हो, तो अल्प आयु, दुर्भाग्यशाली और मंगल का कुप्रभाव हो ।

उपाय-

1. प्रतिदिन देव दर्शन के लिये मंदिर जायें ।
2. शराब न पियें ।
3. बुध की वस्तुएं बहते पानी में बहायें या विद्यालय या पाठशाला में दान दें ।

दसवें भाव में स्थित गुरु का फल व उपाय -

गुरु दसवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. गुरु दसवें भाव में शुभ हो, तो जातक अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होगा । यदि जातक नैतिकता व धर्म पर चले, तो निर्धन दुखी और निराश हो । उसकी चतुरता ही उसे साधन सम्पन्न बनाये ।
2. गुरु दसवें और मंगल या शुक्र चौथे भाव में हो, तो मिट्टी भी सोना दे, अपना प्रेम छिपाकर न रखें । स्त्रियां चाहे कितनी हो पर अपनी बनाकर रखने पर अशुभ फल न मिले ।
3. गुरु दसवें हो और शनि दूसरे भाव में हो, तो घर में पूर्णतः वृद्धि होगी ।
4. गुरु दसवें हो और सूर्य तीसरे या पांचवें हो और शनि नवें हों, तो सोने चांदी के कार्य से लाभ हो पर शनि के कार्य करते रहने पर हानि व अग्निभय हो ।
5. गुरु दसवें हो और सूर्य या चन्द्र दूसरे भाव में हो, तो राजकार्य से लाभ हो ।
6. गुरु दसवें हो और सूर्य पहले, चौथे या पांचवें हो, तो बाप पर कुप्रभाव न होकर दादा पर होगा ।

7. गुरु दसवें हो और बुध भी शुभ हो, तो पुत्र हो, तांबा, सोना हो जाये । जातक प्रसन्न व उत्तरदायित्व निभाने वाला होगा ।
8. गुरु दसवें व सूर्य पांचवें हो, तो विवाह एक से अधिक करे ।
9. गुरु दसवें स्थित होकर शनि और सूर्य से दृष्ट हो, तो कई बार अग्नि कांड हो ।
10. गुरु दसवें हो और चन्द्र चौथे भाव में हो, तो स्वर्ण, चांदी, कपडा आदि के कार्य से लाभ हो । राज्य से भी लाभ हो । भिखारी को अपने हाथ से भिक्षा न दें ।
11. गुरु दसवें और चन्द्रमा दसवें हो, तो शनि के कार्यो से लाभ हो ।

गुरु दसवें भाव में अशुभ की स्थिति में हो तो -

1. गुरु दसवें व बुध चौथे हो, तो जातक की स्थिति खराब हो ।
2. गुरु दसवें व शनि चौथे, पहले या दसवें हो, सतो जातक दुष्ट हो , अभाव व रोटी को तरसे ।
3. गुरु दसवें और शनि 1, 4 या 10 वें हो, तो अच्छा कार्य या भला करने करने पर भी दण्ड या कष्ट पाये ।

उपाय -

1. नाक साफ करके कोई कार्य शुरू करें ।
2. सिर ढक कर रखें । यदि पगडी बांधते हैं तो उस पर पीले केसर का तिलक लगायें ।
3. तांबे का सिक्का 40-43 दिन तक बहते पानी में बहाये । इससे पिता की स्थिति में भी सुधार होगा ।
4. मस्तक पर 43 दिन तक पीले केसर का तिलक लगायें ।
5. केतु या गुरु का उपाय करना स्थिति को सुधारे ।

ग्यारहवें भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय -

गुरु ग्यारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. जातक सर्वगुण सम्पन्न, दयालु, धार्मिक, परिवार में एक होकर कार्य करते रहने पर प्रसन्नता से जीवन निर्वाह हो । पिता धनी होते हुए भी मरते समय पुत्र के लिये कुछ न छोडे । दिये वचन पूर्ण करने से स्थिति और अच्छी रहेगी । कफन दान करने से घर से बाहर बिना कफन के कभी न मरे । परिवार से अलग रहने पर स्थिति खराब हो जाये और वह निर्धन हो जाये । भाई के साथ रहने पर उन्नति और लाभ हो ।
2. गुरु ग्यारहवें भाव में हो और बुध शुभ हो, तो जातक धनी और भाग्य का निर्माता स्वयं हो ।
3. गुरु ग्यारहवें हो और शनि शुभ हो, तो पिता की सहायता के बिना भी प्रसन्नता से जीवन यापन करे और धनी हो ।
4. गुरु ग्यारहवें और मंगल तीसरे हो, तो स्वयं व ससुराल के लिये धन सम्पत्ति के मामले मे ठीक हो परंतु अपनों की मृत्यु से दुखी हो ।
5. गुरु ग्यारहवें भाव में शनि के साथ हो, दोनों (गुरु व शनि) का फल उत्तम हो ।

गुरु ग्यारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. अधार्मिक, बहन व बुआ की दृष्टि से अशुभ फल, पिता की मृत्यु के बाद स्थिति अधिक खराब, चरित्रहीन या चाल चलन गंदा होने पर और अशुभ फल मिले, परिवार बडा होने पर भी मरने पर कफन पराया ही मिले ।

2. गुरु अशुभ ग्यारहवें हो और चन्द्रमा पहले भाव में हो, तो उसकी तबाही ईर्ष्या के कारण होगी, सबकुछ बिक जायेगा ।
3. गुरु ग्यारहवें और बुध तीसरे हो, तो अच्छी आय होते हुए भी दुखी हो ।
4. गुरु ग्यारहवें अशुभ हो और बुध अशुभ हो, तो जातक राजा होने पर भी धर्म को बेच दे, स्वयं की स्थिति अच्छी हो पर किसी को लाभ न होने दे ।
5. गुरु ग्यारहवें अशुभ हो और तीसरा भाव स्थित हो, तो जातक भाग्यवान, लम्बा, दयालु व धर्मात्मा हो ।

उपाय -

1. कफन का दान करें । जब किसी की मृत्यु हो, तो प्रयास करें कि कफन दान में दें अर्थात् कफन दान में देने का अवसर न गंवायें ।
2. शनि का उपाय करें या उसे स्थापित करें ।
3. धार्मिक बनें ।
4. शराब न पीयें व मांस न खायें ।

बारहवें भाव में स्थित गुरु का फल एवं उपाय -

गुरु बारहवें भाव में शुभ हो तो -

1. जातक बुरे का भला करने वाला, ज्ञानी और वैरागी होता है । भाग्योदय, योग, तप, पाठपूजा आदि से होगा । आशीष देने या भला करने से लाभ हो । बुरा करने व श्राप देने से हानि हो ।
2. गुरु बारहवें और शनि का साथ चौथे व नवें भाव में हो, तो जातक शनि के कार्यो से लाभ व आराम पाये ।
3. गुरु बारहवें हो और केतु शुभ हो, तो सन्तान का सुख अत्यन्त धनी हो ।

गुरु बारहवें भाव में अशुभ हो तो -

1. खर्चीला, 10 वें वर्ष में पिता को कष्ट, अधार्मिक और अशुभ फल हो ।
2. गुरु 12 वें अशुभ हो और बुध भी अशुभ हो तो जातक दीर्घायु हो पर दूसरों के लिये मनहूस हो ।
3. गुरु 12 वें भाव में हो और 2, 8,9,10 वां भाव रिक्त हो, तो राजा होकर भी लाभ न कमाये, अत्यन्त फकीर हो जाये ।
4. गुरु 12 वें भाव में हो और राहु 9 या 12 वें हो, तो बुद्धिमान हो विद्या काम न आये । किये कार्य का लाभ न दें, विचार धर्म नष्ट न हो जाये, अपव्ययी व पिता को 42 वें वर्ष तक कष्ट हो ।
5. गुरु अशुभ हो तो जातक स्वयं भाग्यवादी हो । पर सन्तान को कष्ट व बाधायें मिले । चन्द्र के कार्य फलीभूत न हो ।

उपाय -

1. प्रतिदिन माथे पर केसर का तिलक लगाये ।
2. सिर पर चोटी रखें और सिर को ढक कर रखने का प्रयास करें ।
3. गले में माला कभी न धारण करें ।
4. गुरु व साधु का अपमान न करें ।
5. पीपल का पेड कभी न कटवायें ।

पहले भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र पहले भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. शुक्र पहले हो व शनि शुभ हो, तो स्त्री आजीविका शुरू करने से पूर्व आयेगी अर्थात् विवाह नौकरी से पूर्व हो जायेगा और स्त्री गृह स्वामिनी बन कर हर प्रकार से शासन करेगी ।
2. शुक्र पहले व मंगल 6, 7 या 12 वें हो, तो जातक शतायु हो और पुत्र व पौत्र का सुख देखे ।
3. शुक्र का सूर्य से सम्बन्ध बने, तो सन्तान व आराम में थोडा सुख कम हो, धर्महीन, स्त्रियों की पीछे घूमने वाला बाहर से दीवाना व अन्तः से सूफी हो । स्त्री का स्वास्थ्य ठीक न रहे । भाग्यवान, अपना व बच्चों का स्वास्थ्य उत्तम हो । निज कार्यो के लिये दूजों की सलाह लेना ठीक है ।

शुक्र पहले भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. युवावस्था व दीवानापन अपनी और संबंधियों की बर्बादी का बहाना होगा। माता अल्पायु, माता पत्नी से दूर रहने पर सुखी पर एक साथ रहने पर दुःखी हो, सूर्य कभी अशुभ न हो ।
2. अशुभ शुक्र 1व 7वें और 10वाँ भाव रिक्त हो, तो 25वें वर्ष विवाह के समय न धन रहे और न स्त्री रहे ।
3. शुक्र पहले भाव में अशुभ हो व बुध भी अशुभ हो, तो संतान सुख अल्प हो ।
4. शुक्र पहले अशुभ हो व सूर्य भी अशुभ हो तो गृहस्थ सुख न हो तो न के बराबर ।
5. शुक्र पहले भाव में अशुभ हो और बुध,सूर्य व शनि तीनें अशुभ हो तो ऐसा भाग्य हो कि स्वयं तो बर्बाद हो ही अपितु दूजों को भी बर्बाद करे और चहुँ ओर मौतें ही दिखे ।
6. शुक्र पहले अशुभ हो, 1व 7वें में शत्रु ग्रह चन्द्र, राहु, सूर्य व बुध अशुभ हो तो दीवाना दमा तपेदिक बुखार के समय स्त्री भोग या परस्त्री से संबंध करने पर रोग हो । गोमूत्र व जो की खुराक सहायक होगी । चारा या सात अनाज (सतनाजा) का दान शुभ हो । पुरुष कन्यादान व स्त्री गोदान करें तो भी शुभ हो ।
7. शुक्र पहले अशुभ हो शनि भी अशुभ हो तो साथ व संबंधियों से अच्छे संबंध न होंगे, स्वयं एय्याश, स्त्री सुन्दर, प्रेम व माया मोह से परिपूर्ण व आराम व विलासिता पसंद करने वाली होगी ।
8. शुक्र पहले 25वें वर्ष का विवाह, धन और स्त्री के लिए बुरा हो, सूर्य अशुभ हो तो जिन्न भूतादि तंग करें व आध्यात्मिक हानि हो । स्त्री से प्रेम व आँख-मिचौली अधिक होती है ।

उपाय -

1. दूसरों की सलाह अवश्य लें ।
2. गुड न खायें ।
3. दही से स्नान करें ।

दूसरे भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र दूसरे भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. दूजों के साथ की गई बुराई अपने निए हानिकारक होगी । आजीविका, धन, सम्पत्ति व सन्तान में 60 वर्ष तक वृद्धि हो । दीर्घायु व शत्रु दबे रहें । स्त्री उत्तम, पर सन्तान उत्पन्न करने के योग्य न हो । चाल चलन सुधारने पर शुभ फल मिलेंगे और बाधायें दूर होंगी ।
2. शुक्र दूसरे हो और शनि कुण्डली में कहीं भी हो वह शुक्र के लिए 8वें भाव का शुभ फल देगा, अब चाहे शनि जहाँ हो वहाँ का फल अशुभ ही क्यों न हो । गृहस्थ सुख ठीक हो ।

3. गुरु, केतु, शनि और बुध का शुभ फल होगा । घर राजा सदृश और आर्थिक स्थिति सुदृढ हो । घर का अगला भाग तंग और पिछला भाग खुला हो अर्थात् गाय के मुख की तरह हो भाई व लडके का भाग्य और दूजों से संबंध गुरु की स्थिति पर निर्भर करेगा ।
4. शुक्र दूसरे व गुरु भी दूसरे हो तो भाइयों की उन्नति होगी व सांसारिक सहायता भी प्राप्त हो ।
5. शुक्र दूसरे व गुरु भी दूसरे हो तो प्रेम करने में प्रवीण और इसमें सफल भी होगा ।
6. शुक्र दूसरे व शनि दो व 9वें हो तो शुक्र का शुभफल दुगुना हो । पशु पालने व कच्ची मिट्टी के कार्यों से आजीविका के साधन व सन्तान में वृद्धि हो । आजीविका प्रारंभ करने के दिन से साठ वर्ष तक धन के लिए शुभ हो ।

शुक्र दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. स्त्री की कुण्डली में दूसरे अशुभ शुक्र है तो वह लडका न उत्पन्न कर सके । पुरुष की कुण्डली में दूसरे शुक्र हो तो उसकी स्त्री बांझ होगी अर्थात् सन्तान उत्पन्न करने की क्षमता नहीं होगी ।
2. शुक्र दूसरे अशुभ हो और नौ व बारहवाँ भाव अशुभ हो तो धन चाहे जितना हो स्त्री से दुःखी हो ।
3. शुक्र दूसरे अशुभ हो और साथ में पापी ग्रह हो तो दूजे का लडका बिना गोद लिए अपना लडका बन बैठे ।
4. शुक्र दूसरे अशुभ और 8वाँ भाव रिक्त हो तो बांझ, धन घटे व स्त्री-पुरुष संतान उत्पन्न करने मं असमर्थ, सलीके से रहने वाले व एय्याश होंगे ।
5. दूसरे अशुभ शुक्र एवं आठ, नौ या दसवें गुरु हो तो विवाह व संतान सुख में गडबड हो स्त्री धन अर्जित करने वाली हो, पर कन्या रत्न उत्पन्न करे और चाल-चलन खराब हो, तो पारिवारिक सुख न मिले ।
6. अशुभ शुक्र व पाँच, दो, नौ, बारहवें राहु केतु हो तो बाजारू स्त्री या वेश्या बर्बादी का बहाना होगी और परस्त्री गमन में सर्वप्रकार से अशुभ ही हो ।

उपाय -

1. मंगल की वस्तुयें प्रयोग करें, सहायक होगी । ये वस्तुयें दवा रूप में प्रयोग करें तभी सन्तान सुख संभव हो सकेगा ।
2. दो किलो आलू हल्दी से पीने करके गाय को खिलायें ।
3. दो सौ ग्राम गाय का पीला घी मंदिर में दें ।

तीसरे भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र तीसरे भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. स्त्री आकर्षित हो जाए । अनेक स्त्रियों से सम्पर्क बने । परस्त्री के आकर्षण में फँसने के कारण अपनी स्त्री से दबकर रहे । परस्त्री और पुरुषों से सहायता मिले । अपनी स्त्री साहसी व क्रोधी हो ।
2. शुक्र तीसरे शुभ और केतु भी शुभ हो तो स्त्री का घर में मान हो और वह पतिव्रता हो । उसी के रहने पर घर पर कभी चोरी न हो ।
3. शुक्र तीसरे व शनि नौवें हो तो माता-पिता का सुख दीर्घायु तक हो ।
4. शुक्र तीसरे व मंगल या मित्र ग्रह (बुध, शनि या केतु) दूसरे व सातवें हों तो जीवन यापन आसानी से हो । 20वें वर्ष में तीर्थयात्रा होतो शुभ फल हो और माता-पिता का सुख दीर्घायु तक हो ।

5. शुक्र तीसरे होने से स्वयं निर्मित भवन नहीं होंगे और यदि होंगे तो उजड जायेंगे। जातक को सभी पसंद करते हैं ।
6. शुक्र तीसरे, 8वाँ भाव व चन्द्र भी शुभ हो तो हाथ से दी हुई मिट्टी भी शुभ हो । गुरु व सूर्य का भी शुभ फल हो । भाव आठ के अशुभ ग्रह का भी शुभ फल दें ।

शुक्र तीसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शुक्र तीसरे, अशुभ व 11वें बुध हो तो 34 वर्ष तक चाहे जितने साधन सम्पन्न व धनपति हों सुख की नींद भाग्य में न होगी । धन दिन-प्रतिदिन घटता जाएगा ।
2. शुक्र व मंगल का संबंध तीसरे भाव में हो तो बिना परिश्रम के भोजन नहीं पा सकेगा ।
3. शुक्र तीसरे अशुभ हो व 9वें भाव में गुरु हो तो अपना व कुटुम्ब का स्वास्थ्य निर्बल हो दुःखी व परेशानियों से ग्रस्त हो ।
4. शुक्र तीसरे अशुभ हो और बुध व मंगल भी अशुभ हो तो परिवार वालों विशेषकर लडकी, स्त्री आदि के द्वारा धन हानि हो ।

उपाय -

1. स्त्री का सम्मान करें । कभी भी उसे अपमानित न करें ।
2. परस्त्री गमन से बचें ।

चौथे भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र चौथे भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. धनी द्विभार्या योग, स्त्री व संतान दोनों को कष्ट हो, दो पत्नियों के होते हुए भी कामाग्नि शान्त न हो । यदि पहली स्त्री से दो बार विवाह करे तो दूसरी पत्नी न हो । संतान जल्दी हो पर स्त्री का गर्भाश्य नष्ट हो जाए ।
2. शुक्र चौथे हो और दो व सातवाँ भाव रिक्त हो तथा शुक्र किसी ग्रह का साथी न हो तो एक साथ दो स्त्रियाँ जीवित हो एक बडी आयु की एवं दूसरी आराम पसंद और हरफनमौला हो । संतान की कमी न हो ।

शुक्र चौथे भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शुक्र व गुरु पहले हो तो बहू व सास का झगडा हो ।
2. शुक्र चौथे व शनि अशुभ हो तो संतान की कमी हो व प्रेम बर्बादी का कारण बने ।
3. शुक्र चौथे के साथ शनि का संबंध हो तो निर्धनता व आर्थिक तंगी होते हुए ईश्वर से सहायता मिले ।
4. शुक्र व शनि का चौथे भाव में साथ हो तो नशा बर्बादी का कारण बने । गुरु केतु भी निकम्मे हों ।
5. शुक्र चौथे, शनि-बुध साथ हो तो स्त्री स्वेच्छाचारी हो ।

उपाय-

1. चन्द्र का उपाय या गुरु की वस्तुयें कुएँ में डालना संतान के लिए सहायक होगा ।
2. घर में कुआ न खुदवायें ।
3. गुरु का उपाय करें ।
4. नशा न करें ।

पाँचवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र पाँचवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. बच्चों से परिपूर्ण घर-परिवार, विद्वान्, शत्रुनाशक, पुरुष ग्रह साथ हो तो धन बढे, देश व परिवार को चाहने वाला, मित्र ग्रह बुध, शनि व केतु स्थापित हों तो धर्मात्मा और कुल को तारने वाली स्त्री होगी ।
2. सूर्य पहले मंगल, तीसरे व शुक्र पाँचवें हो तो सर्वप्रकार से उन्नति हो।

शुक्र पाँचवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शुक्र अशुभ पाँचवें हो तथा चन्द्र का अशुभ प्रभाव भी पडे तो चन्द्र शुक्र रूपी पतंग की डोर बन जाए । संतान पिता के काम न आए, प्रेम विवाह व दीवाना स्वभाव पतंग जैसा भाग्य बनाए ।
2. पाँचवें अशुभ शुक्र की किसी ग्रह पर दृष्टि न पडे तो जातक दोहरी जिन्दगी जिए अर्थात् मुख में राम और बगल में छुरी जैसा व्यवहार हो । चोरी गई वस्तु न मिले यदि वह शुक्र से संबंधित हो ।
3. शुक्र व शनि का पाँचवें संबंध बने, तो चाल-चलन खराब हो । चाल-चलन खराब होने पर भाग्य भी कमजोर हो । संतान पर कुप्रभाव नहीं होगा ।

उपाय -

1. गाय और माता की सेवा करें । हृदय में अपवित्रता न रखें । ऐसा करने पर धन-सम्पत्ति की वृद्धि हो ।
2. गुप्तांग दूध दही से धोते रहने से अशुभ शुक्र से बचाव होगा। गुप्तांग का स्थान साफ रखना आवश्यक हो ।
3. चन्द्र की वस्तुयें, दूध व चाँदी से सहायता करेगी ।

छठे भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र छठे भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. जातक की सांसारिक स्थिति उत्तम होगी । कार्य पूर्ण किए बिना न छोडें ।
2. शुक्र छठे व मंगल का साथ हो तो उत्तम होगा । परन्तु राहु-केतु की स्थिति भी ठीक होनी चाहिए ।
3. शुक्र छठे हो व सूर्य या गुरु या दोनों छठे या दूसरे भाव में हों तो जातक धनी, भाई-बन्धु व गृहस्थी में उन्नति होगी, परन्तु संतान नालायक होगी ।
4. शुक्र छठे व सातवें उसके शत्रु ग्रह स्थित हों तो लडाई-झगडा रहे ।
5. शुक्र छठे होने पर विवाह ऐसे घर में करे जो एकलौता लडका या लडकी न हो ।

शुक्र छठे भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शुक्र छठे, केतु साथ में व गुरु 12वें हो तो सभी ग्रहों का अशुभ फल मिले ।
2. शुक्र छठे व राहु दूसरे भाव में हो तो पहली स्त्री मर जाए व राहु की आयु तक शत्रुओं से कष्ट रहे ।
3. शुक्र छठे व पाँचवें बुध अशुभ हो तो स्त्री का मान होने पर धन बढे और अपमान होने पर धन गलत तरीकों से आए ।

4. शुक्र छठे सूर्य के साथ हो और दूसरे भाव रिक्त हो तो संतान सुख ठीक नहीं, पिता बचपन में चल बसे, स्त्री का फल 25वें वर्ष के बाद उत्तम हो ।
5. शनि अशुभ हो और शुक्र छठे हो तो धन दिन-प्रतिदिन घटता जाए ।
6. शुक्र छठे केतु और बुध 8वें हो तो शुक्र का अशुभ फल मिले व लडका न हो ।
7. शुक्र छठे केतु के साथ हो तो स्त्री बांझ, मर्द नपुंसक, संतान सुख न हो । यदि संतान सुख होतो लडकियाँ अधिक हों । बुद्धि कम हो, पर आजीविका में कमी न हो । परस्त्री बर्बादी का कारण बने । गुप्तांग में रोग हो ।
8. शुक्र अशुभ हो तो लडका हेाने के बाद दूसरी संतान 12वर्ष के बाद हो ।

उपाय -

1. चाँदी की ठोस गोली पास में रखें ।
2. पत्नी नंगे पैर जमीन पर न चले । जुराब या चप्पल पहने रहे ।
3. स्त्री बालों में सोने का हेयर क्लिप लगाकर रखें तो धनलाभ हो ।

सातवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र सातवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. चन्द्र चौथे और शुक्र सातवें हो तो कामुक नहीं होगा । शुक्र सातवें और चन्द्र पहले हो तो सास बहू में माँ-बेटी जैसा प्यार हो ।
2. शुक्र सातवें और बुध 2, 4, 6ठे हो तो विवाह के दिन से 37 वर्ष तक शुक्र व बुध दोनों का उत्तम फल हो ।

शुक्र सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. पहले चन्द्र और सातवें शुक्र अशुभ हो तो भाग्य खराब और शुक्र का अशुभ फल मिले ।
2. परस्त्री गमन का शौक पैतृक सम्पत्ति नष्ट कर दे ।
3. सातवें शुक्र गुरु के साथ हो तो व्यापार और सांसारिक लेन-देन के साथ-साथ संतान के लिये भी अशुभ हो ।
4. शुक्र सातवें अशुभ होने पर स्त्री पर अधिक खर्च हो एय्याशी से धन-सम्पत्ति नष्ट हो आयु 80-90 वर्ष ससुराल वालों से व्यापारिक भागीदारी हानिकारक हो । 4, 16, 28, 40, 52, 60, 76, 88, वर्ष में चोरी, धन हानि हो ।

उपाय-

1. गंदे नाले में 43 दिन तक नीला फूल डालें ।
2. लाल गाय की सेवा करें ।
3. कांसे के बर्तन का दान शुक्रवार को मंदिर में दें ।
4. माता-पिता का आशीर्वाद लें ।

आठवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र आठवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. स्त्री सख्त स्वभाव की होगी जो कहे वो पत्थर की लकीर होगा । उसकी कही अच्छी-बुरी बात स्वीकार करनी होगी । शत्रु को झुकाने के लिए दान कभी न लें और मंदिर में सिर झुकायें । पुरुष की कोई न सुने तो वह बोलकर थककर निराश बैठ जाए । आठवें शुक्र का फल शुभ न होकर अशुभ ही होता है ।

शुक्र आठवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शुक्र आठवें और दूसरा भाव रिक्त हो तो लडाई-झगडे में सहायता दे परन्तु गृहस्थी में क्लेश हो । बुजुर्गों की छत्रछाया शंकित हो अर्थात् उन पर मौत का साया मंडराये । स्त्री का स्वास्थ्य ठीक न हो, तो ज्वार का दान करें या जमीन में दबायें । 25वें वर्ष से पूर्व विवाह न करें वरना स्त्री मर जायेगी ।
2. किसी की जमानत न दें वरना भाग्य निर्बल हो जायेगा ।
3. जातक कटुभाषी, ऋणी, रोगग्रस्त और स्त्री कर्कषा हो ।
4. शुक्र 8वें अशुभ और मंगल अशुभ हो, तो जातक बुरे विचारों वाला, स्त्रियों के पीछे-पीछे भटकता फिरे और गुप्त रोग से ग्रस्त हो ।
5. स्त्री कष्ट में हो, तो चन्द्र-केतु की वस्तुओं से सहायता लें ।

उपाय-

1. ताँबे का सिक्का या नीला फूल गंदे नाले में 43दिन तक डालें ।
2. किसी की सौगंध न लें या जमानत न करें ।
3. मंदिर में सिर झुकायें, शत्रु कमजोर होगा ।
4. स्त्री रोगी हो, तो उसके भार तुल्य ज्वार मंदिर में दान दें ।

नौवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र नौवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. बडे बूढों का धन बढे । संतान सुख अच्छा नहीं, धन कम, तीर्थ यात्रा शुभ, बुद्धिमान और भाग्यवान होगा । लखपति होते हुए भी परिश्रम करके रोटी खाने को मिले । परिश्रम के अनुरूप फल न मिले ।

शुक्र नौवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शुक्र के साथ 9वें पापी या बुध ग्रह साथ में हो, तो 17वर्ष की आयु से नशा और रोग तंग करें । दुःख की काली बदली छायी रहे ।
2. शुक्र 9वें, उसके शत्रु 4थे और सातवां भाव रिक्त हो तो 4, 16, 28, 40, 52, 64, 76, 88, 100 वां वर्ष धन व अन्य प्रकार से व्यर्थ हो जाए ।
3. शुक्र 9वें भाव में और चन्द्र 7वें अशुभ हो या किसी भी भाव में अशुभ हो, तो संतान और धन की दृष्टि से पारिवारिक सुख अल्प हो ।
4. 9वें भाव में शुक्र हो व 7वां भाव रिक्त हो तो रक्त विकार हो ।
5. 9वें भाव में शुक्र गुरु के साथ हो या गुरु अशुभ हो, तो संतान सुख में बाधा आये और सांसारिक लेन-देन में अशुभ फल हो ।

उपाय-

1. घर में चांदी, शहद व घोडी स्थापित करें या चांदी व शहद को नींव में दबायें ।
2. आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए नीम के वृक्ष तले चांदी के चौकोर टुकडे दबायें ।
3. काली या लाल गाय की सेवा करें ।

दसवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र दसवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. पर स्त्री से संबंध बने । जातक, लालची, स्त्री व धन को अपनी दृष्टि में रखे । स्त्री के स्वप्न देखे । जातक दस्तकार भी हो । शनि शुभ हो या नवें या ग्यारहवें शत्रु गृह के साथ न हो तो स्त्री का स्वास्थ्य उत्तम, स्त्री पुरुष दोनों धार्मिक हों, बुध का फल मिले व दुर्घटना भी न हो , और हो तो चोट न लगे ।
2. शुक्र दसवें हो और चौथा भाव रिक्त हो, तो स्त्री कामुक व पूर्ण सुख दे ।
3. शुक्र दसवें व शनि पहले हो या साथ में हो, तो शनि का शुभ फल मिले । शुक्र दसवें व चन्द्र 2, 4, 7 वें हो तो वाहन सुख व अन्य सुख मिले । शुक्र दसवें और 1,4, 5वें भाव में शत्रु या मित्र वह स्थित हो तो युवावस्था व वृद्धावस्था सुख से बीते ।

शुक्र दसवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शुक्र दसवें अशुभ हो, तो स्त्री कामुक हो, सन्तान सुख में बाधायें या सन्तान न हो । पर स्त्री संपर्क से भाई व स्त्री दुखी हो, सन्तान सुख न रहे । शनि अशुभ हो तो अत्यन्त दुख मिले और स्त्री बुद्धिहीन व दुखी हो ।
2. शत्रु ग्रह, सूर्य, चन्द्र, राहु के साथ अशुभ शुक्र दसवें हो तो 12 वर्ष तक अशुभ समय बीते ।
3. शनि 5 वें और शुक्र 10 वें अशुभ हो तो स्त्री को नेत्ररोग हो ।

उपाय -

1. शनि का उपाय करने से सहायता हो ।
2. अतिकामुकता से बचें । संयम रखें । गुप्तांग दही से साफ करें ।

ग्यारहवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र ग्यारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. सुन्दर, धनी, बचपन का मोह रहे, नपुंसक व गुप्त रोग से युक्त, रहस्यमय, स्वभाव बदलता रहे या चन्द्र स्थापित हो, तो निर्धन न होगा व 12 वर्ष तक बहुत धन आये ।
2. राहु 12 वें व शुक्र 10 वें हो तो लडकियों के साथ धन बहुत आये ।

शुक्र ग्यारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. कार्य छिपा कर करें, देखने में भोलाभाला व वास्तव में चतुर, क्षण-क्षण बदलने वाला स्वभाव, मृत्यु सिर कटने से हो, स्त्री घर का कोष संभाले, तो अशुभ फल हो ।

2. शुक्र अशुभ हो व बुध का साथ हो या 3 रें बुध हो तो लडकियां घर का धन बर्बाद करेगी, धन कम न हो पर कुटुम्ब में पुरुषों की संख्या घटे ।
3. शुक्र 11 वें और 3 रा भाव रिक्त हो, तो जातक नपुंसक, हस्तमैथुन या वीर्यपात करे, गुप्त रोग से ग्रसित हो । लडकियां अधिक हों ।
4. विवाह के पूर्व भाग्योदय न हो ।
5. 5वां भाव रिक्त हो और 11वां अशुभ शुक्र हो, तो शुक्र की महादशा अशुभ हो । पुत्र 20 वर्ष बाद ही उत्पन्न हो ।
6. शुक्र 11वें व बुध 3रे हो, तो स्त्री पति के घर को बर्बाद कर दे ।

उपाय -

1. बुध का उपाय करें ।
2. शनि व चन्द्र की वस्तुयें दवाई के साथ लेनें सपर गुप्तरोगों में लाभ हो ।
3. तेल का दान करें ।
4. स्त्री को घर का कोष न सौंपे ।
5. रुई व दही मंदिर में दान करें ।

बारहवें भाव में स्थित शुक्र का फल एवं उपाय -

शुक्र बारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. स्त्री पवित्रता, दुखी, विवाह के समय भाग्योदय, राज्यलाभ, सर्वप्रकार से सुखी, आडे वक्त स्त्री सहायता करे, स्त्री का अल्पतम 37 वर्ष का सुख हो, रात को आराम व धन का सुख हो ।
2. गुरु, शनि 7 वें हो और शुक्र 12 वें हो तो स्त्री दुखी व परिवार व संतान का सुख मिले ।
3. बुध 2 या 6ठे भाव में हो, तो शुक्र 12 वें हो, तो जातक रोगी, कवि व भण्डारों का स्वामी होगा । स्त्री व पुरुष दीर्घायु होगे ।

शुक्र बारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. 2 व 7 वां भाव रिक्त हो, तो शुक्र को 12 वें अशुभ फल मिले । स्त्री सभी बाधायें झेले, स्वास्थ्य ठीक न रहे, किसी से सहायता न मिले ।
2. शुक्र 12 वें व बुध अशुभ हो, तो स्त्री पुरुष ना मिले ।
3. बुध 12 वें और राहु 2, 7, 6, 12वें भाव में हो तो 20 वर्ष तक गृहस्थी का सुख न मिले ।

उपाय -

1. स्त्री को मान सम्मान व प्यार दें ।
2. राहु की वस्तुओं का लाभ व सम्बन्ध न रखें ।
3. स्त्री द्वारा या उसके नाम पर गौ दान करें ।

पहले भाव में स्थित शनि का फल एवं उपाय -

शनि पहले भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. जातक दयालु हो तो धनी होगा । शनि-शुक्र लग्न में एकसाथ हो तो आजीविका और धन सम्पत्ति पर प्रभाव डालता है । शनि सम्बन्धी कार्य (शराब, लोहा, सीमेंट, प्लास्टिक, चमडा, लकडी आदि) और वस्तुओं का उत्तम फल होगा । दूसरों की सेवा में संलग्न रहें ।

शनि पहले भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शरीर पर बाल अधिक हो, तो निर्धनता रहे, जन्म पर बडा उत्सव करे, तो राज्य से कुर्की का आदेश हो । मंगल 4 थे हो तो पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो जाये । बुध अशुभ हो, तो शिक्षा अधूरी रहे ।
2. शनि पहले व सूर्य 7 वें हो, तो राज्य भय या राज्य से हानि हो ।
3. शनि पहले व राहु - केतु अशुभ या 7 वें कोई ग्रह हो, तो तीन गुना अशुभ फल मिले ।
4. भवन का द्वार पश्चिम में हो, तो शनि का अशुभ फल मिले । 36, 42, 45, 48वें वर्ष तक रोग, निर्धनता, फकीर आदि सभी फल साथ-साथ मिले । 30 से 39, 42, 48 या 40 वें वर्ष तक अशुभ फल मिले ।
5. शनि पहले हो, व मंगल अशुभ हो, तो जातक चोर, धोखेबाज, बेईमान, झगडालू, नेत्रहीन, आय अल्प व सन्तान का दुख हो ।

उपाय -

1. मद्य व मांस का सेवन न करे ।
2. वीरान जगह पर भूमि के नींचे सुरमा दबायें ।
3. वटवृक्ष (बरगद) के वृक्ष की जड में दूध चढाकर गीली मिट्टी का तिलक लगायें तो विद्या में बाधा व रोग के दुख से मुक्ति मिलेगी ।
4. धन के लिये बन्दर पालें या उसकी सेवा करें ।
5. तवा, चिमटा व अंगीठी का दान करें ।

दूसरे भाव में स्थित शनि का फल एवं उपाय -

शनि दूसरे भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. शनि दूसरे शुभ हो एवं चन्द्रमा भी शुभ हो, तो दीर्घायु, सुखी व पिता बर्बाद रहे ।
2. शनि दूसरे शुभ और 4 थे गुरु हो, तो बुद्धिमान, चिन्तक एवं बाल की तह तक पहुँचने की सामर्थ्य हो ।
3. शनि दूसरे व केतु 8 वें हो, तो बच्चों जैसा स्वभाव होगा । यदि केतु 9 हो व शनि दूसरे हो तो शीघ्र समझने वाला होता है ।
4. शनि दूसरे व मंगल 8 वें हो तो जातक धनी, शनि दूसरे व बुध 8 वें हो, तो जातक बुद्धिमान और शनि दूसरे व गुरु 10 वें हो, तो जातक पादरी, धार्मिक, कमखर्चीला और सोच समझ कर खर्च करे ।
5. शनि दूसरे व बुध 12 वें हो तो 34 वें वर्ष तक जातक के लडकी हो और विवाह के बाद ससुराल चली जाये तो वहां अमृत कुण्ड बन जाये ।

शनि दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शरीर पर अधिक बाल हो, तो निर्धन, सगाई के दिन से ससुराल में राख उडे ।
2. शनि दूसरे व राहु 8 वें हो तो ससुराल में पुरुषों की कमी हो । यदि शनि दूसरे व राहु 12 वें हो तो ससुराल में धन की कमी हो ।

3. शनि दूसरे व गुरु ग्यारहवें हो तो अपयश होगा और अपनी प्रसंशा आप करे ।
4. शनि दूसरे व गुरु 12 वें हो तो प्रसिद्ध जुआरी, वहमी और आय-व्यय बराबर हो ।
5. शनि दूसरे व राहु 8 वें हो तो वहमी, राहु 7 वें हो तो वियोग हो, मंगल 9 वें हो तो निर्जीव विचार हो, गुरु 8 वें हो, तो आधारहीन विचार हो, सूर्य, बुध, गुरु 8 वें हो तो उदास व वियोग मन भाये और सूर्य 8 वें हो तो मध्यम स्वभाव व अपयश का भागी हो ।

उपाय -

1. सांप को दूध पिलायें ।
2. शिव लिंग पर जल चढायें ।
3. काली या रंगी भैंस न पालें ।
4. मस्तक पर कभी भी तेल न लगायें । दूध या दही का तिलक लगायें ।

तीसरे भाव में स्थित शनि का फल एवं उपाय -

शनि तीसरे भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. दीर्घायु, शनि की वस्तुयें व संबंधियों का उत्तम फल हो भवन बनेगा व धनी भी होंगे । जातक नेत्ररोग विशेषज्ञ होगा । शनि के साथ मंगल भी शुभ हो तो जातक को दूजों की सहायता मिलेगी, जबकि वह इनका कार्य बिगाडेगा और स्वयं आराम पाएगा । केतु 10वें हो तो धन सम्पत्ति में वृद्धि होगी ।

शनि तीसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शनि तीसरे व चन्द्र 10वें हो तो चोरी डकैती डालने पर भी धनहीन घर का कुंआ ही मौत का कारक बनेगा।
2. भवन का मुख्य द्वार दक्षिण या पूर्व में हो तो उसमें रहना शुभ नहीं होगा । यदि भवन में पत्थर गडे हो तो 43दिन में मौत पर मौत हो ।
3. शनि 3रे व केतु 10वें हो तो संतान को कष्ट हो ।

उपाय -

1. केतु का उपाय करने पर धन सम्पत्ति बढे ।
2. नेत्रों की औषधि मुफ्त बाँटने से दृष्टि दोष दूर हो ।
3. मांस या शराब का सेवन न करने पर आयु बढे ।

शनि चौथे भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. शनि चौथे शुभ हो तथा चन्द्र 2 या 3रे हो तो जीवन उत्तम एवं माता-पिता का सुख हो ।
2. जातक माता-पिता, स्त्री व निकटस्थों से प्रेम करने वाला, शनि का शुभ फल मिले, शनि के कार्य व संबंधी सहायक होंगे । जातक चिकित्सक होगा या कुटुम्ब में चिकित्सा संबंधी कार्य व चिकित्सक होंगे ।

शनि चौथे भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. सीने पर बाल न हों तो जातक विश्वस्नीय न हो भवन बनाने पर माता वा मामा को कष्ट हो । शनि निज आयु तक अशुभ करे । परस्त्री से अनधिकृत संबंध बनाने पर शनि का अशुभ फल मिले ।
2. शनि चौथे व गुरु तीसरे हो तो धोखे व लूटपाट द्वारा सम्पत्ति बढा ले ।

उपाय -

1. सांप को दूध पिलायें । कौआ को रोटी डालें । भैंस को पालें या रोटी डालें । मजदूर की सेवा करें ।
2. कुएँ में दूध गिरायें ।
3. परस्त्री गमन से बचें । विधवा स्त्री से संबंध बनायेंगे तो कंगाल हो जायेंगे ।
4. शराब बहते पानी में बहायें ।
5. रोग में शनि की वस्तुओं का प्रयोग करें ।
6. सांप को न मारें । शराब न पियें । रात्रि में भवन की नींव न रखें ।
7. रात्रि में दूध न पियें ।

शनि पाँचवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. स्वाभिमानी, राहु भी शुभ हो तो घर बनेगा, केतु शुभ हो तो खोजी प्रवृत्ति के कारण उन्नति व संतान सुख मिलेगा । जातक द्वारा बनाया या खरीदा भवन संतान को कष्ट देगा, परन्तु संतान द्वार बनाया या खरीदा भवन कभी अशुभ फल न देगा ।
2. शनि पाँचवें और 11वां भाव रिक्त हो तो शनि धार्मिक देवता सदृश होगा ।
3. संतान सुख के लिए गुरु व मंगल की वस्तुएँ पैतृक भवन में स्थापित करें ।
4. गुरु 9वें और शनि 5वें हो तो 5, 17, 41, 28, 53, 65, 77, 89, 101, 103वें वर्ष में भाग्य का शुभ फल मिलेगा पर संतान सुख कम ही होगा ।

शनि पाँचवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शनि पाँचवें हो और वर्ष कुण्डली में जब भी सूर्य, चन्द्र या मंगल 5वें आयेंगे स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा ।

उपाय -

1. संतान के जन्म लेने पर मीठा न बाँटें या मीठा बाँटें तो उसमें नमक लगा दें ।

शनि छठे भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. शनि छठे भाव व शुक्र 12वें भाव में हो तो शुक्र का शुभ फल मिले व स्त्री सुखी हो ।
2. शनि 6ठे व राहु भी 3रे या 6ठे हो, तो 42वें वर्ष तक शनि का प्रभाव अशुभ होगा और बाद में शुभ होगा ।
3. शनि 6ठे व केतु 10वें या शुभ हो तो लडका उत्पन्न हो यात्रा लाभदायक, पिता से योग्य, धन वृद्धि व दार्घायु होगा ।

शनि छठे भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शनि की वस्तुयें (चमडे व लोहे की वस्तुयें) घर पर लानी अशुभता का संकेत होगी । शनि जन्मकुण्डली में 6ठे हो और जिस वर्ष में वर्षकुण्डली में भी 6ठे भाव में आए, उसमें राज्यभय, दुःख

व अशुभ फल मिलेंगे । शराब व मांस का सेवन हानिकारक होगा । 28 से पूर्व विवाह करने पर 34 से 36 वर्ष में माता व संतान नष्ट हो जायेगी और कष्ट बढें ।

उपाय –

1. सरसों के तेल का भर बर्तन पानी के भीतर जमीन के नीचे दबा दें । तेल में मुख अवश्य देख लें ।
2. सांप की सेवा से संतान सुख मिलेगा ।
3. नारियल या बादाम बहते पानी मे बहायें ।
4. काला कुत्ता पालें या उसकी सेवा करें या उसे रोटी दें ।

शनि सातवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो –

1. शनि सातवें व बुध 11वें भाव में हो तो जातक गांव का स्वामी होगा ।
2. शनि 7वें हो और वर्षकुण्डली में जब भी पहले भाव में आये ता अच्छा लाभ देता है ।
3. शुभ शनि भवन बनाने का अवसर न दें, क्योंकि निर्मित भवन बहुत मिलेंगे । मंगल भी शुभ हो तो मासिक आय लाखों में हो ।

शनि सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो –

1. शनि 7वें अशुभ हो और बुध पहले हो तो जातक की मृत्यु सिर कटने से हो ।
2. शनि 7वें अशुभ हो और 4थे सूर्य हो तो जातक नपुंसक हो ।
3. शनि 7वें और बुध व शत्रु ग्रह 3, 7, 10वें हो तो पिता को धन हानि हो ।
4. शनि 7वें और गुरु व शुक्र अशुभ हो तो जातक भाग्यहीन हो ।

उपाय –

1. शनि सुप्त हो तो बांसुरी में खाण्ड भरकर एकान्त स्थल में दबायें ।
2. पहला भाव खाली हो तो शहद भरा बर्तन एकान्त में दबायें ।
3. शराब न पियें व मांस न खायें ।
4. पर स्त्री गमन से संतान का कष्ट होगा, परस्त्री गमन से बचें ।

आठवें भाव में स्थित शनि का फल एवं उपाय –

शनि आठवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो –

आठवें अकेला बैठा शनि कदापि अशुभ फल नहीं करेगा, क्योंकि यह शनि का अपना घर है । जातक दीर्घायु, आत्म प्रशंसक, सबके भले में अपना भला देखने वाला होगा । बुध, राहु-केतु के अनुरूप ही शनि की स्थिति होगी ।

शनि आठवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो –

1. शरीर पर बाल अधिक हो तो आजीवन गुलामी करे, जातक डरपोक और राजभय से भयभीत हो । राहु नीच हो तो दुर्घटना व भाई को शत्रु बना देता है । शत्रु ग्रह शनि के साथ हो तो अशुभ फल हो । बुढापे में नजर का धोका होगा । द्वार पर मृत्यु दस्तक देती रहेगी ।
2. शनि 8वें अशुभ और 12वां भाव रिक्त हो तो आर्थिक तंगी व दुःखी हो । व ृद्धावस्था में दृष्टिदोष रहे ।

उपाय -

1. मिट्टी में बैठकर स्नान करें । पांव का नंगा तलवा भूमि पर स्नान करते समय नहीं लगना चाहिये । पांव के तले लकडी या पत्थर होना चाहिये ।
2. चाँदी धारण करें । चांदी का चौकोर टुकडा पास में रखें ।
3. शराब का सेवन न करें । मांस-मछली न खायें ।

शनि 9वें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. भाई व मित्रों की सहायता से धनी बने । तीन मकान मरने से पूर्व अवश्य हों । ठेकेदार व यात्रा संबंधी कार्य में निपूण हो बडा कुटुम्ब और धनी होगा । माता-पिता का सुख दीर्घायु तक होगा । परोपकारी होने पर शनि का शुभ फल मिलेगा ।
2. शनि 9वें और बुध 6वे या 7वें हो तो ससुराल धनवान होगी ।
3. शनि 9वें और गुरु 12वें हो तो जातक धनी होगा पर धन की परवाह न करें ।
4. शनि 9वें और शत्रु ग्रह सूर्य, चन्द्र मंगल तीसरे हो तो अशुभ फल न होगा । घर के अन्दर अन्धेरी कोटरी में प्रकाश कर दिया जाये या दीवार तोड दी जाए या दक्षिण में रोशनदान हो तो तीन वर्ष में सब कुछ नष्ट हो जाए ।

शनि 9वें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. स्त्री या पत्नी गर्भ से हो तो 36-39वें वर्ष में घर बनाने से पिता की मृत्यु हो जायें ।
2. संतान विलम्ब से हो पर जीवित रहे। शनि 9वें और मंगल 4थे हो तो जातक भाग्यहीन हो ।
3. शनि 9वें और 2रा भाव रिक्त हो तो धन सत्पत्ति होते हुए भी जातक दुःखी हो ।

उपाय -

1. गुरु का उपाय करें ।
2. घर की छत पर लकडी, ईंधन और चौखट व्यर्थ में न रखें ।

शनि 10वें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. 39 से 48 वर्ष तक पिता का साथ होगा, प्रत्येक 7वें वर्ष शनि सम्मान धनादि दे । शनि तथा गुरु का शुभ फल मिलेगा । जातक महत्वाकांक्षी, राज्य से लाभ प्राप्त करे, मकान के लिए धन संग्रह करें । शनि 10वें, गुरु 4थे व चन्द्र पहले हो तो शुभ फल हो ।
2. वर्ष कुण्डली में बुध 7वें जिस वर्ष में आये ससुराल में धनवृद्धि हो ।
3. शनि 10वें उसके मित्र ग्रह पहले भाव में हो तो दो गुना अच्छा फल मिले ।

शनि 10वें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. स्त्री को कष्ट, मकान बन जाने पर आर्थिक तंगी या धन हानि हो । प्रारम्भ में धर्मात्मा हो तो अंत समय निकम्मा हो । समय खराब हो तो दाढी-मूंछ के बाल कम हो जायें । पराक्रम में कमी आये और निज धन से मकान न बने । शनि के शत्रु ग्रह सूर्य,चन्द्र , मंगल 4थे भाव में हो तो शनि का अशुभ फल मिले ।

उपाय -

1. गुरु का उपाय करें ।
2. 10 नेत्रहीनों को भोजन करायें ।
3. गणेश उपासना करें ।

शनि 11वें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

धोखेबाजी से धन कमाकर धनी बने, केतु शुभ हो तो शनि का शुभ फल मिले । वर्ष कुण्डली में शनि पहले भाव में आए तो शुभ फल होगा । धोखेबाजी से कमाया धन कफन का कार्य करेगा 48वां वर्ष शुभाशुभ फल के लिए निर्णायक होगा । अपना घर न बने यदि बनने का अवसर आए तो 45 से 55 के मध्य बनायें । यदि घर पहले बनायेंगे तो लम्बी बीमारी हो जाये ।

शनि 11वें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. शिक्षा अधूरी रहे, क्रोधी, अल्पायु, परिवार को मझधार में छोड जाए, बुध तीसरे हो तो शनि शुभ फल कभी न दे । राहु शुभ तो ससुराल अच्छी, केतु शुभ हो तो पुत्र भाग्यशाली होगा ।
2. शनि 11वें हो और मुख्य द्वार दक्षिण हो तो अशुभ फल प्राप्त हो । जातक हत्यारा व क्रोधी होगा ।

उपाय -

1. 43 दिनों तक तेल या शराब प्रातः काल में सूर्योदय समय धरती पर गिरायें ।
2. किसी भी कार्य से बाहर जायें, तो पानी से भरा घडा सम्मुख रखें या दर्शन करके जायें ।
3. गुरु का उपाय करें ।

शनि 12वें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. जातक बहादुर हो और अच्छा जीवन निर्वाह करे । सिर के बाल उड जायें तो धनी और सुखी होगा। राहु, केतु व बुध का अशुभ फल न होगा । शनि शेष नाग बनकर रक्षक जैसा व्यवहार करेगा । सर्प हाथ में पकड ले तो वह काटे भी नहीं । व्यापार व परिवार उत्तम श्रेणी के हों । शनि 12वें राहु के साथ हो तो इच्छाधारी सर्प की भांति सहायक हो ।

शनि 12वें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. जातक झूठा शरारती, स्त्रियों का रसिया होता है । चटोरा होना बर्बादी की निशानी होगी । नेत्र रोग हो जाने पर शनि अधिक अशुभ फल करें ।
2. शनि 12वें और सूर्य 6ठे भाव में हो तो स्त्री पर स्त्री मरे । राज्य बाधा से मानसिक तनाव बढे ।

उपाय -

1. किसी से धोखा न करें ।
2. 12 बादाम काले कपडे में बांधकर लोहे के पात्र में बंद करके आजीवन रख छोडें । उसे कभी खोलकर न देखें ।

राहु का फल एवं उपाय -

राहु पहले भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. खर्च अधिक होने पर भी शुभ, धनी, शासक, सूर्य स्थित पर ग्रहण अर्थात् अंधेरा हो जिसका फल इस प्रकार हो पहले सूर्य हो तो राज्य भय जो आधारहीन, दूसरे हो तो धर्मस्थल व ससुराल में अपमान हो । तीसरे हो तो भाई बन्धु पर कष्ट आये, 4थे हो तो ननिहाल और स्वयं के कार्यों में बाधा आये । 5वें हो तो राहु सूर्य एक दूसरे की सहायता करें । छठे हो तो लडके-लडकियों के संबंधियों से अपयश मिले, 7वें हो तो पारिवारिक व अदालती कार्यों में बाधायें आयें । 8 वें हो तो बेबात खर्चे हों, 9वें हो तो पूर्वजों के धर्म स्थलों को अशुद्ध कर देगा। 10वें हो तो सांसारिक जीवन सामान्य होगा, 11वें हो तो न्यायालय को अशुद्ध कर देगा और 12वें हो तो रात में सोते समय परेशानी आयेगी ।
2. राहु पहले व मंगल 12वें हो तो राहु न भला न बुरा प्रभाव देगा ।
3. राहु पहले व 7वें शुक्र हो तो स्वयं धनी होगा पर स्त्री का स्वास्थ्य ठीक न रहेगा ।

राहु पहले भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. राहु पहले अशुभ हो तो विवाहोपरान्त ससुराल से बिजली का सामान लेना सूर्य का अशुभ कर देगा । नीले काले कपडे भी न लें । अशुभ फल 42वें वर्ष तक हो, 11, 21, 42वें वर्ष में पिता के लिए कष्टकारी हो स्थानान्तरण सदैव उन्नति के साथ होगा, बेबात बाधायें आएगी । आवारा घूमे और बडबडाता रहे ।

उपाय -

1. काले नीले वस्त्र न पहने ।
2. गले में चांदी धारण करें ।
3. सूर्य संबंधी वस्तयें दान करें ।

राहु दूसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. यदि गुरु शुभ हो तो धन, मान व फल मिले । राजा या राजा सदृश जीवन होगा । दीर्घायु व उत्तम जीवन हो । अशुभ स्थिति में भी राहु सहायता दे ।
2. वर्ष कुण्डली में जब शनि पहले व गुरु शुभ हो तो धन मिले व गृहस्थी आराम से कटे ।

राहु दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. मंदिर में भी पाप करे । चोरी करे या कराए । 36 स 42 वर्ष तक अशुभ फल मिले । 10, 21, व 42वें वर्ष में धन हानि हो ।
2. राहु दूसरे व शनि अशुभ हो तो दुर्भायशाली हो ।

उपाय -

1. गुरु की वस्तुयें पास रखें या धारण करें ।
2. माता से मधुर संबंध रखें ।

राहु तीसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. धन सम्पत्ति से युक्त, चौकन्ना रक्षक, निडर, बेधडक होकर सहायता करने वाला मित्र होता है । स्वप्न सच्चे हो, भविष्य का पूर्वाभास हो, शत्रु पर हावी हो ऋण न रहे दीर्घायु, उन्नतिशील और सम्पत्ति छोडकर मरे ।

2. मंगल साथ में हो तो राजा सदृश शाही सवारी से युक्त हो ।
3. राहु के शत्रु ग्रह सूर्य, मंगल शुक्र साथ में होने पर शुभ फल ही करे ।

राहु तीसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. भाई व संबंधी धन नष्ट करें, उधार में बँट जायें और वापिस न मिले । तोतला व नास्तिक हो ।
2. राहु तीसरे अशुभ हो और साथ व बुध हो तो 22वें या 32वें वर्ष में बहिन विधवा हो जाये ।
3. राहु तीसरे मंगल के साथ हो और 12वें कोई भी ग्रह हो तो 34वर्ष तक बुध व केतु का अशुभ फल मिले ।

उपाय -

1. चन्द्र का उपाय करें और हाथी दाँत की वस्तु घर पर न लायें ।

राहु चौथे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. जातक, धनवान, बुद्धिमान, योग्य, खर्च, शुभ कार्यों में हो, शुभ फल होगा, जब तक अकेला या चन्द्र के साथ होगा तीर्थ यात्रा करना शुभ रहेगा ।
2. राहु चौथे, चन्द्र पहले व बुध दसवें हो तो राजकोष से धन कमाकर पैतृक घर भर दे ।
3. राहु चौथे व शुक्र शुभ हो तो विवाह के बाद ससुराल धनी हो जाए और जातक को भी उसमें धन मिले ।
4. राहु चौथे हो और चन्द्र उच्च हो तो जातक धनवान हो तथा बुध जहाँ हो उससे संबंधित संबंधी या कार्य से लाभ हो और स्वयं भी उनकी सहायता करे ।

राहु चौथे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. चन्द्र अशुभ हो या राहु चौथे हो तो आर्थिक तंगी हो ।
2. 6, 13, 24वें वर्ष में ननिहाल में अशुभ फल हो ।
3. मकान थोडा बनाकर छोडने या मरम्मत पूरी न कराने पर धन हानि हो । माता को कष्ट हो ।

उपाय -

1. चाँदी धारण करें ।
2. मकान पूरा बनायें । अधूरा कार्य न छोंडें ।

राहु 5वें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. धनवान, चतुर, स्वास्थ्य ठीक, राज्य लाभ माता जीवित हो, तो संतान व धन से उत्तम हो । परिवार व धन से सुखी होगा ।
2. चन्द्र राहु की युति 5वें हो तो संतान संबंधी बाधायें हों ।

राहु 5वें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. पहली संतान गर्भ में नष्ट, विद्या प्राप्ति में बाधायें, 24वें वर्ष में मानसिक, अस्थिरता या मृत्यु संतान उत्पन्न होने के 12वर्ष तक स्त्री स्वास्थ्य खराब रहे । यदि राहु शुभ राशि में हो तो जातक शरारती हो व शनि का अशुभ फल मिले । पुत्र चार होंगे पर मूर्ख होंगे ।
2. गुरु 5वें राहु के साथ हो तो पिता संतान कष्ट में हो ।

उपाय –

1. शराब, मांस, परस्त्री गमन से दूर रहें ।
2. अपनी स्त्री के साथ पुनः फेरे लेने पर राहु की अशुभता दूर हो जाये ।
3. घर के प्रवेश द्वार की दहलीज के नीचे चाँदी का पत्तरा दबायें ।

राहु 6ठे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो –

कपडों व व्यक्तिगत कार्यों हेतु धन खर्च होगा । बौद्धिक शक्ति बढे । उन्नति मिले पर स्थानान्तरण न हो । शनि का साथ होने पर शक्तिशाली व आत्म प्रशंसक हो । शनि दूसरे व राहु 6ठे हो तो शत्रु पर विजय मिले । अकेला 6ठे हो तो फाँसी से भी बच जाये और रक्षक व सहायक होगा ।

राहु 6ठे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो –

1. ननिहाल में किसी की शीघ्र मृत्यु हो जाए, कुसंगति हो अर्थात् बदमाशों से मित्रता हो ।
2. राहु 6ठे व मंगल 12वें हो तो बडे भाई या बहिन के लडने पर घर का चूल्हा तक न जले अर्थात् आर्थिक तंगी हो जाए ।
3. राहु 6ठे, बुध 11वें और सूर्य दूसरे स्थान हो तो अपयश, बेईमानी अशुभ कष्ट मिले । अधार्मिक हो जाए ।

उपाय –

1. काला कुत्ता पालें । भाई बहिन का अहित न करें ।

राहु सातवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो –

1. जातक धनी होगा, परस्त्री व परिवार का सुख अल्प होगा । राज्य में उच्च स्थिति में होगा । धन के कारण हाथ न फैलाना पडे । शत्रु हन्ता, बुध व शनि को भरपूर सहायता मिले ।
2. बुध, शुक्र 2, 11वें हो तथा राहु 7वें हो तो आर्थिक स्थिति अच्छी हो ।

राहु सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो –

1. सर्व प्रकार से चाण्डाल की तरह कष्ट दें । 21वर्ष पूर्व विवाह पर तलाक होगा या स्त्री मर जाए । कष्ट का मारा हो जहाँ जाए वहाँ ही परेशानी आ जाए । यदि बिजली, पुलिस या जेल का कार्य हो तो अल्पायु हो । स्वास्थ्य ठीक न रहे ।
2. राहु 7वें तथा बुध, शनि, केतु 11वें भाव में हो तो उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुयें हानि करें ।
3. राहु 7वें व बुध, शुक्र या केतु 11वें हो तो क्रमशः बहिन, बुआ या पत्नी जातक को बर्बाद कर दे ।

उपाय –

1. चार नारियल बहते पानी में छोडें । विवाह 21 वर्ष से पूर्व न करें। यदि करे तो चांदी के बर्तन में चांदी का टुकडा तथा गंगाजल डालकर पति-पत्नी अपने पास रखें ।

राहु 8वें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. शुभ मंगल 12वें भाव में हो तो राहु का शुभ फल मिलेगा । राहु 8वें अशुभ फल देगा ।
2. राहु 8वें और मंगल शुभ पहले या 8वें या शनि 8वें हो तो शुभ भाग्य जाग जाए और रिक्त कोष धन से भर जाए ।

राहु 8वें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. अचानक दुर्घटना, नास्तिक, माता को कष्ट, धन हानि, अपयश अपमान, किसी की सहायता न मिले , पेट दर्द, बवासीर, परिवार वालों से न निभे न पेट, कार्य बदलता रहे । जीवन में कई उतार-चढाव देखने को मिलें ।
2. मंगल-बुध अशुभ हो व राहु 8वें हो तो 21वें विवाह, 22वें में विद्युत विभाग में नौकरी, बेईमानी हानि कारक हो ।

उपाय -

1. 4 नारियल बहते पानी में बहायें ।
2. बेईमानी कदापि न करें । जन्ममास से 8वां मास हानिकारक हो ।

राहु 9वें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. पागलों का डाक्टर हो, धर्म कर्म से हीन, गुरु 5वें या 11वें हो तो प्रभाव हीन, परिश्रम से ही कुछ मिले । भाई बहिनों से बनाकर रखें । शनि का व्यवसाय शुभ फल दे । धार्मिक होने पर संतान ठीक रहे ।

राहु 9वें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. अधार्मिक होने पर संतान निकम्मी, अपयश या अपमानित हो, फकीर या साधू को लूटकर खा जाए, लडका गर्भ में या उत्पन्न होते ही मर जाए, पिता, दादा व ससुराल बर्बाद व भाई तंग करे, रक्त के संबंधियों से मुकदमे बाजी करने पर निःसंतान रहे ।
2. राहु 9वें व शनि 5वें हो तो संतान सुख न हो और शनि अशुभ फल दे ।
3. राहु 9वें व पहला भाव रिक्त हो तो स्वास्थ्य ठीक रहे । अपमान व बडों के द्वारा मानसिक परेशानी मिले ।

उपाय -

1. सिर पर चोटी रखें । केसर का प्रतिदिन तिलक लगायें ।
2. गुरु का उपाय करें । सोना धारण करें ।

राहु 10वें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

पिता के लिए शुभ, जातक का अच्छा स्वभाव, सम्मानित, शनि की स्थिति के अनुरूप ही शुभाशुभ प्रभाव होगा । शनि शुभ होगा तो जातक वीर, धनी, दीर्घायु और व्यापारी होगा ।

राहु 10वें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. शनि अशुभ हो तो माता के लिए कष्टकारी और सोने को भी जंग लग जाए ।
2. राहु 10वें और चन्द्र मंगल अशुभ हो तो अशुभ फल हो । पैतृक सम्पत्ति बेच कर खा जाए । तंग दिली, दूसरों से शत्रुता कराये । नंगा सिर रखना धन हानि का संकेत करता है ।
3. राहु 10वें और चन्द्र अकेला चौथे हो तो सर कट जाए, अन्धा हो जाए, धन सम्पत्ति पर बिजली गिर जाए ।

उपाय -

1. जातक सिर ढक कर रखे । मंगल का उपाय करे ।
2. नीले या काले रंग की पगडी या टोपी धारण करे ।

ग्यारहवें भाव में स्थित राहु का फल एवं उपाय -

राहु ग्यारहवें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

पिता के जीवित रहने तक धनवान हो । बाद में गुरु की वस्तुयें करना शुभ व सहायक हो । जातक योगी हो और पिता के लिये कष्टकारी न हो । यदि शनि 3रे या 5वें स्थित हो शक्ति और भाग्य में वृद्धि हो । माता-पिता से धन न मांगे । धोखा देना धन हानि का लक्षण बनेगा ।

राहु ग्यारहवें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. राहु के साथी पहले या 3रे हो तो अत्यन्त अशुभ मिले । कुसंगति व धूर्त मित्रों का साथ रहे, नीच लोगों से धन प्राप्त हो ।
2. राहु 11वें और मंगल भी अशुभ हो तो जन्म से पूर्व सब कुछ हो पर जन्मते ही नष्ट हो जाए ।
3. मंगल 3रे और राहु 11वें हो तो भाई के गर्दन में कष्ट, ताऊ निःसंतान या लंगडा हो ।
4. केतु 5वें और राहु 11वें हो तो केतु का अशुभ फल मिले, कान, टंग, रीढ की हड्डी, मूत्र या पैरों का रोग हो । केतु संबंधी कार्यों में हानि हो ।

उपाय -

1. कभी-कभी सत्पात्र को दान देते रहें ।
2. गुरु का उपाय करें । स्वर्णधारण करें । केसर का तिलक लगाएँ ।
3. लोहा शरीर पर स्थापित करें ।

राहु 12वें भाव में शुभ स्थिति में हो तो -

1. राहु के साथ मंगल हो तो सुखी व हर प्रकार से उत्तम हो । राहु 12वें व शनि शुभ हो तो योगी, ज्ञानी व बेफिक्र होता है ।

2. राहु 12वें शुभ होने पर ससुराल धनी, शत्रुओं से सदैव रक्षा और रात्रि में आराम मिले । नेक कार्य करे । इच्छानुसार कार्य करे तो ऋण न होगा ।
3. राहु 12वें व शुक्र 10वें या 11वें हो तो आर्थिक तंगी न हो, कन्या उत्पन्न होने पर धन की वृद्धि हो ।

राहु 12वें भाव में अशुभ स्थिति में हो तो -

1. कुकर्मों में धन खर्च, व्यसन शील, सज्जनों से विरोध हो । बवासीर, आंतों व दिमागी परेशानी से पीडित हो । झगडे हों, रातों को नींद न आए, पुत्री या बहिन पर अधिक धन खर्च हो । शत्रु ग्रहों के साथ राहु की युति तबाही लाए । अधिक परिश्रम के बाद भी गुजारा न चले । अपव्यय हो । आत्महत्या तक सोचे । झूठे दोष लगें, अपयश हो और हठ से हानि हो । अधिक सोचने पर पागल हो जाए ।

उपाय -

1. खाना जहाँ बनायें वहीं बैठकर ही खायें ।
2. कम सोचें । जिद्द या हठ न करें ।
3. सोते समय तकिये के नीचे सिरहाने मंगल की वस्तु या सौंफ या मूँगा रखें ।

केतु पहले भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. यात्रा की चिन्ता हर समय रहे, स्थानान्तरण के लिए तैयार रहें, पर अन्त में यात्रा स्थगित हो जाए । जातक सुखी, परिश्रमी, धनी, सन्तान को लेकर चिन्तित रहे ।

केतु पहले भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

सिरदर्द हो, स्त्री का स्वास्थ्य ठीक न रहे व बच्चों की चिन्ता रहे, बुध-शुक्र का अशुभ फल हो जब 2 रा 7 वां भाव रिक्त हो । अस्थायी यात्राएं करनी पडें । शनि भी अशुभ हो, तो पिता व गुरु को नष्ट कर दें व पडौसी भी परेशान रहे ।

उपाय -

1. बंदर को गुड खिलाएं । बुध का उपाय करें ।
2. प्रतिदिन केसर का तिलक लगाएं ।
3. काला या सफेद कम्बल सतपात्र को देन दें ।

केतु दूसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

यात्रा करनी पडे । यात्रा उन्नति कारक होगी । शुक्र कैसी भी स्थिति में हो उत्तम फल देगा । धन संग्रह न हो पाए । यदि गुरु उच्च का हो, तो लाखों की धन-सम्पत्ति हो, तो 24 वर्ष के बाद समय हर प्रकार से अच्छा हो ।

केतु दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

दूसरे केतु 8 वें चन्द्र, मंगल हो, तो अल्पायु 16 या 22 वें वर्ष में कष्ट हो ।

उपाय –

1. माथे पर केसर का तिलक लगाएं ।

केतु तीसरे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो –

1. संतान अच्छी होगी, जबकि ससुराल और भाइयों का शुभाशुभ फल मिले । ईश्वर को स्मरण करने वाला व्यक्ति और दूजो के काम आए ।
2. केतु तीसरे व मंगल 12 वें हो, तो 24 वर्ष से पहले पुत्र जन्म आयु व धन के लिए शुभ है, यदि श्वेत केशों से युक्त कोई पूर्वज सहायता करे ।

केतु दूसरे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो –

1. बेबात हां करके दुःखी हो । भाईयों से दुःखी, परदेश में व्यर्थ भटके, आयु और धन में कमी आए । भाई परिचित व ससुराल से दुःखी हो । मुकदमों में धन नष्ट हो । पत्नी व सालियों से वियोग हो ।
2. केतु तीसरे व चन्द्र या मंगल तीसरे या चौथे हो, तो जातक निर्धन होगा ।

उपाय –

1. केसर का तिलक लगाएं ।
2. गुरु की वस्तुएं बहते पानी में बहाएं ।
3. आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए शरीर पर स्वर्ण धारण करें ।

केतु चौथे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो –

ईश्वर पर विश्वास करने वाला हो । संतोष करने का फल शुभ हो । पिता व गुरु के लिए शुभ हो ।

केतु चौथे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो –

अस्वस्थ, मधुमेह का रोगी, माता व सन्तान को कष्ट हो । संतान विलम्ब से और कुल पुरोहित के आशीष से उत्पन्न हो ।

उपाय –

1. सूर्य की वस्तुएं कुल पुरोहित को दान में देकर आशीर्वाद लें ।
2. गुरु की वस्तुएं बहते पानी में बहाएं ।
3. कुत्ता पालें ।
4. मन की शांति के लिए चांदी धारण करें ।

केतु पांचवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो –

केतु पांचवें गुरु, सूर्य या चन्द्र 4, 6 या 12 वें हो, तो पांच लडके और आर्थिक स्थिति अच्छी हो ।

केतु पांचवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. केतु 5 वें और गुरु अशुभ हो, तो जातक सुन्दर, संतान के लिए अशुभ दमे का रोगी, 45 वर्ष तक केतु का अशुभ प्रभाव मिले । लडके चाहे जितने हो, पर जीवित न रहें । घर पर कुत्तों के रोनो की आवाज आए ।
2. केतु 5 वें और गुरु 11 वें हो, तो सन्तान मरी हुई उत्पन्न हो । 48 वर्ष से पूर्व माता की मृत्यु, गुरु अशुभ व केतु भी अशुभ हो, आजीविका 24 वर्ष के उपरान्त प्राप्त हो ।
3. केतु 5 वें और चन्द्र या मंगल 3 रे 4 थे हो, तो केतु का अशुभ फल मिले ।

उपाय -

1. चन्द्र व मंगल की वस्तुएं दूध, खाण्ड का दान करें ।
2. गुरु का उपाय करें ।

केतु छठे भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. केतु की युति, बुध के साथ छठे हो, तो बुध केतु का शुभ फल मिले ।
2. गुरु शुभ हो, तो दीर्घायु, माता सुखी, परदेश में भी जीवन आराम से बीते ।

केतु छठे भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. मामा से कष्ट मिले, झगडालू व बीमार हो ।
2. गुरु अशुभ हो, तो यात्रा व्यर्थ में हो और शत्रु बिन बुलाएं आवें ।
3. केतु छठे और चन्द्र 2 रे हो, तो मामा व माता कष्ट में हो, बुढापा ठीक न बीते ।

उपाय -

1. कुत्ता पालें ।
2. सोने की अंगूठी बायें हाथ में पहनें ।
3. गुरु का उपाय करें ।

केतु सातवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. 24 वर्ष की आयु में ही 40 वर्ष की धन सम्पत्ति कमा ले । जैसे-जैसे सन्तान बढे वैसे-वैसे धन बढे । बहादुर व बच्चों का मित्र हो । शत्रु भयभीत रहे ।

केतु सातवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. अभिमानी, झूठा वायदा करे, गाली दे, बीमार रहे, 34 वर्ष की आयु तक शत्रु साथ लगे रहे ।
2. केतु 7 वें और लग्न में एक से अधिक ग्रह हो, तो सन्तान नष्ट हो जाए ।
3. केतु 7 वें और बुध अशुभ हो, तो निराशा, रोता रहे और उसका कफन बदबू युक्त हो ।
4. केतु के साथ बुध हो, तो 34 वें वर्ष के बाद शुत्र नष्ट कर दे । स्त्री व लडकी की ओर से मन अशांत रहे ।

उपाय -

1. गुरु का उपाय करें ।
2. केसर का तिलक लगाएं ।

केतु आठवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

मृत्यु का पूर्वाभास हो जाए । 34 वें वर्ष में पुत्र होगा इससे सपूर्व जीवित न रहे । यदि बुध 9 से 12 वें भाव में हो, तो 34 वर्ष के बाद सन्तान जीवित रहेगी । अपनी बहन या लडकी की विवाहोपरान्त लडका हो ।

केतु आठवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो

1. केतु 8 वें अशुभ हो, तो बुध, शुक्र, भी अशुभ होते हैं । जातक का चाल-चलन ठीक नहीं रहता है। पत्नी बीमार रहती है । 26 वें वर्ष में राहु, केतु, बुध, शनि भी अशुभ फल दें ।
2. केतु आठवें और बुध किसी भी भाव में हो, तो 29 से 40 वर्ष तक पुत्र उत्पन्न होगा । बुध व शुक्र अशुभ होने पर सन्तान विलम्ब से होती है ।
3. जातक स्त्री द्वेषी, बवासीर का रोगी व धोखेबाज होता है ।

उपाय-

1. गणेश उपासना करें । कुत्ते को रोटी दें । केसर का तिलक लगाये ।

केतु नौवें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

परिश्रम से धन कमायेगा । उन्नति होगी, स्थानान्तरण नहीं । जातक बहादुर, विश्वसनीय और धनी होगा । भाग्यशाली, आज्ञाकारी होगा । केतु अपना प्रभाव सातवें भाव में स्थित ग्रहों की आयु निकल जाने के बाद देता है । जीवन का अधिकांश भाग परदेश में बीतता है । केतु का शुभाशुभ फल गुरु की शुभाशुभता पर निर्भर करता है । पुत्र कम से कम तीन होंगे । जातक की 48 वर्ष की आयु तक पिता की स्थिति अच्छी हो ।

केतु नौवें व चन्द्र शुभ हो तो माता के कुटुम्ब का बेडा पार लगायेगा ।

केतु नौवें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

स्वास्थ्य ठीक न रहे । पाँव का दर्द, जोडों का दर्द,मूत्र रोग, राढ की हड्डी का रोग हो जाए ।
केतु 9वें और शत्रु ग्रह चन्द्र,मंगल 3रे हो तो लड़के मरते जायें ।

उपाय -

बहिन, बुआ या बेटी को दान दो ।

केतु 10वें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

जातक भाग्यवान, चुपचाप अपने काम से काम रखने वाला, अवसरवादी व पिता अल्पायु में चल बसे केतु की शुभाशुभ शनि की शुभाशुभ स्थिति पर निर्भर करता हो ।

1. केतु 10वें और शनि 6ठे हो तो प्रसिद्ध खिलाडी हो ।

2. केतु 10वें हो, शनि उत्तम हेा तो 24 वर्ष की आयु में लडके उत्पन्न हो, गुरु का शुभ फल हो और मिट्टी में भी स्वर्ण मिले ।

केतु 10वें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. केतु 10वें और शनि अशुभ हो तो केतु की सजीव वस्तुओं पर 24 से 28 वर्ष तक अशुभ फल हो । गृहस्थ जीवन दु:खी हो ।
2. केतु 10वें और शनि 4थे हो तो तीन लडके नष्ट होंगे पर धन कम न होगा ।

उपाय -

1. चाल-चलन ठीक रखें । गुरु का उपाय करें ।
2. चन्द्र का उपाय करें । परस्त्री गमन से बचना आवश्यक है ।

केतु 11वें भाव में शुभ स्थिति में हो, तो -

1. केतु 11वें और शनि तीसरे हो तो धन सम्पत्ति बहुत होगी ।
2. पैतृक सम्पत्ति स्वयं बनायें । 11, 23, 36, 48वें वर्ष में आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी हो । भाविष्य की चिन्ता न करें ।
3. केतु 11वें और बुध 3रे हो तो राजयोग हो ।
4. जातक भीरु होता है । भूत की अपेक्षा भविष्य की चिन्ता अधिक करे ।

केतु 11वें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. पेट का रोगी हो । भविष्य की चिन्ता करने से परेशानी बढे । 5, 11, 23, 35, 48वां वर्ष माता के लिये कष्टकारी हो । संतान जीवित न रहे । लडके के जन्म तक माता न रहेगी ।
2. केतु 11वें ओर राहु 5वें हो तो निर्धन होने पर भी संतान अच्छी हो । शुभ कार्य को जाते समय पीछे से आवाज अशुभ हो ।
3. केतु 11वें और बुध 3रे हो तो 11, 23, 36, 48वें वर्ष में चन्द्र का अशुभ फल हो ।
4. केतु 11वें और शनि अशुभ हो तो मकान व संतान दोनों की उन्नति न होगी । स्त्री जातक में यह स्थिति होने पर केतु अशुभ फल न दें ।

उपाय -

1. काला कुत्ता पालें ।
2. बुध की धातु या नग कनिष्ठका अँगुली में धारण करें ।

उन्नति होगी पर स्थानान्तरण नहीं होगा । जातक धनवान, सम्मनित, उच्च पदस्थ और शुभ कार्यों में खर्च करने वाला होता है । 24वें वर्ष में जब पुत्र उत्पन्न हो तो घर में धन-सम्पत्ति आनी प्रारम्भ हो । यदि 6ठे भाव में राहु के साथ बुध हो तो शुभ फल केतु का मिले । यदि 6ठे अकेला राहु हो तो धन बहुत आए । जीवन में विलासिता और दूसरे भौतिक सुख-साधन उपलब्ध हों ।

केतु 12वें भाव में अशुभ स्थिति में हो, तो -

1. जातक ऐय्याश, चरित्रहीन और संतान के लिए निकम्मा हो ।
2. केतु 12वें अशुभ हो तो और 6ठे राहु के साथ मंगल चन्द्र सूर्य या शुक्र हो तो 28, 32, 42, 25वें वर्ष में क्रमशः संतान न हो ।
3. केतु 12वें और चन्द्र हो तो एक ग्रह का फल अशुभ मिले ।

उपाय -

1. गणेश उपासना करें ।
2. संतान को कष्ट हो तो राहु का उपाय करें ।
3. चाल-चलन ठीक रखें ।
4. संतान की चिन्ता करें ।

अनुभूत प्रश्न विषयक-योगों पर विचार

दैवज्ञ - ज्योतिष संबंधी गणित का ज्ञाता हो, प्रश्न लग्न, आरूढ छत्र आदि का जिसे विचार हो, ग्रहों का बलाबल, केन्द्र, त्रिकोण आदि स्थान, ग्रहों का क्षेत्र, दृष्टि अवस्था, ग्रहों की मंद-शीघ्रगति-वक्री मार्गी, ग्रहों का अनेक योग, ग्रहों का नवांश-द्रेष्काण आदि का ज्ञान कर राशियों एवं ग्रहों के गुण धर्म, उनके शरीर पर प्रभाव, रोग आदि अनेक आवश्यक बातों का निर्णय कर अन्तरात्मा से उस पर विचार करता है, वह साधक दैवज्ञ प्रश्न का उचित उत्तर देने में समर्थ होता है ।

जातक और प्रश्न में भेद -

जातक और प्रश्न में कोई भेद नहीं है । जिस प्रकार लग्नकुण्डली से ग्रहों के आधार पर जातक का विचार होता है, उसी प्रकार प्रश्न कुण्डली से ग्रहों के आधार पर विचार किया जाता है ।

प्रश्नकर्ता -

जब कोई प्रश्न पूछने आता है, तो निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि उसके उत्तर देने में ये बातें सहायक हो सकती हैं ।

1. प्रश्नकर्ता के मुख से जो प्रथम वाक्य निकले, उसके आदि के अक्षर पर ध्यान देना चाहिये, क्योंकि इस आदि के अक्षर पर से ध्वज, धूम आदि 8 प्रकार से विचार कर, उनके ध्रुवांकों पर से फल का विचार होता है ।
2. प्रश्नकर्ता अपने शरीर का कोई भी अंग स्पर्श करे तो उससे संयुक्त आदि 8 प्रकार के फल का विचार होता है ।
3. प्रश्नकाल का ठीक समय नोट कर, उससे प्रश्नकुण्डली बनाकर उससे फल का निर्णय होता है । घडी के टाइम का स्थानीय समय में परिवर्तन कर उस स्थानिक समय का लग्न निकालकर, उस लग्न के आधार पर प्रश्न की कुण्डली बना लेना । यही प्रश्नकुण्डली है ।
4. प्रश्नकर्ता अपने से किस दिशा में बैठा है, इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए । इससे आरूढ़ लग्न, छत्रलग्न आदि निकाल कर फल के विचार में सहायता मिलती है ।
5. प्रश्न समय अपनी नासिका से कौन स्वर चल रहा है, उससे स्वरोदय के अनुसार विचार होता है ।
6. प्रश्नकर्ता समीप या दूर खड़ा है या बैठा है । भूमि पर या कोई आसन में बैठा है । मुख किस दिशा की ओर है । इन बातों के विचार की भी आवश्यकता पड सकती है ।
7. प्रश्नकर्ता की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति एवं चेष्टा ।
8. प्रश्नसमय का वाता वरण या परिस्थिति एवं शगुन यदि कोई दृष्टिगोचर हो ।
9. उपरोक्त बातें फल निर्णय में सहायक हो सकती है, परन्तु मुख्य बात यह है कि प्रश्नसमय की इष्ट कुण्डली बना लेनी चाहिए और उस समय के ग्रह स्पष्ट कर लेना । नवांश एवं द्रेष्काण कुण्डली भी बना लेना चाहिए जिनकी प्रायः आवश्यकता पड़ती है ।

प्रश्न पूछने की रीति -

ज्योतिष को भेंट स्वरूप फल-पुष्प आदि मांगलिक पदार्थ एवं कुछ द्रव्य हाथ में लेकर पूर्वाभिमुख स्थित होकर प्रणाम कर अल्प शब्दों में प्रातः काल एक ही प्रश्न पूछे ।
प्रच्छक सरल या वक्र चित्त का है

कुटिल प्रश्न -

1. लग्न में चंद्र, केन्द्र में शनि हो, बुध अस्तंगत हो तथा चंद्र को मंगल बुध की पूर्ण दृष्टि हो ।
2. लग्न में पाप ग्रह हो ।
3. बुध या गुरु सप्तमेश को शत्रु दृष्टि से देखें ।

सरल चित्त -

1. लग्न में शुभग्रह हो ।
2. लग्न और सप्तम में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो व चंद्र पर बुध, गुरु की दृष्टि हो ।
3. बुध या गुरु सप्तमेश को मित्रदृष्टि से देखें ।
4. लग्न व सप्तम में शुभ ग्रह हो ।
5. सप्तम में शुभग्रह की दृष्टि हो या चंद्र पर गुरु की दृष्टि हो या चंद्र गुरु एक राशि पर हों ।

प्रश्न का उत्तर नहीं देना -

प्रश्न करने वाला धूर्त हो, पाखण्डी हो, उपहास करने वाला हो, श्रद्धाहीन हो या अविश्वासी हो, ऐसा जब प्रतीत हो, तो उत्तर नहीं देना चाहिए ।

अनेक प्रश्न -

एक प्रश्न पूछा जाता है तो उत्तर सत्य निकलता है । एक लग्न में बहुत प्रश्न करने पर बहुधा सत्य नहीं निकलता । यदि कोई प्रश्नों का उत्तर देना है, तो इस प्रकार विचार करें ।

पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पाँचवाँ
लग्न से	चंद्र स्थान से	सूर्य से	गुरु से	बुध शुक्र में जो बली हो ।

इनकी राशियों के अनुसार जो राशियों का रंग, रूप, आकार, गुण, धातु राशियों की संज्ञायें जो बताया है व ग्रहस्थिति व ग्रहों की संज्ञा पर भी विचार कर फल का निर्णय करना ।

कार्यसिद्धि विचार -

लग्नेश - चतुर्थ, पंचम और दशम में सिद्धि
दशम में उच्च का मंगल या सूर्य हो, तो अवश्य = सिद्ध हो ।
पंचमेश और चतुर्थेश दशम में = कार्यसिद्धि ।
लग्न मंगल गुरु से दृष्ट हो = कार्यसिद्धि ।

कार्य हानि -

ज्योतिषी के बायें बाजू बैठकर प्रश्न करें ।

ज्योतिषी के बहुत दूर बैठकर प्रश्न करें ।
ज्योतिषी के बिल्कुल समीप बैठकर प्रश्न करें ।
उच्च भूमि से नीचे भूमि में खिसक कर आ जायें या उठकर बैठे । पापी आरूढ़ ग्रह की दिशा में बैठकर प्रश्न करें ।

अंग स्पर्श से -

कार्यसिद्धि - प्रच्छक अपने सिर का दाहिना भाग, दाहिनी आँख, दाहिनी भौंह, दाहिना कंधा, कर्ण, मुख, स्तन का अग्रभाग, पेट या दाहिना पैर का स्पर्श करे ।
कार्यसिद्धि न हो - यदि उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य अंगों का स्पर्श करे, तो कार्य सिद्ध न हो ।

मुख से निकले अक्षर पर से विचार -

क्रम	आय	वर्ग	स्वामी	फल	दान	कितने समय मे होगा
1.	ध्वज	अवर्ग	सूर्य	कार्यसिद्धि	गेंहूँ	7 दिन
2.	धूम्र	कवर्ग	मंगल	कार्य नहीं	तिल	1 वर्ष
3.	सिंह	चवर्ग	शुक्र	सिद्ध हो	पीतवस्त्र	पक्ष
4.	श्वान	टवर्ग	बुध	सिद्ध हो	बलिदान	6 मास
5.	वृष	तवर्ग	गुरु	सिद्ध हो	चावल	मास
6.	खर	पवर्ग	शनि	नहीं हो	चना	6 मास
7.	गज	यवर्ग	चन्द्र	सिद्ध हो	गुड़	3 मास
8.	ध्वांक्ष	शवर्ग	चन्द्र	नहीं हो	यव	1 वर्ष

किस भाव से क्या-क्या विचार करना -

सप्तम स्थान से चोर

चतुर्थ से उसकी प्राप्ति । लग्न से द्रव्य । चंद्रमा धन का स्वामी है और अष्टम स्थान चोर का धन है । जिसकी चोरी हुई हो, उसे लग्नेश समझो । अर्थात् सप्तम चोर का स्थान है । उससे धनलाभ संभव है और चतुर्थ चुराया हुआ धन का स्थान है । लग्न और चंद्र दोनों के स्वामी हैं । चोरी जाने के पहले धन किस दिशा में रखा था ।

मेष मीन वृष	3-4	5	6-7	8	9-10	11	= लग्न
ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर = दिशा

नष्ट माला कहाँ है -

जो पदार्थ नष्ट हो उसके अक्षर गिनकर योग करे, फिर 3अंक और मिलाकर 5 का भाग दें, शेष से फल विचारना ।
शेष 1 = घर में हैं, 2 = घर के बाहर चला गया, 3 = श्यन स्थान में, 4 = अपने से समीप अन्य स्थान में, 5 = अपने आप ही धन चुराया होगा अन्य कोई नहीं ।

माल मिले -

चंद्र लग्नेश का लग्नेश चंद्र को देखें ।
लग्नेश या लाभेश लाभ में हो चन्द्र दृष्ट हो ।

बलवान् गुरु लग्न में हो ।
बलवान् लग्नेश लग्न में हो, शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो ।
लग्न या दशम में बलवान् चंद हो ।

धन नहीं मिले -

उदय लग्न चर हो तो माल नहीं मिले ।
उदय लग्न द्विस्वभाव हो तो माल नहीं मिले ।
सप्तम घर में 1, 6, 10 राशि हो ।
धनेश अष्टम या सप्तम हो ।
मंगल सप्तम या अष्टम हो ।
लग्न में राहु अष्टम सूर्य हो ।
सूर्य लग्न में चंद्रमा सप्तम हो ।

माल नहीं मिले -

अष्टमेश सप्तम या अष्टम भाव में हो ।
लग्नेश सप्तम में वक्री सप्तमेश लग्न में हो ।
लाभेश अष्टमेश युक्त हो ।
धनेश सूर्य से साथ अस्त हो चोर मिले, धन नहीं मिले ।

सुनाई दे पर मिले नहीं -

मकर लग्न हो और शनि अपनी राशि को न देखे तो चोरी की वस्तु सुनने को मिले पर मिले नहीं ।
धनेश और लग्नेश पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो ।

माल मिलने का समय -

जिस राशि में चंद्र हो और चंद्र से जितनी दूर लग्न हो, उतने दिनों की कल्पना करना । चर राशि = एक गुना । स्थिर में दुगुना । द्विस्वभाव में = तिगुना समय होगा ।
जो सबसे बलीग्रह हो उसकी जो अवधि है, उसी में चोरी मिलेगी । बलीग्रह की किरणों की संख्या से दिन वर्ष आदि ग्रह के अनुसार जो भी हो लेना चाहिए ।

खर्च -

12वां चन्द्र हो तो चोरी गई चीज खर्च में आ गई । चन्द्र निबर्ल हो तो थोडा सा माल बचा है ।

चोर मिले या पकडा जाए -

सप्तमेश सूर्य सान्निध्य से अस्तंगत हो ।
सप्तमेश पापयुक्त केन्द्र में हो ।
धनेश सूर्य के साथ व अस्तंगत हो ।
दशमेश लग्नेश का इत्थशाल हो तो राज्य से धनसहित चोर पकडा जाये ।
लग्नेश दशमेश साथ हो तो राज्य द्वारा चोरी मिले ।
लग्नेश सप्तमेश साथ हो तो राजद्वारा धन सहित चोर मिले ।
चन्द्रमा और सप्तमेश अस्तंगत हो धन सहित चोर मिले ।

चोर स्वतः धन लौटा दे -

लग्नेश लग्न में हो ।
लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल हो ।

चोरी का माल विदेश गया -

या 9 या 3 घर में धनेश हो ।
या लग्न में चर राशि का चन्द्र हो ।
धनेश अष्टमेश का इत्थशाल हो, तो राजा के कारण चोर नहीं मिलेगा ।
आपस का चोर माल घर के समीप -
स्थिर लग्न या नवांश हो या वर्गोत्तम हो, तो आपस ही का कोई मनुष्य चोर है । माल अपने घर के समीप ही होगा । या स्वजातीय या उच्चजातीय व्यक्ति या दास चोर होगा या माल अपने ही घर में होगा ।

घर का कौन चोर है -

सप्तमेश के आधार पर चोर या उसके सहायक की कल्पना करना -गृहस्वामी या पिता चोर = सप्तमेश सूर्य हो ।

माता	सप्तमेश	चन्द्र	;g xzg uhp ds gks rc
पुत्र या भाई	सप्तमेश	मंगल	
स्वजन या मित्र	सप्तमेश	बुध	
गृह का प्रधान	सप्तमेश	गुरु	
स्त्री सप्तमेश		शुक्र	

पुत्र या दास	सप्तमेश शनि हो
गाने वाला	सप्तमेश लग्न और चंद्र को शुक्र देखें ।

चोर स्त्री पुरुष या नपुंसक है -

आर्द्रा से स्वाती तक 10 नक्षत्र हों = स्त्री चोर
विशाखा अनुराधा ज्येष्ठ = नपुंसक चोर
शेष मूल से खेती तक और अश्वनी से मृग तक = पुरुष चोर है ।

चोर की जाति -

लग्नेश या सप्तमेश सूर्य = क्षत्रिय । चन्द्र = वैश्य, मंगल = क्षत्रिय, बुध = शूद्र, गुरु = ब्राह्मण, शुक्र = ब्राह्मण, शनि = अंत्यज ।

सप्तम में जो ग्रह बलिग्रह हो या सप्तमेश से चोरी की जाति जानना चाहिये, संयुक्त ग्रह से चोर के साथी की जाति जानना चाहिये ।

राशि अनुसार जाति -

लग्न मेष = ब्राह्मण चोर, वृष = क्षत्रिय, मिथुन = वैश्य, कर्क = शूद्र, अंत्यज ।
कन्या = स्त्री चोर, तुला = भाई मित्र, वृश्चिक = सेवक, धनु = भाई या स्त्री, मकर = वैश्य, कुम्भ = चूहा, मीन = पृथ्वी या धरातल में वस्तु ।

चोर के घर की दिशा -

लग्न से चन्द्र जिस दिशा में हो वह जिस दिशा का स्वामी हो, उस दिशा की ओर चोर का घर होगा ।

चन्द्रमा लग्न = पूर्व, चतुर्थ = उत्तर, सप्तम = पश्चिम, दशम= दक्षिण दिशा में जावें ।

परम लाभ -

लग्नेश या लाभेश लाभस्थान में हो, चन्द्र से दृष्ट हो, चन्द्र लग्नेश धनेश परस्पर एक-दूसरे देखते हों । चतुर्थ या सप्तम में चन्द्र, दशम में सूर्य, लग्न में शुभग्रह हो ।

सट्टा या लाटरी -

पंच में चन्द्र हो, शुक्र की दृष्टि हो, तो लाटरी आदि मिले ।
लग्नेश शुभग्रह होकर धनस्थान में हो, धनेश अष्टम स्थान में हो, तो गडा धन मिले ।

युद्ध या राजद्वार आदि में जय-पराजय -

चर राशि - शत्रु से पराजय लग्न में ।
जय - बुध, गुरु, शुक्र नवम में हो ।

वाद-विवाद में जीत -

विवाद में जीत - बलवान् क्रूरग्रह लग्न में हो।
विवाद में नहीं जीते - लग्न में नींच व अस्तंगत पापग्रह हो ।
पराजय - सप्तम स्थान में नींच ग्रह हो ।

बंदी छूटेगा या नहीं -
सौम्यग्रह लग्न में हो तो शीघ्र छूटे ।
तृतीयेश और नवमेश साथ हो ।
स्थान लाभ = दशम सप्तम घर में शुभग्रह हो तो स्थान लाभ ।
नौकर आप ही आ जाये = सप्तमेश लग्न में हो ।
बेचना अच्छा है = लग्न बलवान् हो ।

धनेश अस्त सहो, तो चोर मिले धन नहीं मिले । पाप दृष्टियुक्त चन्द्र हो तो चोर के धन नहीं रहे ।

चर लग्न या चर नवमांश हो, तो माल बाहर के आदमी के पास दूर है । स्थिर लग्न, स्थिर नवमांश या वर्गोत्तम में आपस का ही कोई व्यक्ति चोर है । स्वजातीय उच्च जाति का या नौकर चोर होगा, चोर का माल नजदीक में है । धनेश अष्टमेश या इत्थसाल होने पर चोर पकडा नहीं जाये ।

घर का कौन चार है -

सूर्यादिग्रहों में सप्तमेश नीच का हो, तो सूर्य से पिता, चन्द्र से माता, मंगल से पुत्र या भाई, बुध से स्वजन या मित्र गुरु से घर का मुखिया, शुक्र से स्त्री, शनि से नौकर या पुत्र, लग्न और चन्द्र को शुक्र हो, तो गाने वाला चोर है । चोरी की वस्तु आर्द्रा से स्वाती नक्षत्र तक चोरी हो तो स्त्री चोर, मूल से खेती तक आश्विनी से मृघशिर तक पुरुष चोर हो ।

चोर की जाति -

लग्नेश या सप्तमेश सूर्य मंगल हो, तो क्षत्रिय, गुरु शुक्र से ब्राह्मण, चन्द्र से वैश्य, बुध से शूद्र, शनि से अंत्यज चोर होता है ।

यदि कोई वस्तु खो गई हो, तो लग्न में पूर्णचन्द्र पर गुरु या शुक्र की दृष्टि हो, तो वस्तु शीघ्र मिले । लग्न से 2, 3, 5 स्थान में शुभ ग्रह होने पर भी शीघ्र मिले । पृष्ठोदय लग्न में भी शीघ्र मिले । लग्न में सप्तमेश और सप्तम में लग्नेश हो, तब भी शीघ्र मिले ।

चौथे घर से नीचे के स्थानों में सूर्य चन्द्र हो तो वस्तु नहीं मिले ।

चोरी गये वस्तु का प्रश्न -

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिरने पर 1 से 4 नक्षत्र तक वन में , इसके आगे 6 नक्षत्र तक बगीचे के मार्ग में, इसके आगे 7 नक्षत्र तक पशु अपने घर आ जाये, इसके आगे 2 नक्षत्र में नहीं मिले, इसके आगे 1 नक्षत्र में नहीं मिले , इसके आगे 1 नक्षत्र में मर जाये ।

धन लाभ प्रश्न -

1, 2, 4, 5 भावों में चन्द्र लग्नेश व धनेश का योग हो अथवा परस्पर दृष्टि हो, तो धन लाभ । लग्नेश धनेश लग्न में या लग्नेश लाभेश लाभ में । द्वितीयेश धन भाव में या लग्न में हो । चतुर्थ या सप्तम में चंद्र दशम में सूर्य लग्न में शुभ ग्रह हो । लग्नेश और लाभेश पर चंद्र की दृष्टि हो, तो इन योगों में धन का लाभ होता है ।

सट्टा या लाटरी से धन लाभ के योग -

लग्नेश का चतुर्थेश, पंचमेश या नवमेश दशमेश लाभेश में से किसी से संबंध हो जाए ।

पंचम में चन्द्र शुक्र से दृष्ट हो । द्वितीयेश लाभेश चतुर्थ में और शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रह से दृष्ट हो । राहु, केतु, बुध नवम या पंचम में हो ।

भूमिगत द्रव्य लाभ -

द्वितीयेश और चतुर्थेश शुभग्रह की राशि में शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो । लाभेश और धनेश चतुर्थ में और चतुर्थेश शुभ ग्रह के साथ शुभ ग्रह से दृष्ट हो । लाभेश चतुर्थ में शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो लग्नेश धन भाव में धनेश लाभ में लाभेश लग्न में हो । लग्नेश शुभ ग्रह होकर धन भाव में हो और धनेश अष्टम स्थान में हो । इन योगों में भूमि में गड़ा हुआ धन मिले ।

विवाह सम्बधी प्रश्न -

प्रश्न लग्न में केन्द्र या त्रिकोण में शुभग्रह हो तो विवाह शीघ्र हो । समराशि में शनि हो, तो विवाह हो । 4, 5, 10, 11 भाव में स्थित चंद्र पर दशमेश या सूर्य की दृष्टि हो तो विवाह हो । चंद्रमा 3, 5, 6, 7, 11 भाव में नहीं हो और स्थित केंद्र त्रिकोण में पापग्रह हो तो विवाह नहीं हो । शनि सप्तम भाव न हो तो विवाह नहीं हो । लग्न से 2, 3, 8, 10, 12 भाव में शनि हो तो वर को वधू मिले । 2, 7, 10, 11 भाव में शुक्र शुभ ग्रह से दृष्ट हो । लग्न से विषम स्थान में अकेला शनि हो तो कन्या को वर मिले । पुरुष लग्न हो लग्न या लाभ में गुरु हो तो कन्या को वर मिले ।

विवाह होने के अन्य योग -

लग्नेश लग्न में सप्तमेश सप्तम में हो या लग्नेश धन भाव में हो । सप्तम और द्वितीय भाव शुभ दृष्ट हो या सप्तमेश शुभग्रह युक्त, 2 या 7 भाव में हो । सप्तम में लग्नेश या चन्द्र हो विवाह नहीं होने के अन्य योग - सप्तम में शनि चन्द्र हों । शुक्र व चन्द्र पर मंगल शनि की दृष्टि हो । सप्तमेश में पापग्रह हों । पंचम में चन्द्र हो ओर 7, 12 घर में 2, 2 पाप हों ।

विवाह कब होगा -

लग्नेश और सप्तमेश की राशि का योग करने पर जो राशि हो, उस राशि मे गोचर जब गुरु आये । जन्म राशि अष्टमेश की राशि का योग करने जो राशि आये उसमें जब गोचर में गुरु आये । सप्तम या सप्तमेश पर शुभग्रह की दृष्टि हो, तो शीघ्र विवाह हो । शुक्र जिस राशि में हो, उस राशि के स्वामी की दशा अन्तर्दशा में विवाह हो ।

लग्नेश का नवमांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में चंद्र गुरु हों तब विवाह हो ।

शुक्र से सप्तमेश की जो दिशा हो उसी दिशा में विवाह होगा ।

सप्तम भाव में यदि ग्रह हो, उस भाव की राशि की जो दिशा हो उसमें विवाह होगा ।

यदि वह राशि चर हो, दूर देश में स्थिर हो, समीप में द्विस्वभाव हो तो कुछ दूरी पर विवाह होगा ।

स्त्री का स्वभाव व आचरण -

पतिव्रता योग - लग्न से 3, 7, 10, 11 भाव में चन्द्र गुरु से युक्त दृष्ट हो ।

चंद्रमा, सूर्य या शुक्र से युक्त दृष्ट हो । लग्नेश और चन्द्र का गुरु से इत्थशाल हो । केन्द्र त्रिकोण में गुरु हो ।

पंचम या केंद्र बुध गुरु हो या केन्द्र त्रिकोण व लाभ में शुभग्रह हों ता स्त्री भाग्यवान् होगी ।

षष्ठ भाव में शुक्र अखण्ड सुहागिन । षष्ठ भाव में बुध झगडा हो । षष्ठ भाव में चन्द्र बुध को छोडकर अन्य ग्रह हो तो स्त्री भाग्यवान् हो ।

दूसरा पति करे - सूर्य मंगल अष्टम में हो । दूसरे भाव में राहु हो । केन्द्र राहु से युक्त दृष्ट हो । चन्द्र शनि का योग हो । मंगल शुक्र से युक्त दृष्ट हो । लग्नेश सप्तम में शत्रुक्षेत्री हो । दशम में शुक्र हो । गुरु, बुध और मंगल से युक्त हो, तो बाल्यावस्था में परपुरुष के संग हो ।

स्त्री पुरुष का संबंध कैसा रहेगा -

दोनों में मित्रता - सप्तमेश लग्नेश लग्न में या सप्तम में ।
स्त्री आज्ञाकारिणी - लग्न में लग्नेश हो ।
पति स्त्री का आज्ञाकारी - लग्नेश सप्तम हो ।
पति स्त्री के धन को भोगे - चतुर्थ स्थान शुभग्रहों से दृष्ट हो ।
पति स्त्री को सब धन दे - चतुर्थ स्थान शुभग्रहों से दृष्ट हो ।

रूठी स्त्री लौटेगी या नहीं -

लौट आए - पूर्ण चन्द्र सूर्य से दृष्ट हो ।
नहीं लौटे - सूर्य 1-2-3 घर में हो, शुक्र 5-6-7 घर में हो ।

गर्भ है या नहीं -

लग्न स्थिर हो या लग्न में बुध हो या बुध की दृष्टि हो ।
चन्द्र, सूर्य और शुक्र तीनों एकत्र हो ।
लग्न से तीसरा शुक्र, नवम सूर्य, पंचम चन्द्र हो ।
गर्भ नहीं - व्ययेश शुभग्रह युक्त व दृष्ट केंद्र में हो ।

कितने मास का गर्भ है -

लग्न बली शुक्र जितने स्थान में हो उतने ही महीने का ।
जो नवम स्थान से ऊपर शुक्र हो तो पंचम भाव से शुक्र तक भाव गिनकर गर्भमास कहे ।
प्रश्न में चन्द्रमा जिस द्वादशांश में हो उसके तुल्य राशिस्थ चन्द्रमा में नवम या दशम मास में जन्म होगा ।

पुत्र या कन्या -

लग्न से 3, 9, 10, 11 घर में सूर्य शनि हो, तो पुत्र ।
लग्न और लग्नेश पुरुष राशि या विषम राशि के नवांश में हो तथा विषम राशि में शनि हो, तो पुत्र होगा ।
सूर्य लग्न में चर राशि का हो, तो पुत्र होगा ।

रोग विचार -

रोग नाश - लग्नेश या चन्द्र का शुभग्रह से इत्थशाल हो ।
रोग नाश - 9, 3, 6, 11 में शुभग्रह हो ।
रोग नाश - स्वगृही चंद्र 10 या 4थे घर में हों ।
रोग नाश - दशमेश लग्नेश की मित्रता हो ।
रोग में रोग - लग्न द्विस्वभाव हो, तो रोग में दूसरा रोग हो ।
रोग बढ़े - लग्न में पाप ग्रह हो ।

वैद्य और औषधि विचार -

वैद्य से लाभ - लग्न में शुभग्रह हो तो वैद्य की दवा से लाभ हो ।
दवा से लाभ - चतुर्थ में शुभग्रह हो तो अच्छे वैद्य की दवा से लाभ हो ।

दोष विचार -

दोष असाध्य - चन्द्र और गुरु निर्बल हो तो रोग असाध्य हो ।
किसके दोष से रोग - 8, 12 स्थान में राहु - प्रेत दोष से ।
गुरु पितर दोष । चन्द्र - जलदेवी । सूर्य - देवी । शनि - कुल देवता । बुध - भूत प्रेत बाधा । मंगल - शाकिनी दोष । शुक्र - जलदेवी का दोष । ईश्वर भक्ति से रहित ये दोष होते हैं ।

रोगी की मृत्यु -

1, 7, 8 घर में पापग्रह निर्बल हो ।
चन्द्रमा 4-8 घर में 2 पापग्रह हों ।
लग्न में अष्टमेश हो चन्द्र अष्टम हो ।

यात्रा की चिंता, मेरा जाना होगा या नहीं -

जाना होगा - लग्न चन्द्र चर राशि का होकर सौम्य ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जाना होगा, जय प्राप्त होगा ।
दशम या चतुर्थ में पापग्रह हो ।
लग्न लग्नेश नवमेश चर राशि में हो ।
शीघ्र जाना होगा - लग्नेश या चन्द्रमा नवम घर में हो ।
लग्न व चंद्र स्थिर राशि में हो सौम्य ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो जाना न हो ।
दशम व चतुर्थ में सौम्यग्रह हो ।
विघ्न - धनेश वक्री हो तो कार्य सिद्ध नहीं हो ।
यात्रा में सुख - दशम में शुभग्रह - कार्यसिद्ध । सप्तम में शुभग्रह - सुख से गमन ।
चतुर्थ में शुभग्रह 7 कार्य का परिणाम शुभ होगा ।
अष्टम में शुक्र बुध - सुख मिले ।

यात्रा में कार्यसिद्ध होगी या नहीं -

लग्न में शुभग्रह हो, तो कार्यसिद्ध से सुख हो ।
चतुर्थ में शुभग्रह हो, तो कार्यसिद्ध जय सुख ।
शुभग्रह केंद्र त्रिकोण में हो तो शुभ कार्यसिद्ध हो ।

यात्री कब लौटेगा -

जब शुभग्रह लग्न से तीसरे स्थान में पहुँचे तब यात्री लौटेगा ।
जब चन्द्रमा सप्तम घर छोड़कर केन्द्र से आगे बढे उस समय लौटेगा ।
जब सप्तमेश लग्न में आये या लग्नेश से इत्थशाल करे तब लौटेगा ।
चर लग्न हो तो विशेष फल होगा ।
लग्न से सप्तम स्थान का स्वामी जब वक्री हो ।

यात्री जीवित है या मर गया -

यात्री वही है जीवित है - लग्न स्थिर हो, तो परदेसी जीवित है और वहीं पर है ।
बंधन - शनि केंद्र या त्रिकोण में पापराशि में हो पापग्रह से दृष्ट हो, तो अवश्य बंधन हो ।
शस्त्र से मृत्यु - अष्टम में मंगल हो तथा चंद्रमा पर शनि की दृष्टि हो ।

खेत से लाभ या हानि -

खेती से लाभ - लग्न शुभग्रह हो ।
अच्छी खेती - सप्तम स्थान में शुभग्रह हो ।
अन्न आदि अच्छे हो - दशमेश दशम हो शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो वृक्ष, अन्न आदि अच्छे हो ।
दशमेश 10 या 7 घर में शुभग्रह युक्त या दृष्ट हो, तो बगीचा, खेत आदि में सफल हो ।
पुराने वृक्ष अच्छे रहे - दशमेश वक्री न होकर अस्त हो ।
कृषि खराब - सप्तम में पाप ग्रह हो, तो कृषि खराब हो ।
कृषि में चोर आदि उपद्रव - लग्न में पापग्रह हो, तो कृषक को चोर आदि का उपद्रव होगा-हानि होगी ।
वृक्षों का नाश - चर लग्न दशमेश दृष्ट हो ।
वृक्ष, खेत आदि नाश - वक्री दशमेश शुभग्रह हो और वक्री ग्रह से युक्त हो ।

भूमि लाभ हो -

भूमि लाभ - लग्नेश चंद्र और चतुर्थेश परस्पर इत्थशाली हो व एक ही स्थान में हो, तो भूमि लाभ हो ।
7 और 10वें भाव में शुभग्रह हो, तो भूमि वापिस मिले ।

भाड़ा या किराया विचार -

बहुत भाड़ा मिले - केन्द्र में शुभग्रह हो, तो धन प्राप्ति हो । पापग्रह हो, तो धन प्राप्त न हो ।
भाड़ा न मिले - दशम में पापग्रह हो ।

फसल विचार -

शरदकाल में धान्य की वृद्धि - वृष के सूर्य के प्रवेश समय 2, 11, 5, 8 राशियों में शुभग्रह हो और 6-10, 7, 4 राशि पर पापग्रह हो, तो धान्य की वृद्धि हो ।
वृषार्क प्रवेश समय चन्द्र तथा गुरु बली होकर 5-11, 8 राशि पर हो 5-8-12 राशि पर हो ।
सूखा पड़े - वृषार्क प्रवेश समय 8-9-2 राशि पर पापग्रह हो या 3-8-1 राशि पर पापग्रह शुभग्रह का योग दृष्टि रहित हो ।
शरद का अन्न वृद्धि - मेषार्क प्रवेश में बुध और शुक्र मीन पर और चन्द्र गुरु बलवान् होकर केंद्र में हो शुभग्रह युक्त या दृष्टि हो ।

अकाल-सुकाल विचार -

भाव सस्ता - उदय लग्न और दशम में शुभग्रह हो ।
अकाल - मेषार्क प्रवेश या प्रश्न लग्न का स्वामी पापग्रह हो, पापाक्रांत बलरहित हो, तो राज भय हो, अन्न थोडा हो भाव मँहगा हो ।
अन्न नाश - वृश्चिक का सूर्य पापग्रहों के बीच हो तथा सप्तम में पापग्रह हो ।
फसल नष्ट - सप्तम केंद्र में वृश्चिक के सूर्य से 2 पापग्रह हो, तो फसल नष्ट हो यदि शुभग्रह की दृष्टि हो, तो कहीं-कहीं फसल अच्छी भी होगी ।
कप के लिए भूमि झिर (सोती) आदि विचार -
बहुत जल - केंद्र में शुक्र या चंद्र हो बहुत जल निकले ।
केंद्र शनि या राहु से युक्त या दृष्ट हो तो एक झिर में बहुत जल निकले योग कारक ग्रह जिस राशि में हो उसके स्वभाव अनुकूल और उसकी दिशा अनुसार जल का विचार करे ।
केंद्र में चंद्र गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो अपार जल निकले ।

जल कैसा निकलेगा -

अच्छा जल - केंद्र में गुरु चन्द्र हो या इनसे दृष्ट हो ।
थोडा खारा - केंद्र में चन्द्र बुध हो या इनसे दृष्ट हो ।
खारा जल - केंद्र में सूर्य परिवेष और धनुष हो ।

कुंडली जीवित या मृत की है -

जन्मलग्न + अष्टम लग्न + प्रश्नलग्न = ग अष्टमेश ÷ लग्नेश की राशि = शेष - विषम = जीवित ।
जन्मलग्न + अष्टम की राशि + प्रश्नकाल ग जन्म के अष्टमेश की राशि = शेष विषम = जीवित, सम =मृतक की ।
स्त्री या पुरुष की कुण्डली है -
सूर्य की राशि + राहु की राशि + लग्न की राशि अंक के योग में ÷4=शेष सम-2= स्त्री । विषम 1-3 = पुरुष ।
लग्न + सूर्य + राहु के राशि अंक ÷ 30 शेष विषम = स्त्री ।
प्रश्न के वर्ण और मात्रा का योग + वर्तमान तिथि + वार + नक्षत्र ÷ 7=शेष सम = स्त्री । विषम पुरुष ध्वज धूम आदि 8 प्रकार से आय का फल रिचार -

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
आय के नाम	ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
स्वामी ग्रह	सूर्य	शुक्र	मंगल	शनि	गुरु	चन्द्र	राहु	बुध

इन आय के वर्ग के प्रत्येक अक्षर की पृथक्-पृथक् संख्या दी है । प्रश्नकर्ता का बालक आदि के मुख से प्रश्न करते समय जो अक्षर आदि में हो, उसको लेकर उनकी मात्रा अनग कर सबके अंकों का योग करना, वह अक्षर पिंड कहलाता है । या प्रच्छक से फूल-फूल नदी या देवता का नाम लेने को कहे, उससे अक्षर पिंड बना लवें । जैसे किसी ने फूल का नाम 'गुलाब' लिया इसके अंक जोडे ग+उ+ल+आ+ब+अ = इनके पृथक् क्षेपक होते हैं ।
21+15+13+21+26+12 = 108 और विशेष क्रिया द्वारा उत्तर प्राप्त होता है । जैसे किसी ने प्रश्न किया - वह जीवित है या मर गया ? इसका क्षेपक 40 है । पिंड 108 + क्षेपक 40 = 148 ÷ 3 = शेष 1 = जीवित है । 2 = मर गया । 3 = अति कष्ट में है ।

आय के वर्ग और उनके अंक -

आय	वर्ग						वर्ग के अक्षर					
1 ध्वज	अ	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
	अंक	12	21	11	18	15	22	18	32	25	19	23
2 धूम्र	क	क	ख	ग	घ	ङ						
	अंक	13	11	21	30	10						
3 सिंह	च	च	छ	ज	झ	'						
	अंक	15	21	23	26	20						
4 श्वान	ट	ट	ठ	ड	ढ	ण						
	अंक	10	13	22	35	45						
5 वृष	त	त	थ	द	ध	न						
	अंक	14	18	17	13	35						
6 खर	प	प	फ	ब	भ	म						
	अंक	28	18	26	27	86						
7 गज	य	य	र	ल	व							
	अंक	16	13	13	35							

8 ध्वांक्ष	श	श	ष	स	ह	
	अंक	26	35	35	12	

प्रच्छक के मुख में आदि शब्द पर ध्यान रहे, तो उससे प्रातः काल हो तो ब्राह्मण से पुष्प का नाम लेने को कहे । मध्याह में शूद्र से फल का नाम तीसरा प्रहर हो तो वैश्य से देवता का नाम, संध्या हो तो क्षत्रिय से कोई नदी का नाम लेने के कहे और उस नाम के अक्षरों पर से पिंडाक बना भिन्न-भिन्न प्रश्नों के अनुसार उनके क्षेपक द्वारा प्रश्न का उत्तर बताना पडता है ।

भोजन संबंधी प्रश्न -

विचार-भोजन दाता = लग्नेश । भोजन योग्य अन्न चतुर्थेश । भोजन की इच्छा, भूख, रुचि = सप्तमेश । भोजन करने वाला = दशमेश । भोजन चिंता दिन प्रवेश लग्न से या प्रश्नलग्न से । इनके बलाबल से प्राप्ति या अप्राप्ति 'का विचार करना । व इनकी प्रकृति-गुण आदि पर भी विचार करे।
जैसे लग्नेश बली शुभ स्थानगत - श्रद्धा से दाता भोजन देवे यदि निर्बल हो, तो अश्रद्धा (तिरस्कार) आदि से देवे ।
चतुर्थेश बली = भोजन अन्न अच्छा मिले । निर्बल हो तो न मिले या निंद्य अन्न मिले ।
सप्तमेश बली - भोजन में रुचि अच्छी हो । निर्बल = थोडी भूख, अस्तंगत = मंदाग्नि।
दशमेश बली - भोक्ता प्रसन्नतापूर्वक भोजन करेगा । यदि निर्बल हो तो भोजन में विघ्न आदि हो । इनका शुभयोग से शुभ फल । पापयोग दृष्टि से अशुभ फल होता है । इसका भी विचार करें ।
सुभोजन - लग्न या लाभ में शुभग्रह युक्त दृष्टि हो तो सुभोजन मीठा, घृत-दही-दूध आदि से युक्त ।
लग्न में गुरु और शुक्र हो, तो क्लेश स्थान में भी सुभोजन ।
लग्न और चतुर्थ घर शुभग्रह से युक्त हो ।
अच्छा रुचि से भोजन - विषम राशि का शुभाग्रह देखें ।
थोड़ा भोजन - समराशि पर पापदृष्टि हो ।
अच्छा भोजन - चतुर्थेश चतुर्थ में बलवान् हो या स्वगृही हो ।
कष्ट से भोजन - चतुर्थ में पापग्रह हो ।
हर्ष युक्त भोजन - अन्न सूचक ग्रह या राशि पर शुभदृष्टि हो तो आनंद से । यदि पापदृष्टि योग = क्रोध से भोजन मिले ।
कितने बार भोजन - चतुर्थ में चरराशि = कई बार । स्थिर = 1 बार । द्विस्वभाव = 2बार।
ठंडा या गरम भोजन - दिन प्रवेश लग्न या प्रश्नलग्न से चंद्र दशम = गरम । मंगल दशम = ठंडा या बासी भोजन ।
भोजन नहीं मिले - लग्न में राहु व शनि हो, सूर्य से दृष्ट हो, तो यत्न करने पर भी उस दिन भोजन नहीं मिले और शस्त्र का भय भी होना संभव है ।
उपवास व रात्रि में कुभोजन - यदि लग्न सूर्य से युक्त या दृष्ट हो तो उस दिन उपवास करना पडता है व रात्रि में कुभोजन मिलता है ।
भोजन का रस 7 जो ग्रह लग्न को देखे और सबसे बली हो, उसका रस भोजन आदि में कहना ।
या चन्द्र जिस ग्रह से इत्थशाल हो, उसका रस ।
श चतुर्थ में जो ग्रह हो, उसके अनुसार ।
लग्न पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो केंद्र स्थित ग्रह से रस का विचार करना चाहिए ।
सुरस-निरस - लग्न में शुभ राशिस्थ ग्रह से सुरस और अशुभराशिस्थ ग्रहों से निरस भोजन होगा ।
ग्रहों का रस - सूर्य = कडुवा । चंद्र = सलोना । मंगल = तीखा । बुध = मिश्रित । गुरु = मीठा । शुक्र = खट्टा । शनि = कषाय अर्थात् कांजी - सिरका आदि कुछ दिनों का बनाया हुआ ।
भोजन प्रकार - भोज्य रूप सूर्य = मूल (जड़) आलू, घुइयाँ सकरकंद आदि । चंद्र = पुष्प, फूलगोभी आदि । मंगल = पत्ता शाक भाजी आदि । गुरु, शुक्र निष्पाप । बुध = अनेक प्रकार के व्यंजन । शनि-राहु-केतु = मांस सहित या तेल की बनी ।

अन्य प्रकार - लग्नगत बलीग्रह से या लग्न में कोई ग्रह न हो तो दृष्टा ग्रह से विचारे । सूर्य = तिल का अन्न । चंद्र = चावल । मंगल = मसूर-चना । बुध = मूंग-राज-माष । गुरु = गेंहूँ । शुक्र = जौ-बाजरा आदि। शनि =कुत्थी-मक्का-उडद आदि । राहु केतु = कोदों, सामा आदि छोटे अन्न भूसी सहित ।

अन्यमत - लग्न में सूर्य मंगल = चावल का भोजन । चंद्र, शुक्र, राहु एकत्र किसी राशि पर बैठ कर सूर्य से युक्त या दृष्ट = दही-दूध-चावल मिला भोजन ।

मतांतर - सूर्य को चंद्र देखे = दही मिला चावल का भोजन । शुक्र देखे = घी मिला चावल । घी से तेल भी ग्रहण करना ।

लग्न को गुरु देखे - काला उडद, पत्ते, दाल, मछली । चंद्र देखे = शाक, कंद । शुक्र देखे = मधू, दूध, इमली । शनि देखे = ठंडा भोजन, ठंडा चावल ।

मतांतर - मकर कुंभ में जो ग्रह हो उससे पूर्वोक्त फल ही कहना है ।

उदयलग्न में विषम राशि या विषम ग्रह = केवल भोजन । समराशि या समग्रह = सागयुक्त भोजन । शनि या राहु = विषम राशि में या विषम ग्रहयुक्त = सागसहित भोजन । ये समराशि में समग्रह युक्त हो = केवल चावल का भोजन ।

अन्य मत - सूर्य = चरपरा खडा खारा अन्न । मंगल - खिचडी और शहद । बुध = भुजे पदार्थ का व्यंजन । गुरु = खीर घी । शनि = तेल और कोदों । राहु केतु = चना ।

गुरु - उडद के बरा और दालयुक्त । चन्द्र = कन्दयुक्त । शुक्र = शहद पुआ दूध से मिला व्यंजन ।

ग्रह अनुसार अन्न - चतुर्थ में जो हो, उसके अनुसार भोज्य अन्न या रस विचारें ।

चतुर्थ में शुक्र - स्निग्ध अन्न । शनि = तेल पका अन्न । नीच ग्रह = रसहीन बिना पका कुत्सित भोजन ।

अन्य विचार - केन्द्र में सूर्य=गेहूँ , गुड , भात आदि । चन्द्र = श्रेष्ठ अन्न दही घी तथा स्वेत अन्न । मंगल = गुड और हविष्य युक्त । गुरु = हल्दी चना तथा दधि आदि ।

शुक्र - कोमल तथा घी युक्त । शनि = खटाई तेल तिल आदि । राहु = दुर्गन्ध युक्त या अपवित्र सरसों तथा उडद । केतु = बहुत पदार्थो वाला भोजन ।

भोजन - पापग्रह बली हो = भोजन चावल और तेल युक्त । शुभ ग्रह बली = घृत सहित भोजन ।

मतान्तर - पापग्रह अति बली = भोजन करने वाला पुरुष या स्त्री दुर्जन ओर परोसने वाला उसका सम्बन्धी नहीं । भोजन स्वादिष्ट भी नहीं होगा । बली शुभ ग्रह = इसके विरुद्ध फल ।

अन्य मत - सबसे बली ग्रह पुरुष राशि में = घृत साग सहित भोजन । स्त्री राशि में हो तो भोजन दिन को किया और साग सहित भोजन ।

किसके घर भोजन - सूर्य आदि जो ग्रह उच्चादि बलयुक्त लग्न में हो, उसकी जाति के अनुसार घर में । सूर्य - राजग्रह । चन्द्र = वैश्य । मंगल = क्षत्रिय । बुध = शूद्र । गुरु = ब्राह्मण । शुक्र = ब्राह्मण । शनि = निम्न ।

किसके घर भोजन - लग्न में सूर्य बली = राजा आदि के घर में । सूर्य चन्द्र बली = राजा के घर । सूर्य = राजा । चन्द्र = रानी । मंगल = सेनापति । बुध = राजपुत्र । गुरु = मंत्री । शुक्र = नेता । शनि = सेवक के घर में ।

अन्य मत - लग्नगत ग्रह मूल त्रिकोण में = पिता के घर व अपने घर में । मित्र राशि का या मित्रगृही = मित्र के घर । शत्रु राशि या शत्रुगृही = शत्रु के घर में ।

लग्न में कोई ग्रह न हो, तो लग्न पर जिसकी पूर्ण दृष्टि हो, उसके अनुसार ग्रह जानें ।

लग्न शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो बली भी हो = तो अपने घर में भोजन ।

इसी प्रकार ग्रह की राशि स्वभाव आदि के अनुसार बुद्धि से विचार करें ।

मूल त्रिकोण में प्राप्त ग्रह जिस घर में बैठा हो, उस घर की स्वामी के यहां भोजन किया अथवा अधिक बलवान ग्रह के घर में भोजन किया ।

लग्न आदि घर बलवान हो, तो क्रम से भाव के अनुसार -

1. निज घर में
2. कुटुम्ब
3. भाई

4. माता-पिता
5. पुत्र
6. शत्रु
7. वधू
8. कर्जवाले से
9. मांगने से
10. राजा
11. मित्र
12. खरीदने से भोजन की प्राप्ति हो ।

समय पर मित्र के साथ अच्छा भोजन किया - चन्द्र की राशि का स्वामी चन्द्र के साथ हो । इसके विरुद्ध हो, तो अन्यथा फल हो ।

स्त्री प्रसूता हुई या नहीं (संतान हुई या नहीं) -

प्रसूती नहीं हुई - कुंभ का शुक्र व सिंह का बुध हो।

मंगल बुध शुक्र या चन्द्र धनु में हो, तो स्त्री प्रसूता हुई न होगी ।

प्रसूता हुई -

वृश्चिक का शुक्र, वृष का बुध ।
मंगल बुध शुक्र और चन्द्र धनु राशि को छोडकर और राशि में द्विस्वभाव राशि में हो, तो स्त्री प्रसूता हो चुकी ।
शुक्र और बुध दोनों वृश्चिक में या वृष में ही हो, तो प्रसूता हुई ।

स्त्री प्रसववती होगी या नहीं -

प्रसूती होगी -पंचमेश व षष्ठेश सूर्य के साथ में उदय हो गया हो या गुरु मंगल शुक्र दशम में हो ।
संतान होगी - यदि पंचमेश लग्नेश व चन्द्र से इत्थशाल करें तथा पंचमेश शुभग्रह हो और शुभयुक्त या दृष्ट हो ।
स्त्री बंध्या - शनि और सूर्य स्वगृही हो लग्न से अष्टम में हो ।
काकबंध्या - चन्द्रमा और बुध अष्टम हो, तो काकबंध्या हो या कन्या ही कन्या हो ।

संतान होगी या नहीं -

संतान होगी - पंचमेश शुभग्रह हो और लग्नेश व चन्द्र इत्थशाल करता हो शुभग्रह से युक्त दृष्ट हो ।
उदय या आरूढ लग्न सूर्य राहु से युक्त हो ।
चन्द्र उदय लग्न या आरूढ में शुभग्रह युक्त हो ।
उदय लग्न या आरूढ या 5-7 घर में गुरु हो ।
उदय लग्न या आरूढ में परिवेष राहु चन्द्र गुरु हो ।
पंचम या नवम घर में गुरु या शुक्र बली हो ।
लग्नेश पंचमेश चन्द्र परस्पर इत्थशाल करें ।
लग्नेश पंचमेश का इत्थशाल हो, तो इस वर्ष निश्चय संतान हो ।
लग्नेश पंचम में पंचमेश लग्न में ।
पंचमेश लग्न में या लग्नेश चन्द्र पंचम में ।

लग्नेश पंचमेश एक ही स्थान में शुभग्रह युक्त या दृष्ट ।
पंचमेश युक्त शुक्र 11-5 घर में ।
पंचमेश अपने स्वामी या शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट ।
पंचमेश लग्न में, लाभेश व चन्द्र पंचम में ।
अल्प संतान - लग्नेश व चन्द्र से पंचम घर में 8-2-5-6 राशि हो या लग्न या चन्द्र से पंचम पापदृष्ट हो ।
विलम्ब से सन्तान - लग्न में पापग्रह, गुरु 4-2 घर केन्द्र में शुभग्रह हो ।
दूसरे विवाह से पुत्र - चन्द्र के तुल्य बुध से भी चन्द्र का वर्ग पंचमभाव में सूर्य शनि से दृष्ट हो ।
संतान नहीं = चंद्र बुध, शुक्र द्विस्वभाव धनु राशि में हो ।
पुत्र सुख की हानि - पंचम में गुरु की राशि ।
संतान न हो - चन्द्र 3, 5, 9 घर में सूर्य या शुक्र से युक्त हो ।
संतान होकर मरें या गर्भस्त्राव - अष्टम में गुरु शुक्र हो, तो संतान होकर मरे ।
मंगल हो, तो गर्भस्त्राव हो ।
संतान हानि फिर न हो - पापग्रह 2-8-12 में हो, तो प्रथम हुई संतान की हानि हो फिर संतान न हो ।
स्त्रीबंध्या - अष्टम में स्वगृही सूर्य शनि ।
काकबंध्या - अष्टम में चन्द्र बुध ।
जप-दान आदि से पुत्रलाभ - पंचम में शनि का वर्ग बुध से दृष्ट हो सूर्य मंगल से अदृष्ट हो एवं पंचम में बुध का वर्ग शनि से दृष्ट हो मंगल बुध से अदृष्ट हो ।
संतान न हो - लग्नेश और पंचमेश परस्पर एक दूसरे को न देखे तथा लग्न और पंचम को भी न देखें ।
संतान विचार - लग्न लग्नेश, द्वितीय द्वितीयेश, पंचम और पंचमेश एवं गुरु की स्थिति पर से विचार करना चाहिये ।
संतान विचार - तिथि ग 4+1+वार+योग÷2 = लब्धि ग 3÷4 = शेष 1= विलम्ब से हो, 2=अभाव । 3 = प्राप्ति । 4 = शीघ्र प्राप्त हो ।
लड़की को कैसी संतान होगी - प्रश्नलग्न में या प्रश्नमुहूर्त में कोई स्त्री या कन्या जैसी संतान के लिए अकस्मात ज्योतिषी के सतीप आ जाये वैसी संतान होगी अर्थात् पुत्र लिए हुए हो तो पुत्र । कन्या लिए हुए हो तो कन्या होगी ।

गर्भ है या नहीं -

गर्भ है - प्रश्न लग्न में लग्नेश और चंद्र पंचम हो ।
या पंचम घर में इनकी दृष्टि हो ।
सप्तमेश लग्नेश पंचम घर में या सप्तमेश पंचमेश लग्न में ।
केंद्र में लग्नेश और चंद्र का इत्थशाल हो ।
केंद्र में लग्नेश और चंद्र दोनों ही पंचमेश से इत्थशाल करते हों ।
लग्न स्थिर हो या लग्न में बुध हो या बुध की दृष्टि हो ।
लग्न लाभ या पंचम में बली शुभग्रह हो अस्त वक्री या नीच के न हों ।
लग्न आरूढ़ या छत्र में राहु हो ।
लग्न व चंद्र से 9-5-7वें घर में गुरु युक्त या दृष्ट हो ।
चंद्र शुभग्रहों से युक्त दुष्ट कहीं भी हो ।
चंद्र सूर्य और शुक्र तीनों एकत्र हों ।
उदय लग्न या आरूढ लग्न से 4-5-9 घर में राहु ।
गर्भ है या नहीं - ध्वज आदि में बताये अनुसार वर्ग का पिंडांक ले लेवें ।
(पिंडांक + 26 क्षेपक) ÷ 3 = शेष 1 गर्भ है, 2 = संदेह है । शेष 0 = गर्भ नहीं है ।यहां पिंडांक में 26 क्षेपक जोड कर 3 का भाग देकर शेष से उपरोक्त फल जानना चाहिए ।
(वर्तमान वार ग 3 वर्तमान तिथि) ÷ 2 = शेष 1 गर्भ है, शेष = 2 गर्भ नहीं है ।
गर्भ नहीं हे - लग्नेश और चंद्र का इत्थशाल आपोक्लीम में हो और पंचमेश लग्न व पंचम को न देखें ।

लगन से तीसरा शुक्र, नवम सूर्य, पंचम चंद्र हो ।
चंद्र का पापग्रह के साथ इत्थशाल हो ।
क्षीण चंद्र के योग से भी विचार करना चाहिए ।

गर्भ नाश तो नहीं होगा -

गर्भ स्थिर रहे - पंचमेश शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और शुभग्रह बलवान् भी हो ।
व्ययेश शुभग्रह युक्त व दृष्ट केंद्र में हो ।
गर्भ (पात) गिरे - पंचम ग्रह का नवांश जितने पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, उतने गर्भ गिरें यदि शुभग्रह की दृष्टि न हो तो ऐसा योग होता है । पापग्रह पंचम में हो और लग्नेश भी अशुभ हो तथा चंद्र मा पापग्रह से इत्थशाल करे ।
गर्भ नष्ट होगा - चर लग्न में पापग्रह चंद्र से इत्थशाल करता हो ।
लग्नेश और चंद्र का नीचादि पाप या वक्री ग्रह से इत्थशाल हो ।
पंचम स्थन में पापग्रह की दृष्टि हो ।
चंद्र का चर लग्नेश तथा वक्री ग्रह से इत्थशाल हो ।
पंचम स्थान में पापग्रह की दृष्टि हो ।
चंद्र का चर पापग्रह की दृष्टि हो ।
चंद्र का चर लग्नश तथा वक्री ग्रह से इत्थशाल हो ।
गर्भ गले - अष्टम मंगल हो ।

जमीन खोदने पर भीतर क्या मिलेगा -

प्रश्न समय मनुष्य की छाया पांव से नापकर उसमें लगन की संख्या और 28 मिलाकर योग में गुणा कार 16 का भाग दे । शेष 1 - कपाल निकले । 2 -हड्डी । 3 - ईंटें । 4 - ठीकरी । 5 - लकडी । 6 - मूर्ति । 7 - राख । 8- कोयला । 9- मृतक शरीर । 10- नाज । 11- धन । 12- पत्थर । 13- मेंढक । 14- सींग । 15- मरा कुत्ता । 16- मनुष्य का बाल । इसमें धन-धन्य अशुभ है । शेष शुभ है ।

शल्य जानने का अन्य प्रकार -

प्रश्नकाल का लग्न जो है, उसमें कौन नक्षत्र आता है देखो वह नक्षत्र उपरोक्त शल्यचक्र में जहां कृतिका लिखा है, वही नक्षत्र लिखकर आगे क्रमानुसार नक्षत्र उपरोक्त विधि से भरकर उसमें ग्रह भी लिख दें । जिस नक्षत्र पर चन्द्र हो, उस स्थान में शल्य होगा । चक्र में भरने का क्रम यहां अंको में देकर बताया है । उस क्रम से नक्षत्र पर क्रमानुसार लिख देना चाहिये । जहां 1 दिया है वहां से लिखना आरंभ करना चाहिये ।

27	28	1	2	3	14	15
26	7	6	5	4	13	16
25	8	9	10	11	12	17
24	23	22	21	20	19	18

शल्य की गहराई -

शंकास्थान की लम्बाई-चौडाई गज (2 हाथ) से नापकर लम्बाई-चौडाई का गुणा करने से वर्ग गज में 28 का भाग दें, लब्धि गज आयेगा, शेष के भी बित्ता आदि निकाल लें, 2 बिता का एक हाथ ।

4 गिरह = 1 बित्ता । इस प्रकार लब्धि गज हाथ बित्ता आदि जो प्राप्त हो, उतने गहराई पर शल्य मिलेगा ।

अन्य प्रकार - शल्पसूचक ग्रहों की किरणें और उस राशि की किरणें जिस पर वह ग्रह हो जोडने से जो प्राप्त हो उतने नीचे शल्य है । उच्च क्षेत्रीग्रह = उतने बित्ता । स्वगृही हो = हाथ । मित्रगृही = पुरुष । शत्रु या नीचक्षेत्री = बहुत गहराई पर मिले ।

कुण्डली जीवित या मृतक की है -

जन्मलग्न + अष्टमलग्न + प्रश्नलग्न =योग ग लग्नेश की राशि = शेष - विषम =जीवित ।

कुण्डली जीवित या मृत की है (अन्य मत)

जन्मलग्न + अष्टम की राशि + प्रश्नलग्न ग जन्म के अष्टमेष की राशि = शेष विषम =जीवित, सम =मृतक की ।

अन्य प्रकार = जन्म लग्न + प्रश्न लग्न + जन्म अष्टमेश की राशि ग अष्टमेश की राशि ÷ प्रश्न समय जिस नक्षत्र में हो वह संख्या = शेष विषम =जीवित , सम = मृत जाने ।

स्त्री या पुरुष की कुण्डली है -

सूर्य की राशि + राहु की राशि + लग्न की राशि अंक के योग में ÷ 4 = शेष सम 0 - 2 = स्त्री । विषम 1-3 = पुरुष ।

लग्न + सूर्य+ राहु के राशि अंक ÷ 30 शेष विषम = स्त्री । सम = पुरुष ।

प्रश्न के वर्ण और मात्रा का योग + वर्तमान तिथि + वार + नक्षत्र ÷ 7 = शेष सम = स्त्री । विषम = पुरुष ।

मेरा जन्म नक्षत्र क्या होगा मुझे मालूम नहीं -

1. आरूढ से उदय लग्न तक संख्या ग 2
2. उदय लग्न के दूसरे घर से मेष तक संख्या
3. और वृष के आरूढ के 12 वें घर तक संख्या

इन तीनों को जोड कर 27 का भाग देने से जन्म नक्षत्र होगा

इत्थशाल आदि योग -

ताजिकोक्त 16 योग फारसी भाषा के हैं, जिसका वर्णन उदाहरण सहित वर्षफल खंड में दे दिये गये । जिनका उपयोग फलित में कई स्थान पर हुआ है । प्रश्नखंड में भी उनका उपयोग हुआ है । आशा है कि पाठक वर्षफल खंड में उसका अध्ययन कर चुके होंगे । प्रश्नखंड में मुथशिल (इत्थशाल) और इशराफ योग का उपयोग हुआ है, उनको यहां भी दे देते हैं, जिनको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये ।

मुथशिल - मुंथशिल = इत्थशाल = इत्तिसाल = प्राप्त करना ये शुभ योग है, यह संयोजक है । इसके 4 भेद हैं ।

मुंथशिल (इत्थशाल) = मिलाप -

इस योग में पहले यह देखना चाहिये कि ग्रह शीघ्र या मंदगामी है और ग्रह के वर्तमान में कितने अंग हैं ।

शीघ्र गति ग्रह - दो ग्रहों में से जिसकी गति अधिक हो, वह शीघ्रगति वाला ग्रह है ।

मंद गति ग्रह - दो ग्रहों में से जिसकी गति अल्प हो (मंद हो) वह मंदगति वाला ग्रह है ।

यहां वर्तमान में गोचर के अनुसार पंचांग में जो ग्रह की गति दी हो, वही गति लेना चाहिये ।

मंदगति वाला ग्रह बहुत अंश का होकर आगे हो और शीघ्रगति वाला ग्रह अल्प अंश के पीछे हो और दोनों ग्रहों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर हो, तो मुथशिल योग होता है । इसमें शीघ्रगति ग्रह अपना तेज (सामर्थ्य) मंदगति ग्रह को दे देता है । धनभाग = बहुत अंश । मंद भाग = अल्प अंश ।

ग्रहों की गति = एक राशि में चलने का समय -

चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि
21	30	30	30	45	360	900
दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन

यहां शीघ्रगति ग्रह चंद्र - सूर्य - बुध - मंगल है, मंदगति ग्रह गुरु - शनि । इनमें भी शनि से गुरु शीघ्रगामी है , गुरु से मंगल शीघ्रगामी है , इन सबसे चन्द्र शीघ्रगामी है । एक राशि को पार करने के लिये जिसे अधिक समय लगता है, वह मंद गति वाला ग्रह मंदग्रह या मंदीग्रह है । जिसे थोडा समय लगता है, वह शीघ्र गति वाला ग्रह है या शीघ्रगामी ग्रह है ।

इस प्रकार परस्पर दृष्टि करने वाले दो ग्रह हो । इनमें एक की गति मंद और दूसरे की गति शीघ्र हो । यह पंचांग से देख लेना चाहिये । इन दोनों ग्रहों में से उनके अंशों पर विचार कना । यदि शीघ्रगामी ग्रह के अल्प अंश है और मंदी ग्रह के अधिक अंश है और शीघ्रगामी ग्रह से मंदी ग्रह आगे हो, और दोनों की दृष्टि दीप्तांश के भीतर हो, तो मुथशिल योग हो जाता है । इसमें शीघ्रगामी ग्रह मंद ग्रह को अपना तेज दे देता है ।

ग्रहों के दीप्तांश -

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दीप्तांश	15	12	8	7	9	7	9

यहां शीघ्रगामी ग्रह के आगे या पीछे विचारकर शीघ्र गति ग्रह के अंश के भीतर दीप्तांश लेना अर्थात् जो ऊपर बताये दीप्तांश के अंश दिये गये हैं, उनसे दोनों ग्रहों के अंशों का अंतर विचारना । दोनों ग्रहों के अंशों का अंतर इनसे अधिक नहीं होना चाहिये ।

रोग आराम न हो - आरूढ अष्टम घर हो, चंद्र उससे अष्टम हो या अष्टम घर या चंद्रराशि या अंग स्पर्श से जो राशि ज्ञात हो, उस सपर केवल पापग्रह हो, तो आराम न हो ।
मरण - आरूढ मरण स्थान वहां से अष्टम चंद्र पापदृष्ट हो ।
मरण - अष्टम और आरूढ लग्न पापयुक्त हो या दृष्ट हो ।
परदेश में मरण - निर्बल सौम्यग्रह 6 - 8 - 12 में अशुभग्रहों से दृष्ट हो, सूर्य और चंद्र पापग्रह युक्त हो, तो दूर देश गया हुआ मर जाता है ।
रोग से पीडित - शनि नवम में जो पापग्रह युक्त हो शुभ दृष्टि नहीं हो ।
मरण - शनिपापग्रह युक्त शुभग्रह सहित अष्टम में हो ।
जीवन-मरण विचार - पूर्व बताये ध्वज आदि के वर्ग के अक्षरों का पिंड लेना । (अक्षर पिण्ड + 40 क्षेपक) ÷3 = शेष 1 जीवित है । 2 = कष्ट साध्य बहुत प्रयत्न करने से बचे । शेष = 0 मरण होगा या मर गया ।
अन्यमत 0 (प्रश्न अक्षरों के वर्णांक ध्रुवांक ग 2 + मात्राएं 24) ÷ 3 = शेष 1 जीये । 2= अतिकष्ट । 0 = मरे ।
मृत्यु अवधि - प्रश्न आलिंगति = 1 दिन । अभिधूमित = 1 मास । दग्ध = 1 वर्ष ।
आरूढ या मृत्यु घर को जो ग्रह देखते हैं, उनको जो अवधि वर्ष मास दिन घटी की है, उस अवधि में मृत्यु हो । प्रश्नकाल में चंद्रमा उदय लग्न में हो और पापग्रहों से युक्त हो या उदय लग्न से छठे घर में चंद्र हो और सातवें घर में पापग्रह हो, तो जो ग्रह चंद्र को देखते हैं, उन दुष्ट ग्रह की जो अवधि है, उसमें मृत्यु हो ।

10 दिन में मृत्यु - लग्न से सातवें घर में पापग्रह हो और तीसरे घर में सूर्य हो । तीसरे घर में सूर्य, दशम पापग्रह । सप्तम में पापग्रह ।
14 दिन मे मृत्यु - लग्न से दूसरे स्थान में पापग्रह हो ।
8 दिन में मृत्यु - सूर्य मंगल शनि राहु आरूढ से अष्टम घर में हो ।
7 दिन में मृत्यु - शुक्र और गुरु तीसरे स्थान में हो ।
मतांतर = दशम घर से तीसरे घर में शुक्र - गुरु हो ।
लग्न में चौथे आठवें पापग्रह हो ।
3 दिन में मृत्यु - सूर्य मंगल शनि या राहु 2, 7 या 10 घर में हो ।
दशम में पापग्रह हो ।
उसी दिन मृत्यु - दशम में सूर्य या राहु और सप्तम में मंगल या शनि हो ।
मृत्यु कहां होगी - अष्टम घर में स्थिर राशि = स्वदेश । चर = परदेश । द्विस्वभाव = निकट के देश में मृत्यु हो ।
बाधा - प्रश्नसमय पृथ्वीतत्व - अपने प्रारब्ध का रोग है । जलतत्व हो = मातृकाओं का । अग्नितत्व = शाकिनी या पित्त दोष से रोग की पीडा है ।
रोगी जीये - पृच्छक दाहिने शूल्य अंग की ओर आया हो पश्चात् पूर्ण अंग की ओर (चालू स्वर) आकर बैठ जाय तो रोगी निश्चय जी जायेगा । यदि जिस अंग में स्वर स्थित है,उसी अंग की ओर बैठा हुआ प्रश्न पूछे, तो वह रोगी अवश्य जियेगा ।
यदि स्वर दक्षिण नाडी को बहता हो प्रच्छक के मुख से अचानक वचन निकले तो वह जियेगा ।
मरे - जीव (स्वांश) चन्द्रमा में स्थित हो और प्रश्नकर्ता सूर्य की ओर स्थिर हो, तो कितनी ही दवा हो, वह मरेगा अवश्य ।
यदि जीव पिंगला में स्थित हो और प्रच्छक वाम ओर बैठकर पूछे तो उपरोक्त फल हो ।
शगुन - प्रश्न समय - कोई शस्त्रधारी दिखाई पडे, सन्यासी, विधवा, लंगडा या दुःखित या बहेलिया या शत्रु या काष्टभार लिये या हाथ में डण्डा लिये कोई रस्सी या सूत बांटता दिखे या नेत्र मसलता या टांगों को पकडे हुए या लेटे हुये प्रश्न करे या तेल लगा रहा हो, बाल बनवाता हो इत्यादि अपशगुन दिखे तो रोगी की मृत्यु संभव है ।
रोग कब अच्छा होा - सबसे बलवान् ग्रह की जो अवधि है, उस अवधि में रोग जायेगा ।
6-8 स्थान में शुभग्रह जितने दिन हो उतने दिनों में रोग दूर होगा ।
चंद्ररोग स्थान को देखें और चंद्र को जो ग्रह देखे उसके जितने वर्ष मास दिन आदि है, उतने दिन में रोग दूर होगा ।
अब नक्षत्रों से रोग की उत्पत्ति हो और कितने तक कष्ट भोगना पडेगा यह चक्र दिया जाता है ।

इन नक्षत्रों के इतने चरणें में कोई बीमार हो, तो नीचे के चक्र के दिनों तक कष्ट होगा । अधिक कष्ट के दिन अन्यमत से अंकों में भी बताया है और उसके आगे बताये दान से कष्ट शांत होगा ।

क्रम	नक्षत्र	1 चरण दिन	2 चरण दिन	3 चरण दिन	4 चरण दिन	1 चरण	2 चरण अन्य	3 चरण मत	4 चरण	कष्ट दिन
1.	आश्विन	9	13	13	3	9	11	10	20	9
2.	भरणी	11	13	27	27	0	80	40	11	11
3.	कृतिका	9	8	25	14	9	11	16	28	9
4.	रोहि0	7	20	4	34	7	9	18	30	7
5.	मृग	3	18	22	28	9	5	17	10	10
6.	आर्द्रा	1	27	28	17	0	18	0	0	मृत
7.	पुनर्व	7	5	18	28	7	14	2	21	7
8.	पुष्य	7	17	24	19	7	7	20	21	7

9.	श्ले0	6	0	0	0	0	7	41	0	मृत
10.	मघा	20	16	18	28	15	7	17	20	20
11.	पूफा	1	18	24	16	0	15	0	30	मृत
12.	उफा	7	15	29	28	7	14	6	60	7
13.	हस्त	15	23	14	26	15	17	15	0	15
14.	चित्रा	11	18	16	15	11	9	9	16	11
15.	स्वाती	1	12	15	24	60	17	30	0	मृत
16.	विशा0	14	6	28	19	15	0	4	13	15
17.	अनु0	1	26	14	26	60	12	36	60	स्थिर
18.	ज्ये0	6	15	28	17	69	9	6	4	मृत
19.	मूल	9	30	19	11	0	9	15	6	9
20.	पूषा	1	26	17	18	0	15	24	10	मृत
21.	उषा	3	15	26	17	30	24	26	16	30
22.	श्रवण	11	26	14	29	60	24	6	9	11
23.	धनि0	15	18	26	25	15	4	20	21	15
24.	शत0	12	16	18	16	0	45	3	22	11
25.	पूभा	1	14	1	19	0	12	21	19	मृत
26.	उभा	7	13	26	18	10	1	९	15	7
27.	रेवती	1	28	20	40	18	10	19	20	स्थिर

ग्रह शांति के निमित्त दान-

1 अश्वि = ब्राह्मण भोजन । 2 भर0 = अन्नदान गोदान । 3कृतिका = सुवर्ण दान । 4 रो0 = घृतदान । 5 मृग = तिलदान । 6 आर्द्रा = गौदान । 7 पुन0 = पीतल दान । 8 पु0 = चावल अन्न तिल । 9 श्ले0 = गौ भैंस दान, मृत्युंजय जप । 10 मघा = वस्त्र भोजन । 11 पूफा = ब्राह्मण भोजन । 12 उफा0 = अन्न । 13 ह0 =तिल । 14 चित्रा =दुग्धदान । 15 स्वाती = घी गौ । 16 विशा =सोना, गौ । 17 अनु0 =घी गौदान । 18 ज्ये0 = तिल, उपानह । 19 मूल =गौ चांदी । 20 पूषा =गौदान मोती । 21 उषा =ब्राह्मण भोजन । 22 श्रव0 = नारियल । 23 घनि0 =अन्न घोडा । 24 शत0 = भोजन अन्न । 25 पूभा =अन्न भोजन । 26 उभा0 =अन्न । 27 रे0 = वृषभ ।

ग्रह शान्त्यर्थ प्रत्येक ग्रह के निम्नोक्त यन्त्र है । जिस ग्रह का जो यन्त्र है वह उस ग्रह के वार को धारण करें । उस वार में यदि विंशोत्तरी दशा में जिन नक्षत्रों से संबंध है, उनमें से कोई नक्षत्र उस ग्रह के वार में पड जाय तो वह अत्युत्तम मुहूर्त होता है । यन्त्र धरण के पूर्व उस ग्रह की वस्तुओं का यथाशक्ति दान कर इष्टदेव का स्मरण कर यन्त्र धारण करे । अधिक जानकारी के लिए किसी दैवज्ञ से परामर्श लें ।

सूर्य का यन्त्र

6	1	8
7	5	3
2	9	4

चन्द्र का यन्त्र

7	2	9
8	6	4
3	10	5

भौम का यन्त्र

8	3	10
9	7	5
4	11	6

गुरु का यन्त्र

10	5	12
11	9	7
6	13	8

शुक्र का यन्त्र

11	6	13
12	10	8
7	14	9

बुध का यन्त्र

9	4	11
10	8	6
5	12	7

शनि का यन्त्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

राहु का यन्त्र

13	8	15
14	12	10
9	16	11

केतु का यन्त्र

14	9	16
15	13	11
10	17	12

ग्रहों की शन्ति और दान के अतिरिक्त मुख्य तथ्य स्मरण रखने योग्य है कि गायत्री महामंत्र की साधना, ध्यान, जप ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है जिसका प्रमुख कारण है गायत्री मन्त्र के देवता - सविता । 'सविता' सौर मंडल के अधिष्ठाता है, उनकी प्रसन्नता से अन्यान्य ग्रहों का अनुकूल होना या प्रतिकूलता कम होना स्वाभाविक है । गायत्री मन्त्र की साधना से सविता देवता - सूर्य देवता की अनुकूलता - प्रसन्नता सहज संभव है । यथा -

महामंत्र जितने जगमाहीं । कोऊ गायत्री सम नाहीं ।।

गायत्री महामंत्र का शब्दिक अर्थ है - उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतरात्मा में धारण करते हैं, वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे । देवज्ञ (भविष्यफल करने वाला) बनने का भी यही मूलमंत्र है । नित्य प्रति 11 माला का जप करने मात्र से देवत्व की अभिवृद्धि सहज संभव है ।

*

*•••

क्रम	गुणधर्म	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
1.	चर आदि	चर	स्थिर	द्विस्वभाव	चर	स्थिर	द्वि0	चर	स्थिर	द्वि0	चर	स्थिर	द्वि0
2.	विषम-सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम	विषम	सम
3.	पुरुष-स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
4.	क्रूर-सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य
5.	वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण
6.	तत्व	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल	अग्नि	भूमि	वायु	जल
7.	दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
8.	स्वामी	मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु
9.	रंग	लाल	सफेद	हरा	गुलाबी	गुलाबी	चित्र-वि0	काला	कबरैला	पीला	कबरैला	कबरैला	मछली का रंग
	अन्य मत	''	''	शुकवत	पाटल	थोडा सफेद धूम्र	अनेक रंग	कृष्ण	सुवर्ण	''	चित्त कबरा	न्योले का रंग	
	(सर्व चि°)	''	''	श्याम हरित	रक्त	धूम्र	''	''	''	सुनहरा	फीका पीला	बिल्ली सा श्वेत	
10.	उदय	पृष्ठोदय	पृ°	शीर्षो°	पृ°	शीर्षो°	शी°	शी°	शी°	पृ°	पृ°	शी°	उभयोदय
	अन्यमत	''	''	उभयोदय	''	''	''	''	''	''	''	''	''

	(फलदी)												
	(सर्व चि°)	‘‘	‘‘	पृष्ठी°	‘‘	‘‘	‘‘	‘‘	‘‘	‘‘	‘‘	‘‘	‘‘
11.	हृस्व	सम	सम	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	हृस्व	हृस्व	हृस्व	हृस्व
	(जा°भरण)	हृस्व	हृस्व	सम	सम	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	सम	सम	हृस्व	हृस्व
12.	शुष्कादि	शुष्क	शुष्क	शुष्क	जल	शुष्क	जल	जल	शुष्क	शुष्क	जल	जल	जल
	(मध्यपरा°)	निर्जल	सजल	निर्जल	जल	निर्जल	‘‘	‘‘	निर्जल	निर्जल	‘‘	‘‘	‘‘
13.	रूक्ष	स्निग्ध	रूक्ष	रूक्ष	स्निग्ध	स्निग्ध	रूक्ष	रू°	स्नि°	स्नि°	रू °	रू °	स्नि°
14.	पूर्ण आदि	पावजल	अर्द्धजल	निर्जल	पूर्णजल	निर्जल	निर्जल	पावजल	पावजल	अर्द्धजल	पूर्णजल	अर्द्धजल	पूर्णजल
15.	गुण	रज	रज		सत	सत		रज	तम	सत	तम	तम	सत
16.	बली	रात्रिब	रात्रि°	रात्रि°	रात्रि°	दिन°	दिनबली	दिन°	दिन°	रात्रि	रात्रि°	दि°	दिन रात्रि की संधि में

Created By:-
Tara shanker sharma
Aviral sharma
Deepak Sharma
Rahul Sharma